किसानों को नई गालियां आंदोलनजीवी और परजीवी

अंधविश्वास का वीभत्स रूप

दूसरी शादी डर क्यों

सरिता

फरवरी (द्वितीय) 2021, ₹ 50

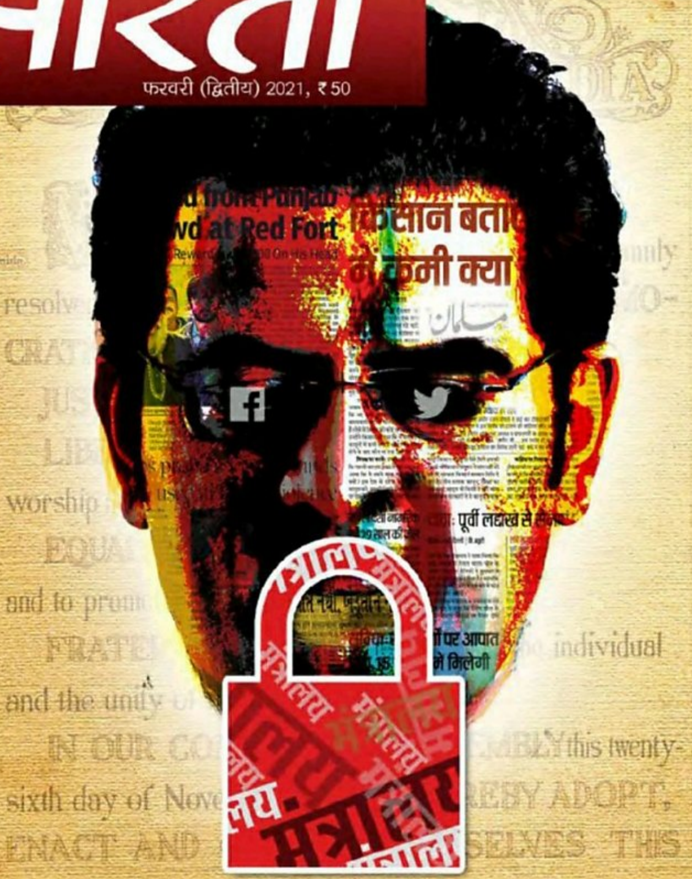
wd at Red Fort
किसान बताएं
की कमी क्या
पूर्वी लद्दाख से
पर आपात
में मिलेगी
मंत्रालय
resolv
worship
and to prom
and the unity
individual
this twenty-
sixth day of Nov
REBY ADOPT,
ENACT AND
SELVES THIS
CONSTITUTIO

जो बोलेगा राजद्रोह झेलेगा

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

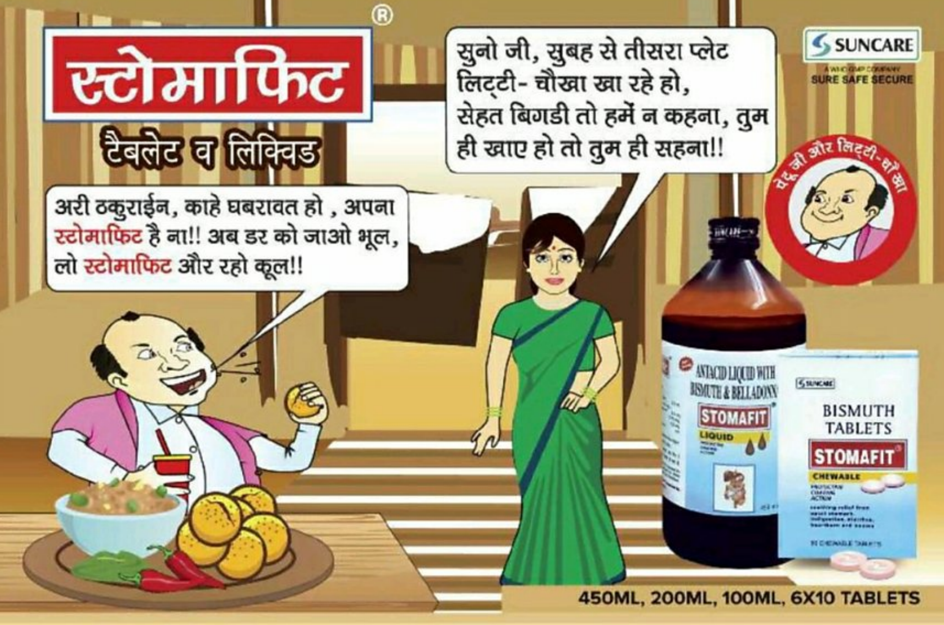
अरी ठकुराईन, काहे घबरावत हो , अपना **स्टोमाफिट** है ना!! अब डर को जाओ भूल, लो **स्टोमाफिट** और रहो कूल!!
सुनो जी, सुबह से तीसरा प्लेट लिट्टी- चौखा खा रहे हो, सेहत बिगडी तो हमें न कहना, तुम ही खाए हो तो तुम ही सहना!!
पेटू जी और लिट्टी-चौखा
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
BISMUTH TABLETS
STOMAFIT
CHEWABLE

450ML, 200ML, 100ML, 6X10 TABLETS

निम्नलिखित कारणों से हुई कमजोरी को दूर करने में सहायक

- गर्भधारण
- हुकवार्म
- पेट में कीड़े
- मासिक धर्म
- साधारण कमजोरी
- बीमारी या संक्रमण
- बवासीर से एनीमिया
- बच्चों में कमजोरी व थकावट

हेमोकॉल

बेहतरीन स्वाद

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

शहद सा गाढा संतरे सा स्वादिष्ट
SUNCARE
हेमोकॉल
आयरन टॉनीक फोलिक ऐसीड के साथ
300 ml
HAEMOCAL

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 8447977999

Now Available on 1mg

सरिता

संपादक
प्रकाशक
परेश नाथ

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

फरवरी (द्वितीय) 2021 अंक 1580

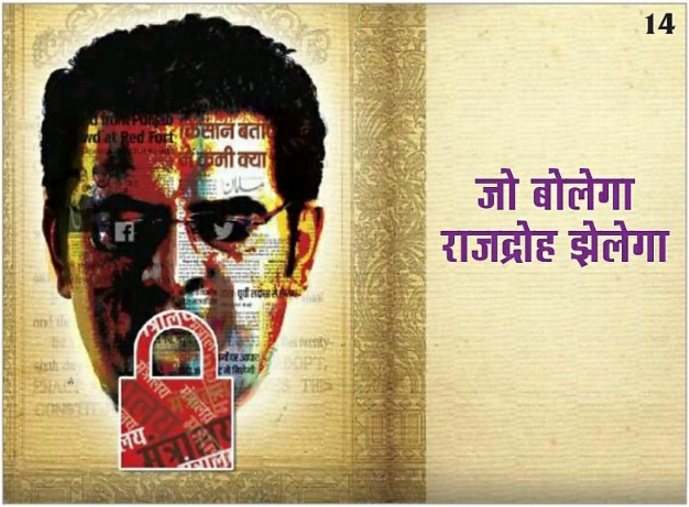

14 **जो बोलेगा राजद्रोह झेलेगा**

लेख

30

30 **किसानों को नई गालियां**
आंदोलनजीवी और परजीवी

38 **दूसरी शादी**
डर क्यों

50 **बदतर होती फिल्म इंडस्ट्री**
सरकारी नीतियों के कारण

60 **लव जिहाद कानून**
आर्य समाज की शुद्धि गैरकानूनी

68 **निवेश के अवसर**
मध्यवर्ग के लिए

कौंबो औफर
सरिता और मुक्ता
80 रुपए के स्थान पर 70 रुपए

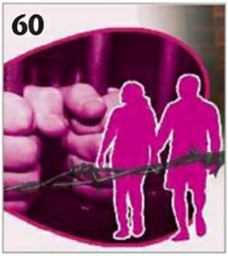

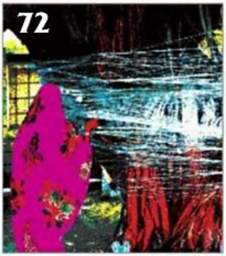

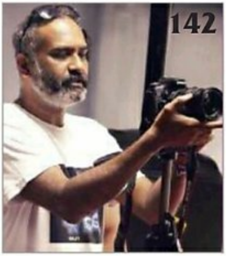

72 **अंधविश्वास का**
वीभत्स रूप

78 **वृद्ध अपनी संपत्ति**
बेटों से बचाएं

कहानी

84 **परफैक्ट पार्टनर**
अक्षत के प्रति अनु की क्यों बदली राय

94 **बंटवारा**
दो हिस्सों में बंटी औरत

106 **पहचान**
ऐसा क्या उपहार दिया वसुंधरा ने

114 **परख**
क्या दिव्या की सास का दृष्टिकोण सही था

126 **जेठ जीजाजी** (भाग-2)
प्रशोभा की सूझबूझ क्या रंग लाई

और भी कहानियां पढ़ने के लिए
sarita.in पर login करें.

बातचीत

142 **बिजौय बनर्जी**
अली : द ब्लाइंड बौक्सर के निर्माता

व्यंग्य

134 **एयरपोर्ट के भीतर**
आप भी जरा संभल जाइए

स्तंभ

8 **आप के पत्र**
10 **सरित प्रवाह**
28 **श्रीमतीजी**
48 **भारत भूमि युगे युगे**
67 **बच्चों के मुख से**
71 **दिन दहाड़े**
109 **इन्हें आजमाइए**
125 **हमारी बेड़ियां**
133 **मेरे पापा**
136 **पाठकों की समस्याएं**
138 **चंचल छाया**
141 **ननमुन**

"India's best English-language magazine"
—*The Guardian, UK*

"For those with an interest in India, it has become an absolute must-read"
—*The New Republic, USA*

As India's only magazine devoted to long-form narrative journalism, *The Caravan* has quickly become renowned for its high standard of detailed reporting, elegant writing, and incisive commentary. As a literary and political journal, it has gained global recognition beyond its growing readership and is now at the forefront of Indian political debates. *The Caravan* is now considered the most respected and intellectually agile magazine in the country.

INDIA'S ONLY NARRATIVE JOURNALISM MAGAZINE

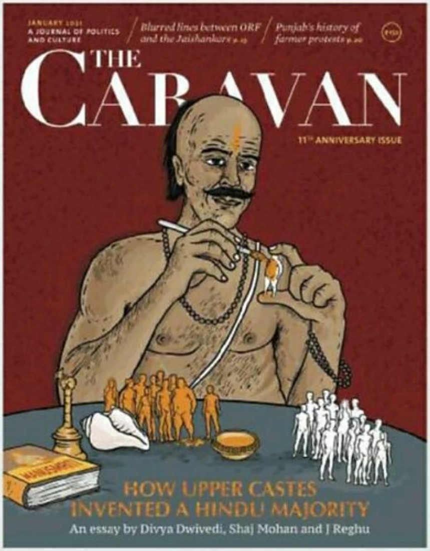
JANUARY 2021
A JOURNAL OF POLITICS AND CULTURE
Blurred lines between ORF and the Jaishankars
Punjab's history of farmer protests
THE CARAVAN
11TH ANNIVERSARY ISSUE
HOW UPPER CASTES INVENTED A HINDU MAJORITY
An essay by Divya Dwivedi, Shaj Mohan and J Reghu

The Caravan now available for only Rs 1125 (12 issues)

Assured Delivery by Registered Post.

THE CARAVAN
Journal of politics, culture & business.
www.caravanmagazine.in

To subscribe call toll free at: 1 800 103 8880, Landline 011-41398888, Ext. 119/221/264 (Monday to Saturday 10.00 am to 6.00 pm)
For subscribing online, kindly visit www.delhipress.in/subscribe or e-mail at subscription@delhipress.in
For advertising kindly call Mr. Shantanu Choudhury at +919810604922 or mail shantanu.choudhury@delhipress.in

83

कविताएं

83 नजदीक चले आते
89 हुस्न बचा कर रखना
103 तड़प अभी बाकी है

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय

दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
फोन : 011-41398888, 32468201, 32495622, 23529557, फैक्स : 011-41540714, 23625020.
अन्य कार्यालय : 31, ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845.** 11, फर्स्ट क्रास, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बेंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076.** गीतांजली टावर, शौप नं. 114 (व्यास अस्पताल के सामने), अजमेर रोड, **जयपुर-302006. फोन : 09529020226.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जीडी अंबेडकर मार्ग, वडाला, **फोन : 022-24122661.** 16-ए, अमृता बनर्जी लेन, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026. फोन : 033-40675040.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लैक्स, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448, 28412161.** 122, चिनौय ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596.** बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 0522-2618856.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, ऐग्जिबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 0612-2323840.** जी-7, पायनियर टावर्स, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फिट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.**

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें : फोन : 011-41398888, फैक्स : 011-41540714. एक्सटैंशन नंबर : 119, 221, 264 (सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक) मोबाइल/एसएमएस/व्हाटसऐप नंबर : 08588843408 ईमेल : subscription@delhipress.in

© दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा **ई-8**, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित. संपादक : परेश नाथ.

मूल्य : एक प्रति ₹ 50. वार्षिक : ₹ 999, दो वर्ष : ₹ 1,860 (रजिस्टर्ड डाक से)

वार्षिक मूल्य : केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से **ई-8**, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. हमारी कोई डिपोजिट योजना नहीं है.
अंतर्राष्ट्रीय सब्सक्रिप्शन मूल्य (हवाई डाक से) : वार्षिक 100 अमेरिकी डौलर.

संपर्क करें :

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल : article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल : invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ईमेल : editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ईमेल : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE

वर्ष : 76, अंक : 04

© Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. INDIA

ISSN 0971-1538

No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.
THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

दिल्ली
प्रैस

गृहशोभा
सचेत, सक्षम, सफल, स्मार्ट

फैशन, ब्यूटी के
पलपल बदलते
ट्रैंड से अपडेट
कर दिखाए
आप को हरपल
खूबसूरत

पाक्षिक
पत्रिका

सब्सक्रिप्शन के लिए टोलफ्री नंबर 1800 103 8880 पर संपर्क करें
या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

आप के पत्र

सरित प्रवाह, फरवरी (प्रथम) 2021

'कठपुतली बनता मीडिया' शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय में आप के विचार बहुत सही लगे. जैसे, 'झूठ के दरिया का हवा के प्रदूषण से भी ज्यादा जहरीला होना', 'सुधार की संभावना ही न रहना' इत्यादि. देश और देशवासियों के लिए यह एक बड़ी चेतावनी है. सच में मीडिया के नाम पर सब से अधिक नुकसान टीवी माध्यम ने किया है.

जिस टीवी चैनल को देखते हैं, परेशानी होती है, या फिर क्रोध आता है. टीवी बंद करने की तबीयत होती है, लेकिन फिर करो तो क्या करो, समाचार और मनोरंजन का साधन भी तो है यह. कितना अच्छा होता यदि किसान अपना आंदोलन कृषि कानून की जगह मीडिया के इस झूठ को बनाते.

जब न्यूज चैनल देखता हूं तो काम की न्यूज कम, ब्रेक और विज्ञापन ज्यादा दिखाई देते हैं, या फिर नेताओं के हर ट्वीट पर कभी न खत्म होने वाली बहस बिना नतीजे के सुनाई देती है. मुझे नहीं मालूम कि वाक्य जैसे– 'भारत से चीन डर गया', 'दुनिया ने भारत का लोहा माना', 'आरोपियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई होगी' इत्यादि से किसी का भी भला होने वाला है. जब मनोरंजन का चैनल देखते हैं तो वे सीरियल सिवा लड़केलड़कियों के प्रेम प्रसंगों को दिखाने के अलावा दूसरी थीम नहीं रखते. गौरतलब है कि कई प्रदेशों में 'लव जिहाद' को ले कर दंड देने के लिए कानून बनाए जा रहे हैं और हमारा मीडिया बच्चों को उसी के लिए उकसा रहा है.

सरकार का ध्यान इस तरफ पड़ना चाहिए और जल्द ही जो खामियां मीडिया, खासतौर पर टीवी, नैटफ्लिक्स आदि में हैं उन्हें दूर करना चाहिए. झूठ किसी भी जगह परोसा जाए, उस के खिलाफ आवाज उठनी ही चाहिए. सच बोलना हमारी परंपरा है और हमारी ताकत भी. गरीब या अमीर किसी भी परिवार में बच्चे को सब से पहले मातापिता सच बोलना ही सिखाते हैं.

*

उकसाए जा रहे हैं किसान

जनवरी (प्रथम) अंक में किसान आंदोलन पर लेख पढ़ा. यह मुझे काफी हद तक एकतरफा लगा. हो सकता है लेखक का कहना ठीक हो, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भोलेभाले किसानों को उकसाने वालों की भी कमी नहीं है. चाहे वह कांग्रेस या दूसरी राजनीतिक पार्टियां या नेता हों, या फिर वे लोग हों जिन के हाथों में मंडियां हैं.

ऐसे लोग यह कभी नहीं चाहेंगे कि उन की अपनी कमाई या फिर कुछ राज्यों, जैसे पंजाब आदि की आमदनी में कोई कमी आए. बहुत जबरदस्त दबाव है किसानों पर क्योंकि उन को उकसाने वालों को मोदी को नीचा दिखाने का इस से बढ़िया अवसर और कोई नहीं दिखाई देता. लेखक से अनुरोध है कि वे इस बात का भी पता लगाएं कि कहीं कुछ नेता–

बनाम–किसान एग्रीकल्चर इनकम के नाम पर गलत आय तो नहीं दिखा रहे हैं.

जब किसानों ने कोई नतीजा न निकलने पर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है, तो यह विश्वास तो हम सब को था कि वे सुप्रीम कोर्ट के फैसले को मान्यता देंगे, लेकिन ऐसा हुआ नहीं. सरकार के कानूनों पर रोक और एक कमेटी का गठन, समय के हिसाब से बहुत मुनासिब फैसला है, पर किसानों का उसे न मानना और 26 जनवरी को ट्रैक्टर रैली निकालना किसी को सही नहीं लगा. न हमें शाहीनबाग रैली ठीक लगी और न ही किसान रैली.

जरा सोचिए, यदि किसानों की तरह भारतीय सेना भी आज अपनी मांग ले कर और कल पुलिस अपनी मांगें ले कर सड़क पर उतर जाएं, तो देश में कुछ नहीं बचेगा. कुछ न कुछ परेशानी तो सभी को है. मेरे जैसे सीनियर सिटिजन को ही ले लीजिए. हमारी इनकम (फिक्स डिपौजिट से) 12 फीसदी से गिर कर 5.5 फीसदी रह गई है, फिर किसानों को तो अच्छीखासी सब्सिडी भी मिलती है.

ओ डी सिंह

*

कुछ बात से सहमत कुछ से नहीं

जनवरी (प्रथम) अंक के लेख 'शोधपूर्ण किताबों के लिए...' पढ़ कर ऐसा लगा जैसे किसी एकरसता में अचानक ही बहुत मधुर सी विविधता प्राप्त हो गई. कृपया साहित्य से संबंधित ऐसे लेखों को बारबार हर अंक में छापें. बहुत जानकारियां भी प्राप्त हुईं.

लेख 'नया साल नया फोन' में लेखक ने जो चीनी फोन 'शाओमी' की अनुशंसा की है वह चीन के वर्तमान शत्रुतापूर्ण रवैए को देखते हुए कतई जायज नहीं लगती.

सरिता के प्रत्येक अंक में चीन के मोबाइल्स का प्रचार और मार्केटिंग की जा रही है, उस का अभिप्राय मैं नहीं समझ पा रहा.

नवंबर (द्वितीय) अंक में प्रकाशित लेख 'अबला कहो या सबला, समाज नहीं बदला' बहुत ही सामयिक व वस्तुपरक लगा. लेखिका ने निष्पक्षता से, बगैर सलैक्टिव हुए, सभी धर्मों में व्याप्त पितृसत्तात्मकता का सटीक बखान किया है.

जामिया की लड़कियों और शाहीनबाग की दादियों के बारे में उन का यह उदाहरण बहुत सटीक है जिसे 'चोखेर बाली' ब्लौग की लेखिका महजबीं ने लिखा है, "जब सब को एकजुट हो कर विरोध करने की जरूरत पड़ी तो महिलाओं का विरोध करना, सामने आ कर बोलना सब को अच्छा लगने लगा, उन मौलानाओं को भी जो लड़कियों के स्कूल, कालेज, यूनिवर्सिटी जाने को बेपरदगी व बेहयाई समझते हैं.

"लेकिन सवाल यह है कि विरोध समाप्त होने पर क्या ये महिलाएं ऐसे ही अपने मुद्दों पर बोलती हुई अपने समाज को स्वीकार होंगी या वही चारदीवारी में अच्छी लगेंगी कम बोलती हुई ?"

सुनील कुमार चौबे ●

आप भी भेजें

सरिता में प्रकाशित रचनाओं तथा अन्य सामयिक विषयों पर अपने विचार भेजिए. कृपया पत्रों पर अपना पता अवश्य लिखें. पत्र इस पते पर भेजिए : **आप के पत्र, सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.**

नीचे लिखे नंबर पर ***एसएमएस*** या ***व्हाट्सऐप के जरिए मैसेज/ऑडियो भी कर सकते हैं.***

08527666772

सरित प्रवाह

संपादकीय

जन आवाज और सरकार

सरकार से किसान आंदोलन संभल नहीं पा रहा है. इसलिए वह अब देश की आवाज बंद करने पर उतारू हो आई है ताकि उस आंदोलन की खबरें लोगों व दुनिया को न मिले सकें. चीनी तौरतरीकों पर न केवल दिल्ली के चारों ओर बैठे किसानों को दुश्मनों की तरह माना जाने लगा है बल्कि उन का समर्थन करने वालों व उन के पक्ष में कुछ कहने वालों को देश का दुश्मन, समाजद्रोही, सरकार को गिराने वाला कहा जाने लगा है.

किसान देश की रीढ़ की हड्डी हैं और कभी भी कोई राजा उन्हें नाराज कर के बचा नहीं है. सदियों से राजाओं की आय का स्रोत किसान ही रहे हैं. जिसे हम सोने की चिड़िया कहते हैं वह असल में किसान की पाली होती थीं. किसान से वसूले गए लगान के बल पर सेनाएं खड़ी की गईं, किसान परिवारों के बच्चों को हथियार दे कर सेना में रखा गया था. यह बात दूसरी है कि पौराणिककाल से ही किसानों को शूद्र समझा गया है और उन्हें बिना पेट भरे काम करने वाला जानवर माना गया है.

इस सरकार को वोट भगवा झंडे उठाने वाले किसानों के बेटों से ही मिले थे. मारपीट करने वाले गैंग किसानों के घरों से ही आए थे. अब जब किसान अपनी बात मनवाने के लिए पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश ही नहीं, पूरे देश में उठ खड़े हुए हैं तो पौराणिक सरकार तिलमिला उठी है और वह न केवल उन्हें जेलों में भर रही है, उन के धरनेस्थलों को जेलों जैसा बना रही है और उन के पक्ष की बात करने वालों को जेल में डालने की धमकी दे रही है.

अमेरिकी सोशल मीडिया कंपनी ट्विटर तक को धमकी दी जा रही है कि अगर किसान समर्थकों की बातें कहने वालों के अकाउंट बंद नहीं किए तो उन्हें जेल में डाल दिया जाएगा. यह कोरी तानाशाही है और इस तानाशाही का असर किसानों के प्रति सरकारी रुख पर ही नहीं दिख रहा है, हर सरकारी फैसले में भी दिख रहा है.

सरकार न किसी तरह का विरोध सह रही है, न लोकतांत्रिक संस्थानों की सुन रही है. वह स्कूलकालेजों, ज्यूडीशियरी, नौकरशाही के किसी सदस्य द्वारा उस से किसी तरह की असहमति जताने वाले को बख्श नहीं रही है. सरकार के कदम की आलोचना करने वाले पत्रकारों को जेल में डाला जा रहा है. नए कृषि कानूनों व किसानों के मुद्दे को ले कर इंसाफ की बात करने वालों को डरायाधमकाया जा रहा है.

मौजूदा सरकार को समाजसुधार से कोई सरोकार नहीं है. उस का ध्येय केवल सत्ता पर पकड़ मजबूत रखना व अपने चाटुकारों और पूजाकारों को पनपने

देने का रह गया है. यह एक भयंकर स्थिति पैदा कर रहा है क्योंकि इस का मतलब यह है कि देश में नए विचारों को कुचल दिया जाएगा. सरकार जन की आवाज पर पहरे लगा रही है.

देश को आगे बढ़ने के लिए सैकड़ों सामाजिक सुधारों की आवश्यकताएं हैं, जबकि सरकार ने उन की ओर आंखें ही नहीं मूंद ली हैं, बल्कि उन्हें सरकार ने अपना विरोध मान लिया है. जो पुराणों में नहीं लिखा, वह मौजूदा सरकार को मंजूर नहीं. यह देश को 2,000 साल पीछे ले जाएगा जब मुट्ठीभर विदेशी आते और देश के बड़े हिस्से पर राज करने लगते थे. हां, मंदिरों के रखवाले हर युग में किसी न किसी तरह रंग बदल कर जीवित रहे और आज मौजूदा पौराणिक सरकार के संरक्षण तले वे शेर बन रहे हैं.

कट्टरता बेलगाम

उत्तर प्रदेश के चरण सिंह विश्वविद्यालय में खुल्लमखुल्ला हिंदू पंचायत का आयोजन किया गया जिस में एक स्वामी आनंद स्वरूप ने खुल्लमखुल्ला कहा कि अगर मुसलमान भारत में रहना चाहते हैं तो उन्हें कुरान पढ़ना बंद करना होगा और नमाज बंद करनी होगी. इतना ही नहीं, उन्होंने यह कह कर हिंदुओं को उकसाया भी कि हिंदू जनता मुसलिम दुकानदारों से सामान न खरीदे ताकि वे धीरेधीरे हिंदू बन जाएं.

अगर ऐसा कुछ कोई मुसलमान अपने प्रभाव के क्षेत्र में हिंदुओं के लिए कहता तो पुलिस 10 घंटे के भीतर न केवल उक्त मुसलमान वक्ता को गिरफ्तार कर चुकी होती, बल्कि हर आयोजक को भी गिरफ्तार कर चुकी होती और हरेक पर विभिन्न कानूनों की 10-12 धाराएं लगा चुकी होती. अभी इस मामले में केवल जांच हो रही है जो कभी पूरी नहीं होगी और स्वामी आनंद स्वरूप अगली सभा में सम्मानजनक ढंग से बुलाए जाएंगे.

जाहिरी तौर पर मुसलमानों के लिए ऐसा कहा गया है लेकिन परोक्षरूप से ऐसा ईसाईयों, यहूदियों, सिखों, जैनियों और ईश्वर को न मानने वालों के लिए भी कहा जा रहा है. इस के पीछे कट्टर हिंदुओं का उद्देश्य यह है कि हिंदुओं के मन में एक खतरा पैदा कर के रखो ताकि सभी हिंदू कट्टरता को अपनाएं. वहीं, दूसरे धर्म वालों के प्रति नफरतभरी इन बातों का विरोध न किया जाना यह दर्शाता है कि देश की हिंदू जनता आज धर्मप्रचारकों के हाथों की कठपुतली बनी हुई है. और इन धर्मप्रचारकों की पूजापाठ, हवनयज्ञ, दान लेने में रुचि है, देश के निर्माण में नहीं, देश में सामाजिक सुधारों में नहीं, देश की औरतों को इज्जत व बराबरी का स्थान देने में नहीं.

हिंदू संगठनों ने तमाम छुट्टे सांड यानी धर्मप्रचारक छोड़ रखे हैं जो कुछ अति बोल कर जनता को डराते रहें कि देश में जो कुछ होगा वह लंबी दाढ़ी वालों के कहे अनुसार

होगा जो भगवा वस्त्र पहनते हैं, चाहे वह शौल हो, जैकेट हो, कमीज हो या स्टौल.

इन स्वामी महाराज ने सितंबर में कहा था कि हिंदू का अग्निदाह राशि में केवल काशी में हो सकता है यानी जीवन और मौत दोनों पर क्या किया जाए, यह फैसला धर्म करेगा, व्यक्ति नहीं. इन्हें उन ट्रस्टों पर भी आपत्ति है जो सरकार के अधीन हैं क्योंकि उस के आधार पर ट्रस्टी कोई ईसाई या शास्त्र द्वारा अमान्य व्यक्ति भी बनाया जा सकता है.

ये स्वामी बैक टू बेसिक में विश्वास करते हैं, जबकि ये आधुनिक ट्विटर, इंटरनैट, फेसबुक का जम कर इस्तेमाल करने से परहेज नहीं करते जो पौराणिक युग में थे नहीं. वैसे तो ये भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने को कहते हैं जिस में समुद्रपार जाने की बंदिश हो, लेकिन वहीं वे 60 देशों में अपनी परिषद खोलना भी चाहते हैं, शायद इसलिए कि विदेशों में बसे हिंदू कट्टरपंथी काफी अमीर हैं.

देश को आवश्यकता है कि सभी देशवासी मिल कर नया समाज बनाएं और प्राचीन व संकीर्णवाद समाज को त्यागें जिस में स्त्री को पापयोनि का कहा जाता है और वर्णव्यवस्था का बखान होता है. आज हमारे देश को कर्मठ हाथों की जरूरत है, पर इस तरह के लोग उन हाथों में कमंडल पकड़ा देना चाहते हैं.

आरक्षण की हत्या

भारतीय जनता पार्टी का बड़ा एजेंडा आरक्षण समाप्त करना रहा है. आज जो समर्थन उसे मीडिया, तथाकथित विद्वानों, नौकरशाही, व्यापारियों से मिल रहा है, उस के पीछे बड़ा कारण है कि वे सभी पौराणिक युग का जातिगत भेदभाव, जो जन्म पर आधारित है, सत्ता में बनाए रखना चाहते हैं और पिछड़े यानी ओबीसियों व दलितों यानी एससीएसटियों को असल सत्ता में बैठा नहीं देखना चाहते. ऐसा ही वे औरतों के साथ करना चाहते हैं कि हर जाति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की महिलाएं आगे बढ़ कर सत्ता में बैठें.

अब सरकार ने प्रशासनिक सुधारों व कार्यकुशलता के नाम पर 3 जौइंट सैक्रेटरियों और 27 डायरैक्टरों को बिना यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षाओं को पास करने के केवल अनुभव व इंटरव्यू के आधार पर नियुक्त करने का फैसला किया है. जो पिछड़ी व निचली जातियों के अफसर पदोन्नति के सपने देख रहे थे अब भूल जाएं कि इस सरकार में उन्हें सत्ता मिलेगी. हां, वेतन व मकान की सुविधा के टुकड़े चाहे मिलते रहें.

मुख्य मंत्रालय जैसे कौमर्स मंत्रालय, राजस्व मंत्रालय और कृषि मंत्रालयों के अतिरिक्त सचिव अब सीधे प्रधानमंत्री की चाहत पर नियुक्त होंगे और उन्हें वही वरिष्ठता मिल जाएगी जो उस पद पर धीरेधीरे बढ़ते हुए लोगों को मिलती है.

27 बेहद कमाऊ मंत्रालयों में डायरैक्टर पोस्ट पर सीधे नियुक्तियां होंगी. कहने को विज्ञापन दिया जाएगा पर असल में 2 ही तय करेंगे कि कौन, कहां, किस मंत्रालय में जाएगा. यह साफ है कि इन 30 लोगों में इक्कादुक्का ही पिछड़ों या दलितों से होंगे.

ये सब अपनेअपने विभागों में एक तरह से सुपर मंत्री होंगे क्योंकि इन की नियुक्ति नई होगी और इन्हें प्रधानमंत्री

कार्यालय से आदेश मिलेंगे. सरकार पर शिकंजा कसने के साथ मंत्रियों को उसी तरह निष्क्रिय कर दिया जाएगा जैसे आज एक आम भाजपाई सांसद, मुख्यमंत्री या विधायक हैं. उन्हें बस, सरकार के इशारे पर ट्विटर पर बयान देना होगा.

एक देश, एक कानून के साथ 'एक ही शासक' की ओर बढ़ रहा यह देश एक ही जाति को पूरी तरह बढ़ावा दे रहा है.

कानून का दुरुपयोग

बलात्कार के कानून का दुरुपयोग आजकल किसी पर भी किसी बच्ची को सैक्सुअली मोलैस्ट करने या यौन प्रताड़ना के नाम पर किया जा सकता है. दिल्ली में एक व्यक्ति को छोड़ा नहीं गया हालांकि जमानत मिल गई. उस पर अपने एक जानकार की ढाई साल की बेटी की यौन प्रताड़ना का आरोप लगाया गया था. सीसीटीवी देखने पर पता चला कि यह आरोपी 2 मिनट में घर से वापस आ गया. जबकि 8 घंटे बाद बच्ची के पिता ने एफआईआर दर्ज कराई.

बड़ी लड़कियों के बलात्कार की बात तो लोग छिपा जाते हैं क्योंकि उन के चरित्र पर धब्बा लग जाता है. और भारत तो ऐसा देश है जहां लड़कियों पर ही चरित्र के सारे धब्बे पौराणिक युगों से, राम के जमाने से लगते रहे हैं. यहीं अहल्या को पत्थर बनना पड़ा और सीता को घरनिकाला मिला था. इसलिए बच्चियों को ले कर किसी पर भी झूठे आरोप मढ़ना बहुत आसान है.

ढाई साल की बच्ची से ओरल सैक्स करवाना, वह भी उस के अपने घर में जब घर वाले मौजूद हों, अटपटा ही लगता है. पर चूंकि 'हथियार' कानून ने दे दिया है तो इस का जम कर दुरुपयोग हो रहा है.

बच्चों से यौनक्रियाएं करवाना कोई अत्प्रत्याशित बात नहीं है. सैकड़ों नहीं, लाखों बच्चे, जिन में लड़के भी शामिल हैं, जीवनभर बचपन में मिले दंश को ले कर जीते हैं. आमतौर पर बच्चों के साथ यौनक्रिया घर का कोई नजदीकी ही करता है और इस अपराध में किशोर, गैरशादीशुदा, शादीशुदा और वृद्ध तक शामिल होते हैं. ऐसे में मातापिता का सतर्क रहना बहुत ही आवश्यक है. लेकिन इस कानून का बदला लेने का चलन चलने लगा तो इस का प्रभाव जाता रहेगा.

यौनक्षुधा ऐसी है जिस को हजार तरीकों से निबटाया जाता है. अब तक सामाजिक या बायलौजिकल विद्वानों के पास इस का कोई हल नहीं है. अपराध करने पर दंड देना समस्या का हल नहीं, क्योंकि अपराधी यह काम आवेश में करता है जब भी उसे मौका मिले. और तब वह आगापीछा नहीं सोचता.

इस का एक सरल हल यही है कि लोगों की भाषा में यौनजनित गालियां कम हों. यौनसंबंध जीवन को सुख देता है जब एकदूसरे का सहयोग हो. पर गाली के साथ जोड़ कर इसे बदला लेने या पाश्विकता के साथ जोड़ दिया गया है. वैसे भगवा सैल इस का भरपूर उपयोग अपने विरोधियों के खिलाफ ट्विटर, इंस्टाग्राम और फेसबुक पर करता है. सारे पढ़ेलिखे उच्च जातियों के लोगों के संस्कार तब आहत नहीं होते जब वे यौन अंगों, वे भी पराई औरतों के, का इस्तेमाल करते हैं. ●

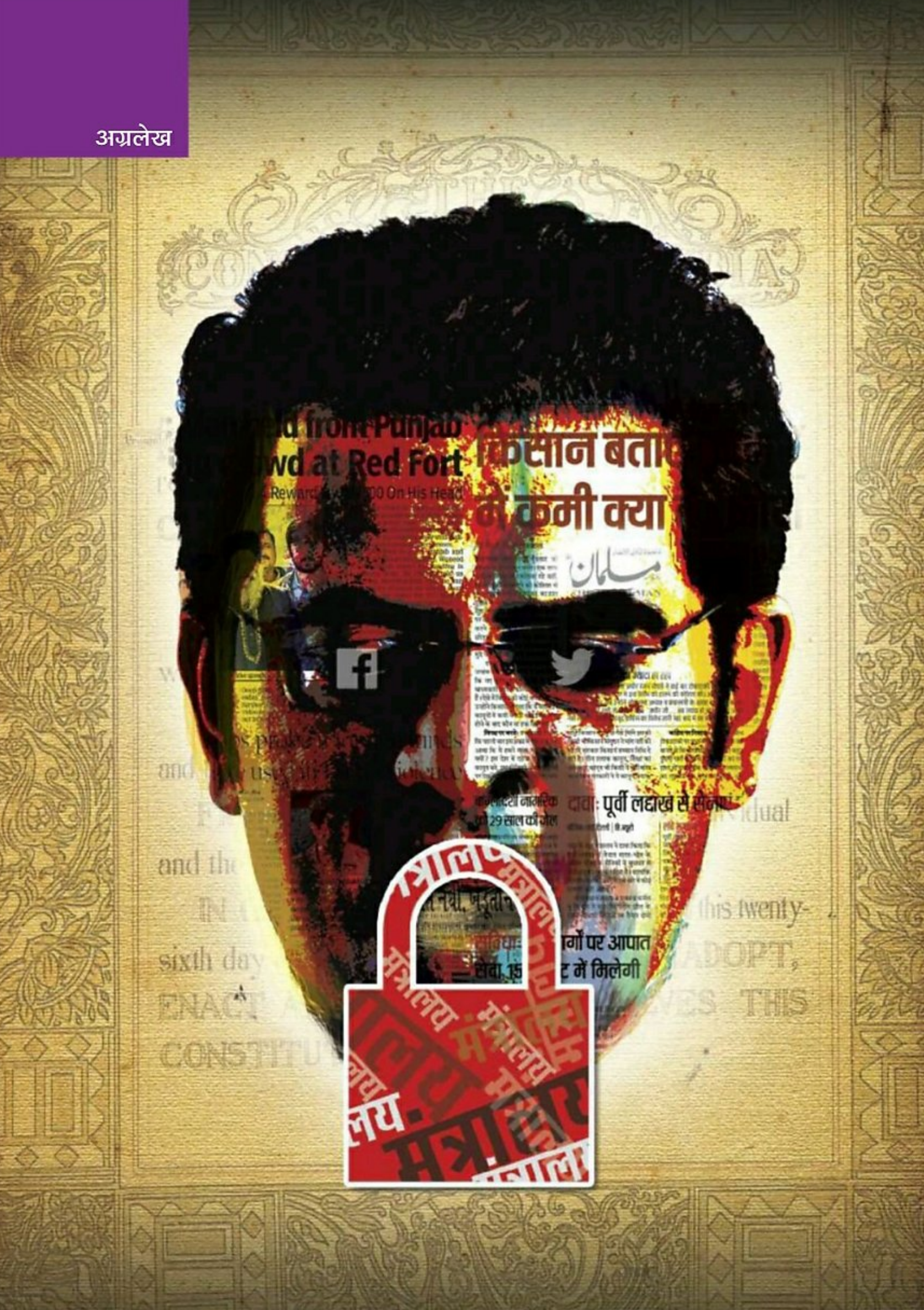
from Punjab
wd at Red Fort
Reward 00 On His Head
किसान बता
में कमी क्या
مسلمان
दावा: पूर्वी लद्दाख से सेना
29 साल की जेल
र्गों पर आपात
ट में मिलेगी
मंत्रालय
and the
this twenty-
sixth day
ADOPT,
ENACT
CONSTITU

जो बोलेगा राजद्रोह झेलेगा

• भारत भूषण श्रीवास्तव

आम और खास लोगों के मुंह बंद करने के लिए सरकार जिस तेजी से राजद्रोह कानून को हथियार बना रही है उसे देख कर लगता है कि लोकतंत्र खतरे में है. सरकार नहीं चाहती कि कोई मौजूदा हालात पर सोचे और बोले, उस ने बगैर आपातकाल लगाए उस से भी ज्यादा कहर ढाना शुरू कर दिया है. इस के पीछे एक छिपा एजेंडा है कि औरतें, पिछड़े, शूद्र, युवा भी अपना मुंह बंद रखें और पौराणिकवाद को सिर नवा कर मानते रहें.

आप जसबीर सिंह को नहीं जानते होंगे जो पंजाब के होशियारपुर शहर में रहते हैं. 24 मार्च, 2020 को जब लौकडाउन घोषित हुआ तो जसबीर सिंह को इस के लागू करने का तरीका कई परेशानियां झेल रहे करोड़ों दूसरे लोगों की तरह नागवार गुजरा. लिहाजा, उन्होंने फेसबुक पर लाइव होते इस का विरोध किया. उन्होंने पंजाब और केंद्र सरकार की आलोचना करते अभिव्यक्ति के अपने संवैधानिक अधिकार का इस्तेमाल किया और जागरूक नागरिक होने का परिचय ही दिया था.

14 अप्रैल, 2020 को होशियारपुर के टांडा पुलिस स्टेशन में एक एफआईआर दर्ज हुई जो खुद पंजाब पुलिस ने लिखाई थी. इस एफआईआर के मुताबिक, जसबीर का फेसबुक पर लाइव हो कर अपनी बात कहना राष्ट्र की एकता व

अखंडता के खिलाफ था और उन का मकसद सांप्रदायिक असंतोष पैदा करना था. इस तरह इस आम नागरिक के खिलाफ राजद्रोह और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की क्रूर धाराओं के तहत मामला दर्ज हो गया और उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया.

9 जुलाई, 2020 को इस दिलचस्प मामले की चार्जशीट तो पेश की गई लेकिन तब तक भी पुलिस आरोप तय नहीं कर पाई थी. जसबीर के वकील ने पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में अपने मुवक्किल की जमानत याचिका पेश करते यह तर्क भी दिया कि जसबीर के खिलाफ दूसरा कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं है और भविष्य में इस मुकदमे के निबटारे की कोई संभावना नजर नहीं आ रही है, लिहाजा उन्हें जमानत दी जाए.

जस्टिस सुधीर मित्तल ने जसबीर के फेसबुक लाइव के ट्रांसस्क्रिप्ट देखने के बाद उन्हें नियमित जमानत का आदेश देते जो कहा वह खासतौर से मौजूदा हालात में बेहद महत्त्वपूर्ण है. बकौल जस्टिस सुधीर मित्तल, "ऐसा प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता कोरोना वायरस के कारण लगाए गए लौकडाउन से नाखुश था और जिस तरह से भारत सरकार और पंजाब सरकार द्वारा महामारी को संभाला जा रहा था, उस ने सरकारों के कामकाज की आलोचना की है. निश्चितरूप से उस ने सरकारों के उच्च अधिकारियों के साथसाथ चुने गए प्रतिनिधियों के खिलाफ भी तीखी व अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया है लेकिन यह सब नफरत फैलाने के लिए नहीं है. यह धार्मिक असहमति या सांप्रदायिक सद्‌भाव को बाधित करने के लिए भी नहीं है."

अदालत ने यह भी कहा, "यह सरकार के कामकाज और उस की नीतियों की आलोचना के साथ असंतोष की अभिव्यक्ति है. लोकतंत्र में हर नागरिक को स्वतंत्ररूप से अपनी राय रखने और सरकार के कामकाज की आलोचना करने का अधिकार है लेकिन इसे सभ्य तरीके से किया जाना चाहिए और असंसदीय भाषा का इस्तेमाल नहीं अपनाया जाना चाहिए. सरकार को भी राजद्रोह और धार्मिक असहमति से संबंधित कानूनों को लागू करते वक्त अधिक सहिष्णु और चौकस रहने की जरूरत है. सुप्रीम कोर्ट इस तरह के एक मामले में पहले ही इस तरह के निर्देश दे चुका है."

बिना किसी जुर्म के 6 महीने जेल में काटने के बाद जसबीर जब 5 नवंबर, 2020 को जमानत पर बाहर आए तो तय है उन्हें यह ज्ञान प्राप्त हो गया होगा कि इन दिनों देश में अघोषित आपातकाल लगा हुआ है, जिस के तहत सरकार के खिलाफ बोलना ही, दरअसल, धर्म की आलोचना और राजद्रोह है, इसलिए हर शरीफ व अमनपसंद आम आदमी को खामोशी से सरकार के जोरजुल्म व ज्यादतियों को बरदाश्त करने की आदत डाल लेनी चाहिए.

आजकल लोकतंत्र, संविधान और बोलने की आजादी के माने बदल रहे हैं. अब बात और मुद्दा कोई भी हो, आप को सरकार से सहमत होना आना चाहिए, इसी में आप की खैर है. बातबात में धर्मजाति, संप्रदाय और गोत्र तक पर भी भेदभाव करने वाली भाजपाई सरकारें राजद्रोह की धारा इस्तेमाल करने में सम्यक दृष्टि रखती हैं.

निशाने पर मीडिया

सरकार ने पंजाब एवं हरियाणा

हाईकोर्ट के उपरोक्त व उस जैसे कई अदालती फैसलों से कोई सबक लिया हो, ऐसा लगता नहीं क्योंकि बोलने वालों का मुंह बंद करने के लिए धड़ल्ले से राजद्रोह वाले कानून का बेजा इस्तेमाल किया जा रहा है. इसे देखते 1975 के इंदिरा गांधी वाले आपातकाल की यादें ताजा हो जाती हैं. फर्क सिर्फ इतना है कि तब लोगों को मालूम था कि न बोलने के लिए एक कानून लागू है. नरेंद्र मोदी सरकार बिना कोई कानून बनाए ही काम चला रही है. जब कोई आपातकालों पर शोध करेगा तो उपसंहार में यह जरूर लिखेगा कि अघोषित आपातकाल में दहशत और आतंक ज्यादा रहता है.

घोषिततौर पर 1975 के आपातकाल की तरह कोई मीडिया सैंसरशिप नहीं है. वह दौर और था जब अखबार और पत्रिकाएं प्रकाशन सामग्री छापने से पहले सरकार की इजाजत लेते थे. अब खुद मीडिया वालों के पास सरकार असाइनमैंट भेज देती है कि उन्हें आज क्या दिखाना और छापना है.

गोदी मीडिया शब्द किसी पहचान का मुहताज नहीं है, जिस ने अभिव्यक्ति की आजादी के लिए संघर्ष के बजाय सरकार के सामने समर्पण का सहूलियतभरा रास्ता चुन रखा है. यह कहना ज्यादती होगी कि ऐसा उन्होंने सिर्फ आर्थिक कारणों से ही किया है, क्योंकि सच यह भी है, वे खुद कट्टर हिंदूवादी संस्कारों वाले हैं.

जिन्होंने इस रास्ते को नहीं चुना है, उन की बड़ी शामत है. जेल जाने का खतरा उन के सिर पर चौबीसों घंटे मंडराता रहता है क्योंकि ये लोग बोलने की जुर्रत करते हैं खासतौर से सच बोलने की, जो आजकल सब से बड़ा गुनाह है. गुनाह इसलिए कि मीडिया आम लोगों की आवाज उठाता है और सरकार की हर गलत बात या फैसले का विश्लेषण व विरोध करता है. इधर सरकार आलोचना बरदाश्त नहीं करती क्योंकि उस का मकसद या एजेंडा हिंदुत्व और हिंदूराष्ट्र का निर्माण है और जो भी इस रास्ते में आड़े आता है उसे तरहतरह से तंग व परेशान करने में वह कोई कसर नहीं छोड़ती.

नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद सालदरसाल बढ़ते राजद्रोह के मामलों में कई पत्रकारों को महज सबक सिखाने की गरज से जेलयात्रा का लुत्फ दिया गया है. जेल टूरिज्म के सभी मामले उतने ही हास्यास्पद व बचकाने हैं जितना कि जसबीर सिंह का था. आइए कुछ पर नजर डालें जिस से पता चले कि क्यों एक नामी शायर दुष्यंत कुमार ने इंदिरा गांधी वाले आपातकाल के दौरान उन की तानाशाही पर यह शेर कहा था जो आज भी मौजूं है–

मत कहो कि आसमान में कोहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है.

धवल पटेल

7 मई, 2020 को एक गुजराती पोर्टल 'फेस औफ नैशन' के संपादक धवल पटेल ने एक लेख लिखा जिस में यह संभावना व्यक्त की गई थी कि गुजरात में नेतृत्व परिवर्तन हो सकता है और विजय रूपाणी की जगह केंद्रीय मंत्री मनसुख मंडाविया को मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है. इस पर अहमदाबाद पुलिस ने धवल के खिलाफ राजद्रोह वाली भारतीय दंड संहिता की धारा 124(ए) और आपदा प्रबंधन कानून के तहत प्राथमिकी दर्ज करते उन्हें 15 दिन की हिरासत में

लेते 11 मई को जेल भेज दिया. मामला अदालत में गया तो सत्र अदालत के न्यायाधीश प्रेरणा सी चौहान ने 27 मई को धवल पटेल को नियमित जमानत देते कहा कि पत्रकार को राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तारी के लिए यह कोई आरोप स्थापित नहीं करते हैं. एफआईआर और पुलिस द्वारा पेश किए गए विभिन्न दस्तावेज व बयान पढ़ने पर प्रथमदृष्टया ऐसा कोई गंभीर आरोप नहीं दिखता.

इस से बेहूदा मजाक कोई हो भी नहीं सकता कि एक पत्रकार राजनीतिक अनुमान भी व्यक्त न करे, जबकि मीडिया का यह खास शगल है कि कौन क्या बन सकता है और नहीं बन सकता. न्यूज चैनल के सर्वे इन अंदाजों का एक बड़ा व दिलचस्प कारोबार हैं जिन पर कभी राजद्रोह का कानून नहीं लादा गया.

इस लिहाज से तो बीती 6 फरवरी को 'टाइम्स नाउ' और 'सी वोटर' के इस सर्वे को भी राजद्रोह माना जाना चाहिए जिस में उस ने पश्चिम बंगाल में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में भाजपा को 41.6 फीसदी और टीएमसी को 36.9 फीसदी जनता का समर्थन मिलता बताया है. मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को भी यह हक है कि वे इन एजेंसियों के कर्ताधर्ताओं पर राजद्रोह का मुकदमा ठोकते उन्हें जेल भेज दें. लेकिन चूंकि वे विजय रूपाणी नहीं हैं, इसलिए ऐसा नहीं करेंगी.

भाजपाशासित राज्यों के मुख्यमंत्री राजद्रोह कानून को हथियार की तरह पत्रकारों के खिलाफ इस्तेमाल करते हैं. इस की एक और बचकानी बानगी मणिपुर में देखने में आई जब 17 जनवरी को इम्फाल पश्चिम जिले के सिंगअमेई थाने के पुलिस अधिकारी पी संजोय सिंह ने खुद 2 वरिष्ठ व नामी पत्रकारों 'फ्रंटियर मणिपुर' न्यूज पोर्टल के पओजेल चाओबा और धीरेन साड़ोकपाम पर राजद्रोह का मुकदमा दर्ज करते उन्हें हवालात में ठूंस दिया. इन पत्रकारों पर आईपीसी की धारा 124ए, 120बी, 505बी/34 और यूएपीए एक्ट की धारा 39 के तहत आरोप लगाए गए.

पओजेल चाओबा

कम हैरानी की बात नहीं कि उक्त पुलिस अधिकारी ने खुद बड़ी वीरतापूर्वक यह स्वीकारा था कि वह कथित विवादित लेख के लेखक तक नहीं पहुंचा है. जब इस मामले की चीरफाड़ हुई तो सच यह सामने आया कि चाओबा ने दरअसल ड्रग तस्करी के एक मामले में मुख्यमंत्री बीरेंद्र सिंह के एक करीबी के बारे में काफीकुछ लिखा था.

धीरेन साड़ोकपाम

यह तो कुछ भी नहीं था. सनसनी तब मची थी जब राज्य सरकार की एक तेजतर्रार पुलिस अधिकारी थोउनाओजम बृंदा ने हाईकोर्ट में पेश हलफनामे में यह कहा था कि 27 करोड़ रुपए की कीमत वाले ड्रग्स की तस्करी करने वाले मुलजिम लुखाउसी जू को छोड़ने हेतु मुख्यमंत्री बीरेंद्र सिंह ने उन पर दबाव बनाया था. इस से दुखी और व्यथित बृंदा ने ड्रग माफिया से लड़ने को ले कर मिला पुलिस पदक भी वापस कर दिया था. यह न जाने किस किस्म का राजद्रोह था जिस में पत्रकारों ने तस्करी में मुख्यमंत्री की मिलीभगत का भंडाफोड़ किया था.

अब बात केरल के पत्रकार सिद्दीकी कप्पन की जो मलयालम पोर्टल 'अजीमुखम' के लिए काम करते हैं. वे

अपने 3 साथियों के साथ 7 अक्तूबर, 2020 को मथुरा में गिरफ्तार किए गए थे. पुलिस का आरोप था कि उन के संबंध पौपुलर फ्रंट औफ इंडिया और मथुरा में उस से जुड़े संगठनों से है. कप्पन हाथरस के चर्चित बलात्कार कांड की पीड़िता के परिवार से मिलने जा रहे थे लेकिन रास्ते में ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था. उन पर जातीय दंगे भड़काने और देशद्रोह के आरोप लगाए गए हैं. मथुरा के मांट थाने में इन लोगों पर राजद्रोह वाली आईपीसी की धारा 124 ए, 2 समुदायों के बीच वैमनस्य बढ़ाने वाली धारा 153 ए और धार्मिक भावनाएं भड़काने वाली धारा 295 ए के अलावा यूएपीए की धारा 65, 72 और आईटी एक्ट की धारा 76 के तहत मामला दर्ज किया गया (किसी पत्रकार को फंसाने के लिए इस से ज्यादा धाराएं कानून में हैं भी नहीं, वरना वे भी लगाई जातीं).

सिद्दीकी कप्पन

7 अक्तूबर, 2020 से जेल में कैद सिद्दीकी कप्पन को जमानत नहीं मिल रही है जबकि उन की बूढ़ी मां केरल में सख्त बीमार हैं. इस मामले की अगली सुनवाई अब मार्च में कभी होगी लेकिन क्या बगैर अपराध सिद्ध हुए, किसी पत्रकार तो दूर, आम आदमी को भी जेल में इतने लंबे वक्त तक रखा जाना चाहिए ? इस सवाल पर भी विचार करने को कोई तैयार नहीं कि उक्त पत्रकार की पत्नी व बच्चों पर क्या गुजर रही होगी. अगर आप जीएमजी यानी गोदी मीडिया ग्रुप के सदस्य नहीं हैं तो लगता ऐसा है कि पत्रकारिता का पेशा अब अपराध होता जा रहा है. कप्पन के वकील कपिल सिब्बल ने जमानत में देरी की तुलना एक चैनल के चिल्लाऊ, भड़काऊ और जोकरनुमा पत्रकार अर्नब गोस्वामी के मामले से भी की थी जिसे औरों के मुकाबले जल्द जमानत मिल गई थी क्योंकि उस के अतरंग संबंध प्रधानमंत्री और गृहमंत्री वगैरह से भी हैं.

आंदोलन बौखलाहट की गाज

अर्नब गोस्वामी जैसे पत्रकारों की देश में कमी नहीं जो किसान आंदोलन को ले कर सरकार को जैसे भी हो सही और किसानों को जैसे भी हो न केवल गलत बल्कि आतंकी, खालिस्तानी और भी न जाने क्याक्या करार दे रहे हैं. लेकिन 28 जनवरी, 2021 का दिन जरूर भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में काले अक्षरों में लिखा जाएगा. इस दिन ताबड़तोड़ तरीके से देशभर के विभिन्न थानों में देश के दिग्गज पत्रकारों व संपादकों के खिलाफ सुनियोजित तरीके से राजद्रोह सहित दूसरी कई धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज हुईं.

26 जनवरी को किसानों की ट्रैक्टर रैली सरकार की छीछालेदर करा गई थी. किसानों ने पूरे धैर्य, अनुशासन और समझदारी से काम लिया. उन का प्रबंधन देखने के काबिल था. लेकिन इस के बाद भी विवाद उस वक्त उठ खड़ा हुआ जब किसी ने लालकिले पर झंडा फहरा दिया. यह कौन था और उस की मंशा क्या थी, इस बात के अब कोई खास माने नहीं रहे पर सरकार का चेहरा उतरा हुआ था क्योंकि किसानों ने वह कर दिखाया था जिस की उम्मीद उसे सपने में भी नहीं थी. गणतंत्र की परेड से ज्यादा कवरेज भक्त न्यूज चैनल्स ने भी टीआरपी की मजबूरी में ट्रैक्टर परेड को दिया जिस के सामने

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कद काफी छोटा नजर आ रहा था. देशभर के लोग भी उत्सुकता से ट्रैक्टर परेड देख रहे थे.

यह नरेंद्र मोदी के लिए असहनीय बात थी कि 130 करोड़ लोग उन से ज्यादा किसी राकेश टिकैत पर तवज्जुह दें. लेकिन खुद को सहज दिखाते जैसेतैसे उन्होंने यह सदमा बरदाश्त कर लिया. परेड के बाद जब वे रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के साथ राजपथ से बाहर आ रहे थे तब उन से अपने चेहरे का विषाद छिपाए नहीं छिप रहा था. उन्हें तय है कि यह एहसास था कि आज वे लोग भी जल्दी उठ कर टीवी के सामने बैठ गए हैं जो आमतौर पर गणतंत्र दिवस की परेड देखने से परहेज करते हैं. आम लोग संभावित हिंसा को ले कर भी बेचैन थे जो छिटपुट हो कर रह गई.

गणतंत्र दिवस पर किसानों की ट्रैक्टर रैली ने सरकार को बौखला दिया.

ट्रैक्टर परेड का इकलौता बड़ा हादसा एक प्रदर्शनकारी की मौत रही कि यह स्टंट करती हुई या पुलिस की गोली से हुई, इस बात की आधिकारिक पुष्टि हो पाती, इस के पहले ही किसी ने ट्वीट कर डाला कि किसान की मौत पुलिस की गोली से हुई. 28 जनवरी को यह मान लिया गया कि हो न हो, यह ट्वीट कांग्रेस सांसद शशि थरूर, इंग्लिश की मशहूर मैगजीन 'द कारवां' के संपादक व प्रकाशक परेश नाथ (जो इस पत्रिका सरिता के भी संपादक हैं) व अनंत नाथ, कार्यकारी संपादक विनोद के जोस, इंडिया टुडे के पत्रकार राजदीप सरदेसाई, नैशनल हेराल्ड की वरिष्ठ सलाहकार संपादक मृणाल पांडे और कौमी आवाज के संपादक जफर आगा वगैरहवगैरह ने ही किए होंगे क्योंकि ये लोग जीएमजी (गोदी मीडिया ग्रुप) के मैंबर नहीं हैं और गाहेबगाहे बाल की खाल निकालते नहीं, बल्कि उधेड़ते रहते हैं.

पहली रिपोर्ट नोएडा के एक थाने में दर्ज हुई, दूसरी भोपाल के मिसरोद थाने में और तीसरी चौथी से ले कर कई और रिपोर्टें देश के अलगअलग थानों में दर्ज हुईं. ये रिपोर्टें बड़ी दिलचस्प थीं जिन में, मसौदे की भाषा तो दूर की बात है, एक मात्रा भी इधरउधर नहीं की गई थी. बस, आवेदक का नाम, पता, उम्र और वल्दियत बदल गए थे. धाराएं बताना एक औपचारिकता मात्र है कि वे राजद्रोह वाली 124 ए के अलावा 153 ए, 153 बी, 295 ए, 298, 504, 505, 506, 34, 120 बी और 66 आईटी एक्ट हैं.

बकौल तमाम शिकायतकर्ता, इन

आंकड़े भी स्याह

भारत को दुनिया का सब से बड़ा लोकतंत्र कहलाने का फख्र मिला हुआ है. उस से भी ज्यादा फख्र से कहा यह जाता है कि मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है. इस चौथे स्तंभ की एक अहम जिम्मेदारी लोकतांत्रिक सरकार को निरंकुश होने से रोकने की होती है. अपने देश में चिंता की बात मीडिया की आजादी पर अंकुश लगाने की सरकारी कोशिशें हैं. पत्रकारों व संपादकों पर लादे गए बेबजह के मुकदमे, गिरफ्तारियां और महीनों तक जमानत न होना, इस बात के सुबूत हैं कि सरकार अब पूरी तरह मनमानी पर उतारू हो आई है और षड्यंत्रपूर्वक मीडिया को तंग करने के लिए तरहतरह के टोटके रचती रहती है जिन के पीछे दिमाग किसी एक का होता है, बाकी सब तो मोहरे होते हैं.

इस बात की पुष्टि वर्ल्ड प्रैस फ्रीडम इंडैक्स के आंकड़े भी करते हैं. इस इंडैक्स को एक एनजीओ रिपोर्टर्स विदआउट बौर्डर्स जारी करती है जिस के अपने तयशुदा मानक होते हैं. इस इंडैक्स के मुताबिक, साल 2020 में प्रैस स्वतंत्रता के मामले में भारत 180 देशों में 142वें नंबर पर है. 2019 में उस की रैंकिंग 140वीं थी यानी उस में 2 स्थानों की गिरावट आई है. ऐसा बेवजह नहीं है, बल्कि सच यह है कि सरकार लगातार मीडिया घरानों पर प्रायोजित सामग्री दिखाने व छापने का दबाब बनाती रहती है.

अफसोस की बात तो यह भी है कि सरकार की आलोचना को ही देश की आलोचना मान लिया जाता है और 3-4 करोड़ सवर्ण, जिन में ब्राह्मण ज्यादा हैं, ऐसा हल्ला मचाते हैं मानो कोई आफत टूटी पड़ रही हो. गिरती रैंकिंग साफसाफ यह इशारा भी करती है कि सरकार की हिंदुत्व वाली विचारधारा या मुहिम, कुछ भी कह लें, को जो पत्रकार आगे नहीं बढ़ाते उन्हें धमकियां मिलती हैं, गालियां पड़ती हैं और इस पर भी बात न बने तो उन्हें राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया जाता है.

इस कानून का सरकार ने ही मजाक भी बना रखा है. आप को जान कर हैरानी होगी कि राजद्रोह के 4 फीसदी मामलों में भी आरोप साबित नहीं हो पाता. राष्ट्रीय अपराध रिकौर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक, साल 2019 में देशभर में राजद्रोह के 93 मामले दर्ज हुए थे जबकि 2018 में इन की संख्या 70, 2017 में 51 और 2016 में महज 35 थी. 2018 और 2019 में सिर्फ 2-2 आरोपियों को सजा हुई थी. यह बढ़ती संख्या बताती है कि कैसे इस कानून का दुरुपयोग सरकार कर रही है और इस बारे में कोई नहीं सोचता कि आरोप चूंकि झूठे होते हैं इसलिए साबित भी नहीं हो पाते.

फिर अभिव्यक्ति की किस स्वतंत्रता का दम भरा जाता है, इस पर सोचा जाना जरूरी है. सोचा तो यह भी जाना चाहिए कि क्या 3-4 करोड़ लोगों की मनुवादी जिद को पूरा करने के लिए किश्तों में लोकतंत्र को बेअसर नहीं किया जा रहा.

कथित आरोपियों ने एक सुनियोजित साजिश के तहत गलत जानकारी प्रसारित की जिस से बड़े पैमाने पर दंगे हों और विभिन्न समुदायों के बीच तनाव पैदा हो. साफ दिख रहा है कि यह भगवा गैंग की खीझ और बौखलाहट है जो उस ने उक्त पत्रकारों को परेशान करने की गरज से अलगअलग जगहों पर एफआईआर दर्ज कराई जिन का मकसद साफ है कि सच के खिलाफ आवाज उठाने वालों को अगर

खरीद नहीं सकते, खुद से सहमत नहीं कर सकते तो कानून को हथियार बना कर उन्हें परेशान करो ताकि उन की हिम्मत टूटे.

लेकिन ऐसे टोटकों से हिम्मत टूटती नहीं, बल्कि और बढ़ती व मजबूत होती है क्योंकि ऐसे मामले ही साबित करते हैं कि आप की पत्रकारिता असरदार और धारदार है. इस का एक सटीक उदाहरण लोकप्रिय पारिवारिक पत्रिका 'सरिता' है जिसे इस वक्त आप पढ़ रहे हैं. सामाजिक पुनर्निर्माण में सरिता की भूमिका कभी किसी सुबूत की मुहताज नहीं रही. पाखंडों, रूढ़ियों और अंधविश्वासों की पोल खोलने में सरिता ने कभी लापरवाही नहीं बरती. इसीलिए यह आज भी उतनी ही लोकप्रिय है जितनी कि 7 दशक पहले हुआ करती थी. इस की बड़ी ताकत इस के सजग और बुद्धिजीवी पाठक हैं. इन में से कई कुछ मसलों पर असहमत होते हुए भी मानते हैं कि निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता में 'सरिता' पत्रिका बेमिसाल है.

यहां गौरतलब है कि 'द कारवां' पत्रिका भी देश के ही नहीं, बल्कि दुनिया के सब से बड़े पत्रिका समूह दिल्ली प्रैस की ही एक प्रमुख पत्रिका है जिस के अपने अलग तेवर हैं. खोजी पत्रकारिता में दुनियाभर में इस का जिक्र मिसाल के तौर पर किया जाता है. 'सरिता' की तरह ही इस के विचारों, तर्कों और तथ्यों से सत्ता व धर्म के मठाधीश घबराते हैं. 28 जनवरी की बौखलाहट यह बात साबित भी करती है. इन पत्रिकाओं को देश को तोड़ने वाला प्रचारित करने वाले लोगों को बेहतर यह कहावत मालूम है कि "सच को परेशान तो किया जा सकता है लेकिन पराजित नहीं किया जा सकता." फिर भी खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे तो आगे कुछ कहने की वजहें और गुंजाइशें नहीं रह जातीं सिवा इस के कि कारवां और सरिता पत्रिकाएं परिवार, समाज और देश को जागरूक करने व जोड़ने के अपने मिशन में न पहले कभी पीछे हटी थीं और न आगे कभी हटेंगी.

PRESS CLUB OF INDIA

षड्यंत्रपूर्वक तरीके से पत्रकारों और संपादकों के खिलाफ दर्ज एफआईआर का पत्रकार संगठनों ने विरोध कर प्रैस की आजादी की रक्षा की भी मांग उठाई.

पत्रकारों में एक स्वतंत्र पत्रकार मनदीप पुनिया को भी बेवजह गिरफ्तार किया गया और 'द वायर' के संस्थापक सिद्दार्थ वरदराजन के खिलाफ भी मुकदमे दर्ज किए गए. जब हद हो गई तो सरकारी दमन के खिलाफ पत्रकारों ने भी आवाज उठाई. प्रैस क्लब औफ इंडिया ने किसान की मौत के मद्देनजर अपने एक बयान में कहा कि जब कोई स्टोरी घटित हो रही होती है तो चीजें अकसर बदलती रहती हैं. रिपोर्टिंग में वही स्थिति दिखती है जो होती है. जब बहुत ज्यादा भीड़ हो और माहौल में अनुमान, शक व अटकलें हों तो कई बार पहली और बाद की रिपोर्टिंग में अंतर हो सकता है. इसे मोटिवेटेड रिपोर्टिंग बताना आपराधिक है जैसा कि किया जा रहा है.

सरकार को पत्रकारिता का ककहरा सिखाते 1978 में स्थापित 'एडिटर गिल्ड औफ इंडिया' ने भी कहा कि यह मीडिया

को डराने, धमकाने, प्रताड़ित करने और दबाव बनाने की कोशिश है. इस संस्था ने यह भी कहा कि दर्ज तमाम एफआईआर तुरंत वापस ली जाएं और मीडिया को बिना किसी डर के आजादी के साथ रिपोर्टिंग करने की इजाजत दी जाए. एडिटर गिल्ड की इस दलील में भी बेहद दम नजर आया कि प्रदर्शन वाले यानी 26 जनवरी के दिन घटनास्थल पर मौजूद प्रत्यक्षदर्शियों तथा पुलिस की ओर से अनेक सूचनाएं मिलीं. ऐसे में पत्रकारों के लिए यह स्वाभाविक बात थी कि वे इन जानकारियों की रिपोर्ट करें. इस मामले पर सुनवाई करते सुप्रीम कोर्ट ने 9 फरवरी को कथित आरोपियों की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी.

महिलाओं के प्रति छिछोरेपन की इंतहा

जैसेतैसे पत्रकारों और संपादकों वाला मसला थोड़ा ठंडा पड़ा, तो कुछ राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों को ले कर खासा बखेड़ा भगवा गैंग ने मचा दिया, जिस का मकसद किसानों व उन के आंदोलन को बदनाम करना ही था. सब से पहले निशाना कैरेबियन मूल की अश्वेत अमेरिकी मौडल और पौप सिंगर रोबिन रिहाना फेंटी पर साधा गया, जिन्होंने अपने एक ट्वीट में यह सवाल किया था कि हम लोग किसान आंदोलन के बारे में बात क्यों नहीं कर रहे हैं.

रोबिन रिहाना

यह कोई असाधारण या आपत्तिजनक बात तो कतई नहीं थी जिस पर भगवा खेमा तिलमिला उठा. सब से पहले रामायण सीरियल में लक्ष्मण का रोल निभाने वाले सुनील लहरी कुछ इस तरह भड़के मानो रिहाना शूर्पणखा हो और वे सीरियल की तरह ही उस की नाक काट लेंगे. उन्होंने तुरंत कहा, “रिहाना या किसी भी विदेशी इंसान को हमारे देश के आंतरिक मामले में दखल देने की जरूरत नहीं है. हम लोग अपनी परेशानियां खुद हल कर लेंगे.”

बात में दम सिर्फ इस लिहाज से था कि जब देश के लोगों, खासतौर से पत्रकारों, को ही किसान आंदोलन पर नहीं बोलने दिया जा रहा तो रिहाना की हस्ती क्या? अच्छा यह रहा कि सुनील लहरी ने किसान आंदोलन को परेशानी माना. अब बेहतर होगा कि वे नोटबंदी और जीएसटी को भी परेशानी मानने की हिम्मत दिखाएं और यह भी बताएं कि हम यानी सरकार किसान आंदोलन को कब और कैसे सुलझाएगी. लक्ष्मण उवाच के बाद तो भगवा गैंग की तरफ से ट्वीट्स आंधी के आमों की तरह झड़ने लगे. महाराष्ट्र भाजपा अध्यक्ष चंद्रकांत पाटिल ने रिहाना के ट्वीट को देश की संप्रभुता के लिए साजिश मानते कहा, “रिहाना को इस ट्वीट के लिए 18 करोड़ रुपए दिए गए हैं.”

3 साल बाद यानी 2024 में विश्वगुरु बनने का सपना संजोए बैठे भगवा गैंग के मैंबर शायद ही बता पाएं कि हमारे देश की संप्रभुता को क्या वे इतनी कमजोर आंकते व मानते हैं कि वह एक रिहाना के ट्वीट से खतरे में पड़ गई. असल बात कुछ और है जिस का खुलासा उस वक्त हुआ जब एक ब्रिटिश ऐक्ट्रैस जमीला जमील ने भी किसान आंदोलन के पक्ष में कई बार ट्वीट किए. हर ट्वीट के बाद जमीला को बलात्कार व जान से मारने की धमकियां मिलीं. उसे और रिहाना सहित दूसरी सैलिब्रिटीज को सोशल मीडिया पर वेश्या, कुलटा और दूसरे ऐसे कई भद्दे विशेषणों

मीना हैरिस से डर क्यों

अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस की अधिवक्ता भतीजी मीना हैरिस ने भी किसान आंदोलन का लगातार समर्थन किया. लेकिन उन्हें रिहाना, मिया, जमीला और ग्रेटा की तरह जलील करने की हिम्मत भक्तों की नहीं पड़ी. मुमकिन है शायद इसीलिए कि वे दुनिया के सब से ताकतवर देश के उपराष्ट्रपति की नजदीकी रिश्तेदार हैं. उन्हें छेड़ने से आफत आ सकती है. पर बात कुछ और भी है. अमेरिका में अब डैमोक्रेटिक्स का राज है जो दक्षिणपंथ का घोर विरोधी है.

नरेंद्र मोदी और डोनाल्ड ट्रंप की दोस्ती किसी सुबूत की मुहताज नहीं. ये दोनों ही घोर कट्टरवादी माने जाते हैं. अमेरिका में ट्रंप की विदाई और जो बाइडेन का आगमन भारत-अमेरिका संबंधों पर किस तरह असर डाल सकता है, इसे मीना हैरिस के मूड व तेवरों से समझें तो खंगालने को तह में काफी कुछ है. भारत में कुछ लोगों ने मीना के पोस्टर जलाए तो उन्होंने लगातार ये ट्वीट किए-

- ''अतिवादी भीड़ की ओर से अपने फोटो को जलाते देखना अजीब है. लेकिन सोचिए कि अगर हम भारत में रह रहे होते तो वे क्या करते. मैं आप को बताती हूं, 23 साल की एक लेबर राइट एक्टिविस्ट नवदीप कौर को गिरफ्तार किया गया

(गालियों) से नवाजा गया जिन्हें यहां नहीं लिखा जा सकता.

जमीला की हालत तो द्रौपदी जैसी कर दी गई. फर्क सिर्फ इतना है कि उस का चीरहरण भरी सभा में नहीं, बल्कि सोशल मीडिया पर किया गया. समानता यह रही कि आज के भीष्म, विदुर और द्रोणाचार्य वगैरह आदतन चुप रहे जिसे द्वापर की तरह सहमति ही माना जाएगा. जमीला की तरह ही भद्दी और अश्लील टिप्पणियां जामिया मिलिया इस्लामिया की छात्र नेता सफूरा जरगर पर भी की गई थीं, वह एनआरसी और सीएए का विरोध कर रही थी. सफूरा तब गर्भवती थी और अपनी शादी की बात किन्हीं व्यक्तिगत वजहों के चलते उजागर नहीं करना चाहती थी. उस के होने वाले बच्चे को कर्ण नहीं, बल्कि नाजायज कहा गया था जिस के पर्यायवाची शब्द को भी गाली होने के कारण यहां नहीं लिखा जा सकता.

महिलाओं की आवाज और मुंह बंद करने का यह सनातनी घटिया तरीका धर्म की ही देन है जो औरत को गुलाम, शूद्र और दोयम दर्जे की मानता है. सनातनी हिंदुओं के संविधान मनुस्मृति में जगहजगह इस का उल्लेख है. आइए कुछ पर नजर डाल ही लें ताकि पता चले कि महिलाओं के प्रति धर्म का नजरिया क्या व कैसा है.

- *पति अपनी पत्नी को छोड़ सकता है, ब्याज पर गिरवी रख सकता है, बेच सकता है. लेकिन, स्त्री को इस प्रकार के अधिकार नहीं हैं. किसी भी स्थिति में विवाह के बाद पत्नी सदैव पत्नी ही रहती है.*

(अध्याय 9, श्लोक 45)

- *स्त्री पुरुष को मोहित कर, दास बना कर पथभ्रष्ट करने वाली है.*

(अध्याय 2, श्लोक 214)

और पुलिस कस्टडी में टौर्चर किया गया और उन के साथ यौनहिंसा भी की गई. उन्हें बिना जमानत के 20 दिन से हिरासत में रखा गया है.''

- ''यह बात सिर्फ कृषि नीतियों की नहीं है. यह मुखर धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ अत्याचार का मामला है. यह पुलिसहिंसा, चरम राष्ट्रवाद और लेबर राइट पर हमले का मुद्दा है. यह वैश्विक निरंकुशता है. मुझे अपने मामलों से अलग रहने को न कहें, ये हम सभी के मुद्दे हैं.''
- ''यह महज एक संयोग नहीं है कि दुनिया के सब से पुराने लोकतंत्र पर एक महीने पहले ही हमला हुआ और अब दुनिया के सब से बड़े लोकतंत्र पर खतरा है. ये दोनों ही घटनाएं जुड़ी हुई हैं. हमें भारत में आंदोलनरत किसानों के खिलाफ सुरक्षा बलों की हिंसा और इंटरनैट बंद किए जाने को ले कर आक्रोशित होना चाहिए.''

मीना हैरिस के इन ट्वीटस से यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि अमेरिका नरेंद्र मोदी के कट्टरवाद का समर्थन नहीं करेगा. वहां अब उदारवादियों की सरकार है जिसे ले कर भगवा खेमा आशंकित है. ''मीना हैरिस को नहीं छेड़ना है,'' यह उसी दिमाग का मैसेज है जो यह कहता है कि विदेशी सैलिब्रिटीज को ट्रोल करो, उन्हें भद्दी गालियां दो और फलां पत्रकारों व संपादकों के खिलाफ जितनी हो सके राजद्रोह की एफआईआर जगहजगह दर्ज कराओ. अब यह दिमाग मीना हैरिस से डरा हुआ है तो यह कतई हैरत की बात नहीं.

- *स्त्री चंचल और हृदयहीन, पति की ओर से निष्ठाराहित होती है.*

(अध्याय 2, श्लोक 115)

- *स्त्रियां नरकगामिनी होने के कारण यज्ञकार्य या दैनिक अग्निहोत्र भी नहीं कर सकतीं.*

(अध्याय 11, श्लोक 36, 37)

- *स्त्री को संपत्ति रखने का अधिकार नहीं है, स्त्री की संपत्ति का स्वामी उस का पति, पुत्र या पिता है.*

(अध्याय 9, श्लोक 416)

- *पति सदाचारहीन हो, अन्य स्त्रियों में आसक्त हो, दुर्गुणों से भरा हुआ हो, नपुंसक हो यानी जैसा भी हो फिर भी स्त्री को पतिव्रता बन कर उसे देव की तरह पूजना चाहिए.*

(अध्याय 5, श्लोक 154)

अब अगर धर्म का पालन करने वाला किसी रिहाना, जमीला, सूफिया और किसान आंदोलन को समर्थन देने वाली स्वीडन की 18 वर्षीया एक्टिविस्ट ग्रेटा थनवर्ग और मिया खलीफा को कुछ भी कहे, मनु महाराज के हिसाब से गलत नहीं कर रहा है बल्कि कुछ न करे और न कहे तो उस का पुरुषत्व शक के दायरे में आ जाएगा. 27 वर्षीया अमेरिकी मिया खलीफा घोषिततौर पर पौर्न ऐक्ट्रैस हैं तो इस में गलत क्या है. क्या उसे किसी या अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी बात कहने का हक नहीं? इस बारे में वायरल होता एक ट्वीट देखें तो समझ आता है कि कुछ लोग बहुत उदार और स्वस्थ व खुलेदिमाग के भी हैं जिन के तर्क अकाट्य हैं. इस ट्वीट के मुताबिक, "पौर्न स्टार का जिक्र होते ही पाखंडी संस्कारी नर अपने दिमाग में उक्त स्त्री के बारे में अश्लील छवि निर्मित कर लेते हैं, उसे सब से गिरा हुआ समझते हैं. अगर

इन तथाकथित संस्कारी नरों के मस्तिष्क का मनोविश्लेषण कर लिया जाए तो न जाने कितनी नग्न स्त्रियां इन के दिमाग में पड़ी होंगी. मिया खलीफा एक आर्टिस्ट है. हां, पौर्न आर्टिस्ट होते हैं. सदियों पहले भी होते थे, जिन का काम पुरुषों को रिझाना होता था. समस्या मिया खलीफा का चरित्र नहीं, समस्या है जेहन में बसी नग्न स्त्रियां."

भगवा गैंग का इकलौता मकसद मोदी सरकार के गले की हड्डी बन चुके किसान आंदोलन को बदनाम करना है. ट्विटर पर ब्राह्मणभक्तों की भरमार है जो उक्त सैलिब्रिटीज के किसान आंदोलन को दिए समर्थन से रात को चैन की नींद भी नहीं सो पा रहे हैं क्योंकि वह कहीं ज्यादा असरदार साबित हो रहा है बनिस्बत किसी सचिन तेंदुलकर, लता मंगेशकर, अक्षय कुमार, विराट कोहली जैसे भगवा पोस्टरों के. इसीलिए, एक भड़के भक्त यूजर कपिल मिश्रा ने लिखा, सैक्स, कामुकता, नंगई और हवस की गोद में बैठा दिया फर्जी किसान आंदोलन को. एक हफ्ते पहले एक अत्यंत पवित्र निशान इस आंदोलन का प्रतीक बन कर लहराया गया था और आज?"

...और आज हुआ कुछ नहीं है. आप जागरूक, प्रतिभाशाली और बुद्धिजीवी महिलाओं को ले कर हलकान हैं जिस की वजह आप के जेहन में बसी महिला की वह इमेज है जो धार्मिक जलसों में सिर पर कलश उठाए चलती है. वह घर में आप का विरोध नहीं करती. आप उसे जो दे देते हैं उसे ही भगवान का प्रसाद मान संतुष्ट हो लेती है. वह आप की चाकरी करती रहती है. जब आप की इच्छा होती है, वह बिस्तर पर बिछ जाती है और मारकुटाई भी सहती है. वह करवाचौथ वगैरह का व्रत करती है. कुल जमा वह कठपुतली है जिस की डोर आप की उंगलियों में बंधी है. उसे फैसले लेने का भी हक नहीं है.

दिक्कत तो यह है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार से महिलाओं को शुरू से ही ज्यादा वंचित रखा गया है. पारिवारिक मुद्दों पर उन की राय कोई माने नहीं रखती. इसलिए देश में लोकतंत्र ज्यादा खतरे में है. धर्म ने पुरुषों को सिखा दिया है कि औरत को बोलने की और अपनी मरजी से रहने के साथसाथ किसी भी तरह की आजादी मत दे देना वरना वह तुम्हारी गुलामी छोड़ देगी और अपना अलग वजूद गढ़ लेगी. फिर तुम उस के मालिक नहीं रह जाओगे.

युवा और महिलाएं

बहुत बारीकी व गंभीरता से देखें तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की स्थापना तभी होगी जब महिलाओं को बोलने दिया जाएगा. उन के साथ भेदभाव न किया जा कर तमाम वे अधिकार दिए जाएंगे जिन्हें पुरुषों ने धर्म की आड़ में बलात कब्जा रखा है. वरना जो हो रहा है, वह होता रहेगा और किसान आंदोलन क्या, कोई भी समस्या संतुलित रूप से हल नहीं होगी. बस, उस की शक्लभर बदलती रहेगी. कल को मुमकिन है बेरोजगार युवा भी दिल्ली के बौर्डर्स पर धरना दे कर बैठ जाएं. तब सरकार को उन की और महिलाओं की अहमियत किसानों की तरह समझ आएगी. लेकिन अपनी जिद के चलते वह कहेगी यही कि ये युवा आतंकी व देशद्रोही हैं और आंदोलन के लिए इन्हें विदेशों से पैसा मिल रहा है. ●

14:55
HUMOUR
FAMILY DRAMA
AUDIO
असली नकली
← Back

गृहशोभा सरिता मुक्ता
सरस सलिल सत्यकथा मनोहर कहानियां

पत्रिकाओं की सैकड़ों रोचक कहानियां
पढ़ने के लिए आज ही डाउनलोड करें

Kahani
सरिता
ऐप

रोमांस, क्राइम, फैमिली, रिलेशनशिप व हास्य में से अपनी पसंदीदा विधा चुनने का विकल्प

पसंदीदा कहानियों को औफलाइन सेव करने की सुविधा

प्रतिदिन नई कहानियां व व्यंग्य

सुविधानुसार फौंट साइज कमज्यादा करने की सुविधा

गूगल प्लेस्टोर पर उपलब्ध

DELHI PRESS
MAGAZINES

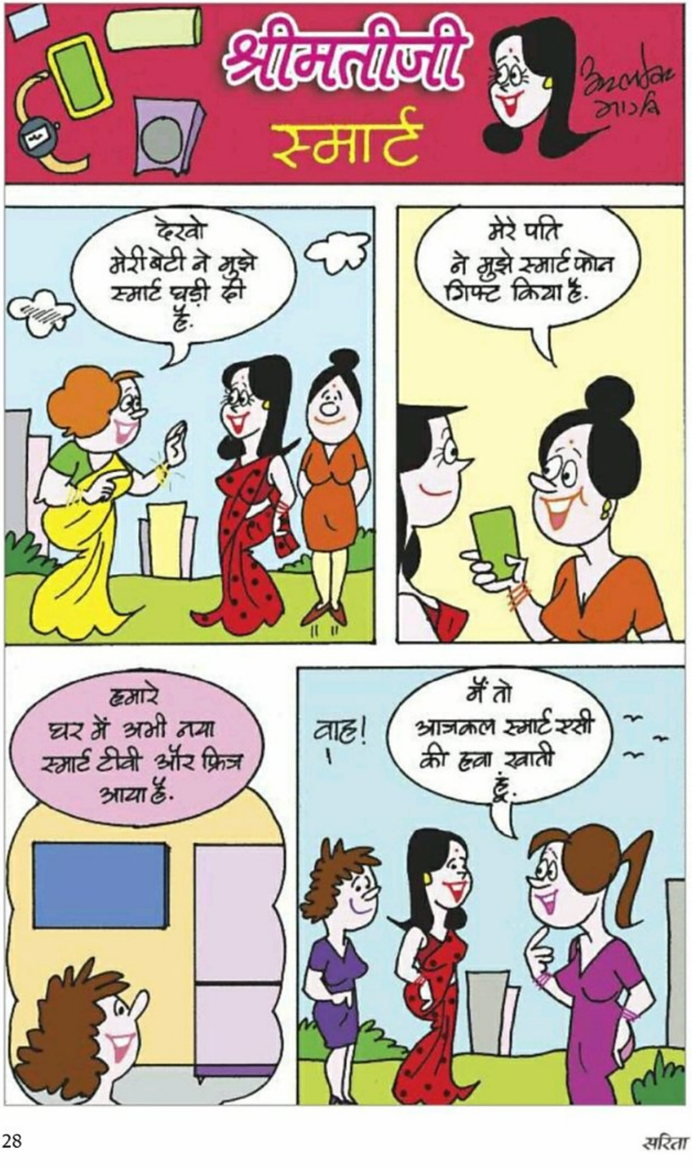
श्रीमतीजी
स्मार्ट
देखो मेरी बेटी ने मुझे स्मार्ट घड़ी दी है.
मेरे पति ने मुझे स्मार्ट फोन गिफ्ट किया है.
हमारे घर में अभी नया स्मार्ट टीवी और फ्रिज आया है.
वाह!
मैं तो आजकल स्मार्ट एसी की हवा खाती हूं.

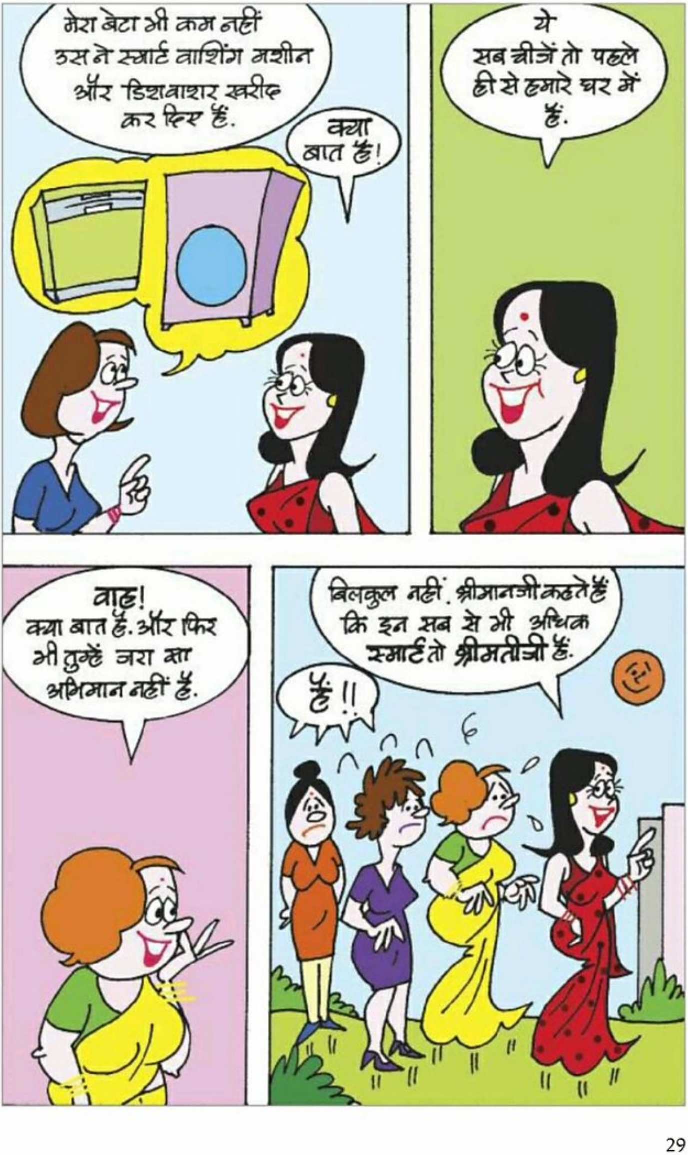
मेरा बेटा भी कम नहीं उस ने स्मार्ट वाशिंग मशीन और डिशवाशर खरीद कर दिए हैं.
क्या बात है!
ये सब चीजें तो पहले ही से हमारे घर में हैं.
वाह! क्या बात है. और फिर भी तुम्हें जरा सा अभिमान नहीं है.
बिलकुल नहीं. श्रीमानजी कहते हैं कि इन सब से भी अधिक स्मार्ट तो श्रीमतीजी हैं.
हैं !!

किसानों को आंदोलनजीवी और परजीवी की नई गालियां

• शैलेंद्र सिंह

नरेंद्र मोदी समर्थकों ने किसान आंदोलन को बदनाम व खत्म करने के लिए आंदोलनरत किसानों को खालिस्तान, चीन, पाकिस्तान समर्थक और न जाने क्याक्या कहा. संसद में प्रधानमंत्री मोदी ने तो अब आंदोलन का उपहास उड़ाते उन किसानों पर 'आंदोलनजीवी' और 'परजीवी' जैसे शब्दों से हमला कर दिया है.

गलत फैसला पहली बार गले की हड्डी बना जिसे नरेंद्र मोदी न निगल पा रहे हैं, न उगल पा रहे हैं.

किसानों की आय दोगुनी करने का वादा करने वाली भाजपा सरकार ने किसानों को पहले 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि' दिया और अब उन को 'परजीवी' बना दिया क्योंकि नरेंद्र मोदी सोचते हैं कि खेती करने के बजाय 5 सौ रुपए महीने की सरकारी सहायता पा कर वे खुश हैं. 'एमएसपी' की नहीं 'किसान सम्मान निधि' की जरूरत अधिक है. हां, किसान परजीवी बना रहेगा तो न केवल सरकार की दुकान चलती रहेगी बल्कि धर्म की दुकानदारी भी चलेगी. किसान 'चढ़ावा' और 'चंदा' देता रहेगा. जिन किसानों को खेती से प्यार है, एमएसपी की चाहत है वे इस को बचाने के लिए जाड़ा, गरमी और बरसात की चिंता छोड़ सरकार के जुल्म ओ सितम की परवा किए बिना दिल्ली की सीमा पर डट कर सरकार का मुकाबला कर रहे हैं.

मैदानी इलाके के लोग खेती को गाली की तरह समझते हैं. वे किसानी से अधिक प्राइवेट नौकरी करना इज्जत की बात समझते हैं. गंगा व यमुना के मैदानी इलाकों में भाईभाई के बीच झगड़े होते रहे हैं. रामायण से ले कर महाभारत तक की घटनाएं इस की गवाह हैं. मेहनत की जगह शतरंज की शकुनी चालों से राजपाट हासिल किया जाता रहा है. पूजापाठ का समर्थन करने वाली ब्राह्मण जातियां यह चाहती हैं कि उन को चढ़ावा मिलता रहे. बनिया वर्ग कर्ज में पैसा दे कर लोगों का शोषण करता है. शोषण से परेशान व्यक्ति पूजापाठ और चढ़ावे के जरिए अपने वर्तमान व भविष्य को चमकाना चाहता है. मैदानी इलाकों की ऊंची जातियों के पास खेती की जमीनें भले ही हों पर वे खेती नहीं करते हैं. थोड़ीबहुत खेती मजदूरों के जरिए जमींदार करते हैं. बड़ी संख्या में जाट, यादव, अहीर और कुर्मी भी खेती

छोड़ते जा रहे हैं. केंद्र सरकार कृषि कानूनों के जरिए किसानों से जमीन छीन कर निजी कंपनियों को देना चाहती है. एक ईस्ट इंडिया कंपनी ने पूरे देश को गुलाम बना कर रखा था. सोचिए, कई कंपनियां आने के बाद देश के किसानों का क्या हाल होगा?

पिछले 20-22 सालों में जाट, यादव, अहीर और कुर्मी खेती छोड़ कर सरकारी नौकरी, नेतागीरी और बिचौलिए बन कर काम करने लगे. इन्होंने खेती करनी छोड़ दी. किसानों के खेतों पर सरकार ने सड़क और शहर बसा कर देश का विकास करना शुरू किया. सरकार के इस विकास का लाभ सरकारी नौकरों और नेताओं ने उठाया. खेती की जमीन के छोटेछोटे हिस्से होने के बाद किसान मजदूर बन कर रह गया. यही वजह है कि अब जब कृषि कानूनों के जरिए खेती में निजीकरण को बढ़ावा दिया गया तो किसानों ने इस का विरोध शुरू किया.

बहुत सारे किसान भले ही किसान आंदोलन में हिस्सा लेने दिल्ली की सीमा पर न गए हों पर केंद्र सरकार की चतुराई व धोखेबाजी को समझ रहे हैं. खेती न करने वाले किसानों के लिए प्राइवेट कंपनियों का जाल भारी पड़ेगा. खेती के इन हालात को समझने का हम ने प्रयास किया. हमें ऐसे किसान से मिल कर हालात को समझना था जिसे सम्मान निधि की नहीं, एमएसपी की जरूरत है.

ग्राउंड जीरो पर हुई बातचीत

9 फरवरी, 2021 को किसान आंदोलन को 75 दिन पूरे हो गए थे. आजादी के बाद देश का यह सब से बड़ा किसान आंदोलन है जो इतने लंबे समय तक चल रहा है. किसान आंदोलन को दबाने के लिए आंदोलनरत किसानों को खालिस्तान, चीन, पाकिस्तान समर्थक बताया गया. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद में किसान आंदोलन का मजाक उड़ाते हुए किसानों को 'आंदोलनजीवी' और 'परजीवी' जैसे शब्दों से बेइज्जत किया. सत्ता, राजनीति, किसान आंदोलनकारियों से दूर हट कर हम ने इस को समझने के लिए उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 90 किलोमीटर दूर सीतापुर के किसान से बात करने का विचार बनाया. हमें ऐसे किसान की तलाश थी जो खेती के प्रति पूरी तरह से समर्पित हो. उसे खेती के विज्ञान की समझ हो और उस ने खुद अपनी मेहनत से कुछ बदलाव किया हो. उसे किसान राजनीति के साथ ही साथ कृषि कानूनों और किसान आंदोलन की समझ हो.

सीतापुर में मौजूद अपने संपर्क सूत्रों के जरिए हमें सरदार स्वर्ण सिंह के बारे में पता चला. हम पहले लखनऊ से सीतापुर पहुंचे. वहां से लखीमपुर बाईपास पर स्वर्ण सिंह के 20 एकड़ वाले खेत पर उन से मुलाकात की. खेत में गेहूं की फसल लहलहा रही थी. सड़क से लगा हुआ उन का खेत है. खेत को आवारा पशुओं और नीलगाय से बचाने के लिए चारों तरफ से ऊंची तारबंदी की गई है. तार को फांद कर जब हम ने खेत में प्रवेश किया तो स्वर्ण सिंह ने हमें रोक दिया और बताया कि खेत में पैर रखने से पौधे टूट सकते हैं. हमें मेढ़ के जरिए खेत में आने को कहा. स्वर्ण सिंह ने बताया, "तारबंदी कराने के कारण किसानों की बड़ी जमापूंजी इस में लग गई है. कई बार चोर किस्म के लोग तार को काट भी ले जाते हैं."

सरदार स्वर्ण सिंह सीतापुर के बनहेटा फार्म पर रहते हैं. यह सीतापुर से

किसान स्वर्ण सिंह सरकार से नाखुशी की कई वजहें गिनाते हैं पर जवाब नहीं मिलता.

लखीमपुर की तरफ जाने वाली सड़क पर लखीमपुर बाईपास के पास है. स्वर्ण सिंह के पास अपनी 10 एकड़ खेती की जमीन है. इस के साथ ही साथ वे 57 एकड़ खेत दूसरे किसानों से बंटाई पर ले कर उस पर भी खेती करते हैं. कई दूसरे गावों में भी अब वे दूसरों के खेत ले कर खेती कर रहे हैं. बंटाई पर खेत लेने का बहुत पुराना चलन है. मौजूदा समय में देखें तो हिंदीबोली वाले प्रदेशों, खासकर उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान, में खेत को बंटाई पर देने का चलन बहुत है. यह धीरेधीरे बढ़ रहा है. यहां की खेतिहर जातियां खेती नहीं करना चाहतीं. बंटाई की खेती को ही कौंट्रैक्ट फार्मिंग भी कहा जाता है.

हरियाणा के कैथल तहसील के रहने वाले स्वर्ण सिंह 1980 में अपने पिता के साथ सीतापुर आए थे. कैथल तहसील अब जिला बन गई है. स्वर्ण जिस समय सीतापुर आए थे उस समय वे कक्षा 4 में पढ़ते थे. सीतापुर आ कर पूरा परिवार यहां रहने लगा. उन के पास खेती की जमीन नहीं थी. धीरेधीरे उन के पिता ने खेतों पर काम कर के अपनी खेती की जमीन ली और जब बच्चे बड़े हुए तो अपनी खेती के साथ ही साथ बंटाई की खेती ले कर भी काम शुरू किया. सरदार स्वर्ण सिंह 57 एकड़ दूसरे लोगों के खेत ले कर खेती करते हैं. खुद के साथ ही साथ मूल किसान को भी नकद रकम देते हैं.

स्वर्ण सिंह कहते हैं, "हम लोग खेती को रोजगार बना कर काम करते हैं. नौकरी हमारी प्राथमिकता में नहीं थी. मेरे छोटे भाई को सिपाही की नौकरी मिली थी पर उस ने नौकरी करने की जगह पर खेती करने का ही विचार बनाया. आज वह खेती का काफी काम करता है."

नारों से नहीं, मेहनत से बढ़ेगी आय

2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने किसानों की आय दोगुनी करने का वादा किया. 2022 तक यह संभव नहीं हो सकता. देश के किसानों की हालत यह है कि वे 6 हजार रुपए सालाना 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि' पा कर खुद को सम्मानित महसूस कर रहे हैं. इस के जरिए 'अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम, दास मलूका कह गए सब के दाता राम' वाली सोच को आगे बढ़ाया गया है. सरकार ने किसानों को 'परजीवी' बना दिया है. वह खुद मेहनत न कर के यह चाहता है कि कोई इस की जमीन ले ले और उन को पैसा दे दे. इस सोच के सहारे किसान कभी तरक्की नहीं कर सकता है.

47 साल के स्वर्ण सिंह 3 भाई हैं. इन के नाम सुखबिंदर सिंह और मुखतार सिंह हैं. घर में सब से बड़े इन के पिता हैं. उन को मिला कर 13 लोगों का परिवार है. स्वर्ण सिंह के 2 बच्चे हैं– एक बेटा और

एक बेटी. दोनों ही सांइस ग्रेजुएट हैं. बेटी बीएससी करने के बाद टीचर के रूप में अपना कैरियर बनाने की दिशा में काम कर रही है. उस ने कई प्रतियोगी परीक्षाएं भी दे रखी हैं. बेटा भी पढ़ाई कर रहा है. स्वर्ण सिंह और उस के दोनों भाई भी पढ़ेलिखे हैं. इन तीनों भाइयों ने कभी नौकरी करने की नहीं सोची.

स्वर्ण सिंह बताते हैं, "हमें खेती से अच्छा और कुछ भी करना अच्छा नहीं लगता. खेती ही हमारी पहचान है. हमारा खेत, बीज और फसल से परिवार के सदस्यों सा संबंध है. हमारे बारे में दूसरे किसान कहते हैं, 'सरदारजी अगर गेहूं के बीज को भून कर भी खेत में छिड़क दें तो अच्छी पैदावार हो जाएगी.'"

2018 में स्वर्ण सिंह की पहचान दीपक गुप्ता नामक व्यक्ति से हुई. जो अपने खेत पर 65 हजार रुपए का घाटा खा चुके थे. सब्जी की खेती में उन को नुकसान हुआ था. परेशान हालत में वे स्वर्ण सिंह से मिले. स्वर्ण सिंह से कहा कि वे यह खेत ले लें और इस पर खेती करें. स्वर्ण सिंह ने कहा ठीक है, जो लाभ होगा उस में आधाआधा बांट लेंगे. दीपक भी तैयार हो गए. खेती से उस साल लाभ हुआ और स्वर्ण सिंह और दीपक के हिस्से में 52-52 हजार रुपए आए.

कहीं भी फसल बेचने की आजादी का भ्रम

कृषि कानूनों का पक्ष रखते हुए केंद्र सरकार बारबार कहती है कि इस से किसानों को देश में कहीं भी अपनी फसल बेचने का अधिकार होगा. इस के बारे में जब हम ने स्वर्ण सिंह का अनुभव पूछा तो उन्होंने बताया कि हम सीतापुर से दूर पीलीभीत धान ले कर गए. हमें जितने बड़े पैसे मिल रहे थे उतने सीतापुर से पीलीभीत तक धान पहुंचाने में खर्च हो गए. जब तक एमएसपी की गारंटी नहीं होगी और प्राइवेट खरीदारों पर भी वह लागू नहीं होगी, फसलों को कम से कम कीमत पर बेचने के लिए मजबूर किया जाएगा.

इलाके में स्वर्ण सिंह की पहचान किसान कम कृषि विज्ञानी के रूप में अधिक होती है. स्वर्ण सिंह पहले सब्जी की खेती भी करते थे. वह बताते हैं, "सब्जी की खेती में मजदूरी अधिक देनी पड़ती है. मजदूरों के मनरेगा और शहरों में मजदूरी करने से मजदूर कम हो गए. सो, महंगे भी हो गए."

मिर्च की खेती में केवल मिर्च की तोड़ाई में ही 2 से 3 रुपए प्रतिकिलो मजदूरी देनी होती है. जबकि टमाटर में 1 से 2 रुपए देना पड़ता है. जिस की वजह से फसल की कीमत बढ़ जाती है. ऐसे में सब्जी की खेती छोड़ कर वे गेहूं और धान की खेती करते हैं. इस में लाभ यह है कि काफी पैदावार एमएसपी कानून के तहत खरीद ली जाती है जिस से लाभ हो जाता है.

स्वर्ण सिंह कहते हैं, "सरकार अगर सब्जी की खेती को बढ़ावा देना चाहती है और किसानों की कमाई को आगे बढ़ाना चाहती है तो मनरेगा के जरिए किसानों को मजदूर दे कर मदद कर सकती है."

मैदानी इलाकों में खूब फलफूल रहा पंजाब मौडल

सरकार और सरकार के समर्थक किसान आंदोलन को ले कर भले ही पंजाब के किसानों को गाली दें पर यहां के

किसानों ने मैदानी इलाकों में खेती की तसवीर को बदल दिया है. केवल स्वर्ण सिंह और उन का परिवार ही नहीं, पंजाब और हरियाणा के रहने वाले तमाम लोग मैदानी इलाकों में खेती कर रहे हैं. इन के पास जितनी अपनी जमीन है उस से कई गुना अधिक जमीन दूसरों की बंटाई पर ले कर खेती कर रहे हैं. सीतापुर, लखीमपुर, पीलीभीत ही नहीं, लखनऊ, रायबरेली जैसे जिलों में भी सरदार खेती कर रहे हैं.

हरियाणा व पंजाब के इन किसानों ने ऊसर और बंजर जमीन को उपजाऊ बना कर मिसाल कायम की है. इन्होंने मैदानी इलाके के किसानों को खेती करने का तरीका सिखाया है. आज मैदानी इलाकों के किसान अपनी घाटे की खेती इन सरदारों के हवाले कर रहे हैं. घाटे की खेती को सरदार लाभ की खेती बना दे रहे हैं. शुरुआती दिनों में मैदानी इलाके के किसान इन के साथ बहुत अच्छे संबंध नहीं रख रहे थे पर धीरेधीरे अब वे इन पंजाब के किसानों से खेती के तरीके सीख रहे हैं.

पीलीभीत के रहने वाले किसान पतविंदर सिंह ने बताया कि तराई के कुछ किसान धान की 2 फसलें लेते हैं. जबकि सामान्य किसान धान की एक फसल ही साल में ले पाते हैं. ये किसान आधुनिक खेती करते हैं, ज्यादा से ज्यादा मशीनों का प्रयोग करते हैं. बहुत सारी मशीनें इन के द्वारा खुद ही बना ली जाती हैं. ये किसान भी बीज और कीटनाशक की दुकानों से उधार चीजें लेते हैं. लेकिन फसल बेचने के बाद पैसा घर में बाद में ले जाते हैं, पहले दुकानदारों का बकाया चुकाते हैं. मैदानी इलाके के किसान बकाया रकम चुकाने में कई साल लगा देते हैं. जिस के कारण कई बार वे कर्जदार बने रहते हैं.

नहीं होगा निजी कंपनियों को नुकसान

सरकार के लोग तर्क दे रहे हैं कि अगर प्राइवेट कंपनियों को एमएसपी पर खरीदने पर बाध्य किया गया तो उन को नुकसान होगा और तब उस की भरपाई नहीं हो पाएगी. यह तर्क सही नहीं है. किसान से खरीद और उपभोक्ताओं तक पहुंचने के बीच मूल्य कई गुना बढ़ जाता है. स्वर्ण सिंह हमें समझाते हुए कहते हैं, ''18 रुपए किलो में किसान से जो धान खरीदा जाता है वह चावल के रूप में उपभोक्ताओं को 35 से 60 रुपए किलो में बेचा जाता है. एमएसपी की कीमत के दोगुने और अधिक पर बेचने से नुकसान कैसे होगा? ये कंपनियां अपने मुनाफे को कम नहीं करना चाहतीं. इस कारण ही वे एमएसपी देने से भाग रही हैं. इसी तरह से गेहूं और दूसरी फसलों के साथ होता है. गेहूं की एमएसपी 19 रुपए प्रतिकिलो है और प्राइवेट कंपनियां आटा 40 रुपए प्रतिकिलो की दर से बेचती हैं.

अपनी फेसबुक और व्हाट्सऐप की डीपी में 'मैं भी टिकैत' लगाने वाले दिलजीत सिंह कहते हैं, "मैं ने अपनी मेहनत से मैदानी इलाकों में खेती का नया कल्चर बनाया है. हमारा खेती का मौडल सभी को पसंद आ रहा है."

सभी किसानों को मिले एमएसपी का लाभ

किसान आंदोलन का जवाब देते हुए ससंद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा,

"एमएसपी न खत्म की गई और न कभी खत्म की जाएगी." इस के बाद भी किसान एमएसपी की गारंटी चाहते हैं. वे उस को कानूनी दर्जा देने की मांग कर रहे हैं. एमएसपी (मिनिमम सपोर्ट प्राइज) यानी न्यूनतम समर्थन मूल्य किसानों के लिए बेहद जरूरी है. केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर कहते हैं, "किसान यह नहीं बताते कि कृषि कानूनों में काला क्या है?" केंद्रीय कृषि मंत्री को पता नहीं है कि हर किसान अपना भला समझ रहा है. हम ने स्वर्ण सिंह से पूछा कि एमएसपी की गारंटी किसान क्यों मांग रहे हैं, इस की क्या उपयोगिता है? किसानों को सरकार की बात पर भरोसा क्यों नहीं है? देश में हर चीज के दाम उत्पादक तय करता है तो खेती से होने वाली पैदावार का दाम खरीदार क्यों तय करे?

एमएसपी पर सरकार के दोहरे रवैए से असमंजस में हैं किसान.

हमारे इन सवालों के जवाब में स्वर्ण सिंह ने अपना उदाहरण देते कहा कि अगर किसान की आय दोगुनी करनी है तो एमएसपी की गारंटी देनी होगी. सरकारी खरीद के साथ ही साथ प्राइवेट खरीदारों पर भी यह लागू किया जाए. एमएसपी से कम मूल्य पर खरीद को अपराध घोषित किया जाए. जब सरकारी और प्राइवेट दोनों तरह की खरीद एमएसपी पर होगी तो मनमानी नहीं हो पाएगी. ऐसे में जरूरी है कि सरकार मंडियों की व्यवस्था को भी मजबूत करे. जब तक प्राइवेट खरीदारी में एमएसपी लागू नहीं होगी तब तक सरकारी खरीद में किसानों को बेचने में काफी दिक्कत आती रहेगी.

सरकारी खरीद में मनमानी की जाती है. सरकारी खरीद के पहले नई उपजी फसलों धान और गेहूं के मानक को देखा जाता है. धान के मामले में केवल धान की नहीं, धान की कुटाई के बाद चावल भी देखा जाता है कि कितना चावल निकला और कितना चावल टूट गया. अगर चावल कम निकलता है या ज्यादा टूट जाता है तो उस की खरीदारी नहीं की जाती है.

धान के लिए सरकारी खरीद सामान्य ग्रेड के लिए 1,868 रुपए और ए ग्रेड के लिए 1,888 रुपए प्रति क्विंटल है. प्राइवेट खरीद इसी धान को 1,200 से 1,300 रुपए प्रति क्विंटल की दर से होती है. ऐसे में 500 रुपए के करीब प्रति क्विंटल दोनों के बीच फर्क आता है. स्वर्ण सिंह कहते हैं, "जब किसान प्राइवेट खरीदार को बेचता है तो उसे लागत से कम कीमत मिलती है. ऐसे में उस को नुकसान होता है. जब सरकारी खरीद यानी एमएसपी पर खरीदारी होती है तो किसान को बचत हो जाती है. इसी वजह से किसान अब एमएसपी की गारंटी चाहता है. एमएसपी केवल कुछ किसानों तक ही सीमित न रह सके, इस के लिए एमएसपी से कम की खरीद को अपराध घोषित किया जाए." ●

मनोहर कहानियां

मनोहर कहानियां पर आधारित
क्राइम, थ्रिलर, हॉरर
की अनोखी पेशकश अब TATA sky अद्भुत कहानियां पर

Tune in to 144

आपराधिक घटनाओं की सत्य और ताजा रिपोर्टिंग

पुलिस अधिकारियों से बातचीत पर आधारित

पैसा, प्रेम, सैक्स, धोखा, छलफरेब, प्रपंच का परदाफाश

अपराधों के बारे में जानिए और सतर्क रहिए

खरीदें
बुक स्टाल से
हर महीने **10** तारीख
तक नया अंक
उपलब्ध

साथी असली HEROES का
अपराधों को जानिए, सुरक्षित रहिए
मनोहर

हर माह कथा रूप
में नई कहानियां
नए तेवर और कलेवर
के साथ

केवल Rs 500 में वार्षिक ग्राहक
बने और प्रतिमाह रजिस्टर्ड डाक से पाएं
अपनी मनपसंद पत्रिका मनोहर कहानियां
Subscription@delhipress.in

To subscribe call toll free at: 1800 103 8880, Landline 011-41398888, Ext. 119/221/264 (Monday to Saturday 10.00 to am to 6.00 pm)
For subscribing online, kindly visit www.delhipress.in/subscribe

साथ ही पढ़िए सत्यकथा हर महीने

DELHI PRESS MAGAZINES

33 Magazines | 10 languages | 2.2 Crore Readers

For subscription SMS / WhatsApp to 8588843408

समाज

दूसरी शादी से डर क्यों

• नसीम अंसारी कोचर

भारतीय मानव विकास सर्वेक्षण के मुताबिक देश में विधवा, अपने पति से अलग रह रहीं और तलाकशुदा महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में अधिक है. आयु के तमाम वर्गों में ऐसी महिलाओं की अधिक संख्या यह इशारा करती है कि भारत में पुरुषों के मुकाबले महिलाएं दूसरी शादी कम कर रही हैं.

हम अपने आसपड़ोस में नजर दौड़ाएं तो पाएंगे कि कितने ही लोग हैं जिन्होंने किसी न किसी कारणवश अपने जीवनसाथी का साथ छूटने के बाद दूसरी या तीसरी शादी की है. बहुतेरे ऐसे भी मिलेंगे जो पहले साथी की जुदाई के बाद से अभी तक अकेले हैं और दूसरी शादी की उन्हें कोई चाह नहीं है. बहुतेरे ऐसे लोग भी हैं जो दूसरी शादी करना तो चाहते हैं, लेकिन पहली शादी के कड़वे अनुभवों के चलते आशंकित हैं और हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं. बहुत से लोग ऐसे हैं जिन के पास पहली शादी से बच्चे हैं और इस कारण वे दूसरी शादी की चाह रखते हुए भी अकेले जिए जा रहे हैं.

इस के अलावा भी तमाम वजहें हैं जो मध्यवर्गीय लोगों को दूसरी शादी से डराती हैं. लोग क्या कहेंगे, फिर वही झगड़ेझमेले होने लगे तो क्या होगा, आर्थिक निर्भरता, स्वतंत्रता, धर्म की बंदिशें आदि बहुतेरे कारण हैं जो इंसान को दूसरी शादी से रोकते हैं, खासकर महिलाओं को.

भारतीय मध्यवर्गीय समाज में एक बात और गौर करने लायक है. यहां 10 तलाकशुदा पुरुषों में से औसतन 7 पुरुष दूसरी शादी कर लेते हैं, लेकिन 10 तलाकशुदा महिलाओं में से मात्र 2 या 3 महिलाएं ही पुनर्विवाह करती हैं. अधिकांश महिलाएं दूसरी शादी से डरती हैं और अकेले अथवा मायके में मातापिता, भाई वगैरह के साथ रहने में ही खुद को सुरक्षित पाती हैं. यह भी देखा गया है कि तलाक होने या पति की मृत्यु हो जाने पर जो महिलाएं किसी नौकरी या व्यवसाय से जुड़ कर आत्मनिर्भर हो जाती हैं, वे फिर शादी करने की इच्छुक नहीं रहतीं. जबकि अधिकांश पुरुष, चाहे कामकाजी हों या बेरोजगार, 2 या 3 साल से ज्यादा अकेले नहीं रहते. वे जल्दी ही दूसरा विवाह कर पुरानी यादों को भुला देते हैं.

कई महिलाएं जिन्होंने ससुराल में प्रताड़ना का दंश झेला है, तलाक लेने के बाद दोबारा शादी नहीं करना चाहतीं. उन्हें भय होता है कि कहीं जीवन में दोबारा वही सब न झेलना पड़ जाए. जिन महिलाओं के साथ बच्चे होते हैं वे इस डर से दूसरी शादी नहीं करतीं कि पता नहीं दूसरा पति उन के बच्चों को एक पिता के समान प्यार और अपनापन दे पाएगा अथवा नहीं. या कि बच्चे नए व्यक्ति को पिता मान कर उस के साथ एडजस्ट कर पाएंगे या नहीं.

भारतीय समाज में धर्म इंसान को स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जीने में सब से बड़ा बाधक है. खासतौर पर महिलाओं के पैरों में तो धर्म ने इतनी बेड़ियां डाल रखी हैं कि वे सारी जिंदगी न तो खुद फैसले ले पाती हैं और न ही जीवन को पूर्णता में जी

पाती हैं. पहली शादी के कटु अनुभवों से गुजर कर अगर कोई महिला दूसरी शादी करना भी चाहे तो फिर वही सवाल सामने आ खड़े होते हैं कि अपनी बिरादरी में, अपने धर्म, अपनी जाति का, अपने सामाजिक स्तर का कोई लड़का मिले तभी शादी करना. इस खोज में ही लड़की की पूरी जवानी गुजर जाती है. अगर गैरधर्म, जाति का कोई युवक उस को अपनी जीवनसंगिनी बनाने को तैयार भी हो जाए या उस को किसी से प्यार हो जाए और वह उस से शादी करना चाहे तो समाज उस के पैरों में धर्म की बेड़ियां डाल देता है और वह मन मार कर रह जाती है.

भारतीय समाज में तलाक होने पर घरपरिवार और समाज इस के लिए न सिर्फ लड़की को दोषी मानता है, बल्कि उसे दूसरी शादी करने के लिए हतोत्साहित भी करता है. लोग उस को उलाहना देते हैं कि इस का तो समय ही खराब है, इस के तो लक्षण ही खराब हैं, संस्कार तो कुछ हैं ही नहीं, पति को छोड़ आई कुछ तो कमी रही होगी तभी ससुराल में एडजस्ट नहीं हो पाई, किसी गैरमर्द से चक्कर रहा होगा, अब इस से कौन शादी करेगा, दूसरे का जूठा कोई क्यों खाएगा आदिआदि. लेकिन पुरुष अगर तलाक लेता है तो उस को इस प्रकार के तानोंउलाहनों का सामना नहीं करना पड़ता.

उस के हमदर्द उस को यही समझाते हैं कि अच्छा हुआ उस औरत से तलाक ले लिया, रोजरोज की झिकझिक से अच्छा है अलग हो जाना, कितनी लड़ाकी थी, न गुण न संस्कार, कैसे पटपट जवाब देती थी, बड़ों की इज्जत तक नहीं करती थी, अच्छा हुआ उस से पीछा छूटा, उस से अच्छी तमाम लड़कियां पड़ी हैं, दूसरी शादी करो और मौज से रहो. पुरुषों को भारतीय समाज में दूसरी या तीसरी शादी के लिए उकसाया जाता है और दूसरी शादी भी किसी कुंआरी से करने पर ही अधिक जोर दिया जाता है. यही वजह है कि पुरुषों के लिए तलाक के बाद दूसरी शादी करना बहुत सहज होता है, लेकिन महिलाओं के लिए नहीं.

क्या है विदेशी सोच

अब आइए बात करते हैं दूसरी शादी के संबंध में विदेशी सोच की. विदेशों में दूसरी शादी को ले कर ज्यादा 'अगरमगर', 'क्योंकैसे', धर्मजाति, रंग, नस्ल, उम्र और बच्चों के साथ एडजस्टमैंट जैसे सवाल नहीं हैं. एक साथी छूटा तो लोग तुरंत अपना अकेलापन दूर करने के लिए दूसरा साथी तलाश लेते हैं. पुनर्विवाह के मामले में विदेशों में स्त्री और पुरुष दोनों की संख्या लगभग समान है.

इस की मुख्य वजह है स्त्री का पढ़ालिखा होना, आत्मनिर्भर होना, आर्थिकरूप से सबल होना और अपने जीवन के फैसले खुद करना. वे अपने जीवन संबंधी निर्णयों के लिए आजाद हैं. बच्चे माता या पिता की दूसरी शादी में बाधा नहीं बनते हैं. परिवार और समाज ऐसी शादियों को हेयदृष्टि से नहीं देखता है, पुनर्विवाह या प्रेम की राह में धर्म भी रोड़ा नहीं अटकाता है. विदेशों में तो बुढ़ापे में भी दूसरी शादी कर जिंदगी को भरपूर जीने की ललक देखी जाती है जबकि हमारे यहां 50 पार हुए नहीं कि पूजापाठ, तीर्थयात्रा, रोजानमाज, हज आदि की तरफ इंसान को धकेल कर समझा दिया जाता है कि जिंदगी के माने तुम्हारे लिए खत्म हो गए और अब बस, ईश्वर में ध्यान लगाओ और अपना परलोक सुधारो.

विदेशों में महिलाएं और पुरुष दोनों शिक्षित और आत्मनिर्भर हैं. ऐसे में यदि उन को लगता है कि उन की आपस में नहीं बन रही है तो वे ऐसी शादी के बोझ को ढोते नहीं हैं. वे तुरंत तलाक ले कर अपनी पसंद के साथी से पुनर्विवाह कर लेते हैं. उन के फैसले की राह में धर्म, समाज, परिवार, बच्चों की ओर से कोई रुकावट नहीं आती है.

भारत में उच्चवर्गीय परिवारों और बौलीवुड में ऐसा चलन देखा जाता है क्योंकि वहां स्त्रीपुरुष शिक्षित और आर्थिकरूप से मजबूत हैं. मगर मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय लोग खोखले संस्कारों, खोखली इज्जत, खोखले रिवाजों और धर्म के चाबुक खाखा कर जीवनभर अकेलेपन के दर्द में कराहते रहते हैं.

दूसरे पति से भी न बनी तो

दिल्ली के लाजपतनगर इलाके की सैंट्रल मार्केट की निवासी नैना भसीन का तलाक हुए 7 साल हो चुके हैं. नैना मायके में मां और भाई के साथ रहती है और अपना ब्यूटीपार्लर चलाती है. नैना हमेशा से अपना व्यवसाय करना चाहती थी. घर के कामों में उन को कोई खास दिलचस्पी नहीं थी. ससुराल में बूढ़े साससमुर थे, जिन की देखभाल के लिए किसी को हर वक्त घर पर रहना होता था. नैना के पति चाहते थे कि वह घर के कामों पर ध्यान दे और उन के मातापिता का खयाल रखे, लेकिन नैना का बहुत सारा वक्त घूमने और सहेलियों के साथ गुजरता था. वह स्वतंत्र प्रवृत्ति की महिला है. घर में दिनभर बंद रहने पर उस को घुटन होती थी.

शादी के 2 साल भी पूरे नहीं हुए कि नैना का रिश्ता तलाक के मुहाने पर पहुंच गया. अब तलाक हुए भी 7 साल बीत चुके हैं. इस बीच उस के भाई और मां ने उस के लिए कई रिश्ते देखे, लेकिन नैना दूसरी शादी के लिए खुद को तैयार नहीं कर पा रही है. उस के भीतर एक डर है कि कहीं दूसरा पति भी उस की काम करने की ललक को न समझ सका और उस से भी उस की न बनी तो क्या होगा?

वह चाहती है कि कोई ऐसा व्यक्ति मिले जो उस के काम करने की राह में रुकावट न बने और उस से घर में रहने को न कहे. लेकिन ऐसा पुरुष कहां मिलता है जो पत्नी पर घर और बच्चों का

पुरुष तलाक के बाद या पत्नी के न रहने पर दूसरी शादी के लिए उतावलापन दिखा देता है लेकिन औरतों के लिए यह सब मुश्किल है.

COMPANIES ACT
INDIAN PENAL CODE

बोझ न डाले. इसलिए नैना दोबारा रिस्क नहीं लेना चाहती. जबकि नैना की मां को चिंता है कि उन के बाद नैना पहाड़ सा जीवन अकेले कैसे काटेगी. भाई की शादी होने के बाद भाभी के साथ कैसे एडजस्ट करेगी?

इस के विपरीत नैना के पति ने तलाक लेने के एक साल के भीतर ही धूमधाम से दूसरा विवाह कर लिया और अब उस के पास 2 बच्चे भी हैं.

बच्चे को अपनापन न मिला तो

कीर्तिनगर, दिल्ली में रहने वाली अलका कपूर के पति का 2 साल पहले कैंसर के कारण निधन हो गया था. अलका के पास 6 साल का बेटा है. ससुराल वालों ने उस के पति के रहते ही उस से नाता तोड़ लिया था. दरअसल, वे बेटे के कैंसर का भारीभरकम खर्च नहीं उठाना चाहते थे. अलका के पिता ने उस के पति के इलाज का खर्च उठाया और उन को अपने निवास स्थान के पास ही किराए के मकान में रखा.

पति की मौत के बाद अलका और उस के नन्हे बेटे का खर्च भी उस के पिता ही उठा रहे हैं. वे चाहते हैं कि अलका दूसरी शादी कर ले, मगर अलका को यह डर है कि दूसरे पति ने अगर उस के बेटे को प्यार न दिया तो वह बरदाश्त न कर पाएगी. इस के अलावा वह अब दोबारा मां बनने की भी इच्छुक नहीं है. इसलिए अकेलापन काटने के बावजूद दूसरी शादी की बात पर अकसर उस की अपने पिता से बहस हो जाती है.

बच्चे तैयार नहीं होंगे

जमरूदपुर की रेखा का एक टैक्सी ड्राइवर से कई सालों से संबंध है. रेखा विधवा है. आसपास के घरों में मेड का काम करती है. पहले पति से उस के पास 2 बेटियां हैं. एक बेटी 10 साल की और दूसरी 14 साल की. बेटियां स्कूल में होती हैं तो रेखा अपने प्रेमी को घर बुला लेती है. कभीकभी वह उस के साथ काम के बहाने से बाहर भी जाती है. वह रेखा को पसंद करता है, उस से शादी करना चाहता है. वह बेटियों की जिम्मेदारी भी उठाने को तैयार है. मगर रेखा शादी नहीं करना चाहती. वह उस से कहती है कि ऐसे ही चलने दो, जब तक चले.

दरअसल, रेखा जानती है कि उस की दोनों बेटियों को उस की दूसरी शादी पसंद नहीं आएगी. वे दोनों अब भी अपने पिता को याद करती हैं और रोती हैं. वे अपने पिता की जगह किसी दूसरे पुरुष को हरगिज नहीं देंगी. रेखा कहती है, "मैं अपने महल्ले में किसी आदमी से दो मिनट बात कर लूं, तो दोनों को नागवार गुजरता है, दोनों मुझ से लड़ती हैं. मैं ने शादी कर ली तो वे मेरी शक्ल भी न देखेंगी. जबकि मैं उसे बहुत चाहती हूं, उस से शादी भी करना चाहती हूं. मगर बेटियों को मना पाना बहुत मुश्किल है. वे उस को बाप का दर्जा देने के लिए राजी नहीं होंगी."

हम आजाद ही ठीक हैं

रूपल मेहता और उन की बहन डिंपल दोनों का तलाक हो चुका है. दोनों बीते 15 सालों से अपनी मां के साथ रह रही हैं. रूपल जहां एक अच्छी पेंटर है वहीं एक मल्टीनैशनल कंपनी में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत भी है. उस की बहन डिंपल कौमर्स की टीचर है और एक अच्छे कालेज में कार्यरत है. दोनों अच्छा कमाती हैं. खुल कर खर्च करती हैं. आजाद पंछी की तरह उड़तीफिरती हैं.

रूपल कहती है, "शादी ने मानो जकड़ दिया था. यह न करो, वहां न जाओ, दिन में मत सो, यह मत खाओ, यह मत पहनो... हर चीज पर सास का हुक्म चलता था. पति भी उसी के इशारे पर नाचता था. वहां मैं जैसे गुलाम हो गई थी. इसलिए तलाक ले लिया. दूसरी शादी नहीं करनी है. सारे पुरुष एकजैसे ही होते हैं. हम जैसों के लिए ससुराल जेल है. हम आजाद ही ठीक हैं."

मेरी कमाई मेरी तो है

वहीं डिंपल ने अपनी ससुराल में अलग तरह की परेशानी झेली है. डिंपल शादी से पहले से ही कालेज में पढ़ा रही थी. शादी से पहले उस की पूरी तनख्वाह पर उस का हक था. मां को पिता की पैंशन मिलती थी और बहन का अपना काम था. उस का नौकरीपेशा होना उस की ससुराल वालों को खूब पसंद आया था. शादी के बाद जब उस के पति ने उस से कहा कि उस को अपनी हर महीने की कमाई सास के हाथ में रखनी होगी जैसा कि वह भी करता है तो डिंपल को धक्का लगा. कुछ महीने तक तो वह ऐसा करती रही, फिर उस ने पाया कि हर छोटीछोटी जरूरत के लिए उस को सास के आगे हाथ फैलाना पड़ता है. कोई सामान ले कर आओ तो पहले सास को पूरा हिसाब दो. उस पर दोचार बातें भी सुनो. कुछ समय बाद उस ने सैलरी सास को देनी बंद कर दी. पूछा गया तो कह दिया कि घरखर्च में कमी हो तो मांग लिया करें. सैलरी मैं ने अपने बैंक अकाउंट में जमा कर दी है. फिर क्या था, घर में बवाल मच गया.

पहली शादी में तलाक की जो वजहें बनी थीं वही सब दूसरी शादी में भी सामने आ जाएं, यही डर औरत को दूसरी शादी के लिए न करने की वजह बनता है.

पहले उस को घर के संस्कार और नियम समझाने की कोशिशें हुईं. फिर पति ने मुंह फुलाना और बातबात पर नाराज होने का नाटक शुरू कर दिया. आएदिन झगड़े होने लगे. सास और देवर ने बात करनी छोड़ दी. कई बार वह कालेज से घर लौटती तो किचन में उस के हिस्से का लंच ही न होता. कभीकभी वह नाश्ता किए बिना ही कालेज चली जाती क्योंकि सुबहसुबह किचन में सास घुसी रहती थी. पानी सिर से ऊपर जाने लगा तो तंग आ कर डिंपल अपने मायके आ गई और वकील से तलाक का नोटिस भिजवा दिया.

तलाक ले कर डिंपल खुश है, कहती है, "मेरी मेहनत की कमाई पर मेरा हक है. कोई और मेरा पैसा कैसे खर्च कर सकता है? वहां तो मैं बिन पैसे की नौकरानी बनी हुई थी. जो घर में भी काम करे और बाहर से भी कमा कर लाए. लेकिन फिर भी भिखारियों की तरह एकएक चीज के लिए दूसरे के सामने हाथ फैलाए."

दूसरी शादी के नाम पर डिंपल भी मुंह बिचका लेती है, कहती है, "हम दोनों बहनें ऐसे ही खुश हैं. दोबारा ऐसा झंझट मोल नहीं लेना है."

धर्म अटकाता है रोड़ा

संध्या की उम्र 40 के पास पहुंच रही है. तलाक हुए 10 साल हो गए. दूसरी शादी कर के सैटल होना चाहती थी, लेकिन धर्म और जाति के दायरे में आने वाले वर की तलाश में उस के मातापिता ने उस की पूरी जवानी खराब कर दी. संध्या के लिए शादी की शर्त बस, इतनी थी कि कोई उस के जितना पढ़ालिखा और नौकरीपेशा व्यक्ति मिल जाए. लेकिन उस के मातापिता और परिवार के अन्य लोगों को संध्या की शर्तों के साथसाथ एक पक्का शाकाहारी, धनी, धार्मिक तेलुगू ब्राह्मण ही चाहिए था. ऐसा लड़का ढूंढ़तेढूंढ़ते 10 साल निकल गए हैं.

कई लड़के थे संध्या के कार्यक्षेत्र में, जो उस से शादी करने के इच्छुक थे लेकिन किसी गैरधार्मिक व्यक्ति से विवाह कर के वह बूढ़े मांबाप का दिल नहीं दुखाना चाहती थी. अब इतने सालों में तो उस की शादी की इच्छा ही दम तोड़ चुकी है. वह बस, अपनी नौकरी के सहारे एकाकी जीवन काट रही है.

समाज का दोमुंहापन

भारत में किसी भी महिला की दूसरी शादी, शायद ही कभी धूमधाम से उस तरह होती है जिस के लिए भारत मशहूर है. लड़की का दूसरा ब्याह तो हमेशा ही चुपचाप, गिनेचुने लोगों की मौजूदगी में हो जाता है. आप ने यह कहावत तो सुनी ही होगी कि जिंदगी में शादी तो बस एक बार होती है. यह कहावत भारत में सिर्फ लड़कियों पर लागू होती है.

तेलुगू पार्श्व गायिका और डबिंग कलाकार सुनीता उपाद्रष्टा ने हाल ही में अपने करीबी दोस्त राम वीरप्पनन के साथ दूसरी शादी की है. वीरप्पनन एक बिजनैसमैन हैं. शादी के दिन सुनीता ने बस इतनी सी तैयारी की थी कि अपने बालों में फूल लगाए थे और लाल रंग का ब्लाउज पहन लिया था.

करीब 42 बरस की उम्र में सुनीता की दूसरी शादी करने की खुशी बहुत से लोगों ने मनाई, पर कुछ लोगों ने इस का विरोध भी किया था. सुनीता ने 19 बरस की उम्र में टीवी प्रोड्यूसर किरण कुमार गोपारागा से पहला विवाह किया था, लेकिन दोनों के बीच तलाक हो गया था. दूसरी शादी के मौके पर खींची गई तसवीरों में सुनीता के साथ उन के 2 बच्चे (बेटा आकाश और बेटी श्रेया) भी बगल में खड़े दिखाई देते हैं.

दोनों बच्चे सुनीता की पहली शादी से हैं. सोशल मीडिया पर शेयर की गई ये तसवीरें किसी भी सामान्य शादी जैसी हैं, लेकिन ये उस समाज के खिलाफ बगावत का ऐलान करती मालूम होती हैं, जहां मर्दों से कहीं कम औरतें दूसरी शादी करती हैं.

यह कोई नई बहस नहीं है. लेकिन जब भी कोई महिला दूसरी शादी करती है, जिंदगी में दूसरी पारी की शुरुआत का जश्न मनाना चाहती है तो समाज उस का साथ नहीं देता. समाज का यह दोमुंहापन लड़कियों को दूसरी शादी के प्रति हतोत्साहित करता है, उन के भीतर भय उत्पन्न करता है.

क्या कहते हैं आंकड़े

2016 के भारतीय मानव विकास

तलाकशुदा महिला या विधवा के लिए दूसरा साथी तलाश पाना बेहद मुश्किल होता है, ऊपर से समाज और अपनों के दबाव का भी सामना करना पड़ता है.

सर्वेक्षण के मुताबिक, देश में विधवा, अपने पति से अलग रह रहीं और तलाकशुदा महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में अधिक है. आयु के तमाम वर्गों में ऐसी महिलाओं की अधिक संख्या यह इशारा करती है कि भारत में पुरुषों के मुकाबले महिलाएं दूसरी शादी कम कर रही हैं.

2019 में प्रकाशित संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट कहती है कि पिछले 2 दशकों के दौरान भारत में तलाक के मामले दोगुने हो गए हैं. इस रिपोर्ट के अनुसार, शिक्षित और आर्थिकरूप से स्वतंत्र महिलाओं के बीच तलाक के मामले काफी अधिक बढ़ गए हैं. लेकिन इस मुकाबले में महिलाओं की दूसरी शादी का आंकड़ा बहुत कम है.

हमारा समाज बड़ा पोंगापंथी और महिलाविरोधी है. किसी भी महिला के लिए दूसरी शादी कर के अपनी जिंदगी को नए सिरे से शुरू कर पाना बेहद मुश्किल होता है. शादियों को ले कर समाज में कई निरर्थक बातें प्रचलन में हैं, जैसे जोड़ियां तो ऊपर से बन कर आती हैं, जन्नत में बनी जोड़ी तोड़ना गुनाह है, पति तो परमेश्वर है आदिआदि. ऐसे में एक परमेश्वर को छोड़ कर दूसरा ढूंढ़ने में हिचकिचाहट होती है. जब भी बात दूसरी शादी करने की आती है तो किसी तलाकशुदा महिला या विधवा के लिए दूसरा साथी तलाश पाना बेहद मुश्किल होता है, ऊपर से उन्हें समाज के दबाव का भी सामना करना पड़ता है.

पिछले कुछ वर्षों के दौरान तलाकशुदा महिलाओं की मदद करने वाले कई समूह बने हैं. बहुत सी मैट्रिमोनियल वैबसाइटों पर अब दूसरी शादी के विकल्प उपलब्ध कराए जा रहे हैं. इस के अलावा विवाहेतर संबंधों के लिए भी तमाम डेटिंग साइट्स खुल गई हैं. भारत में इन का धंधा बहुत तेजी से बढ़ रहा है.

फ्रांस में विकसित किए गए विवाहेतर संबंधों के डेटिंग ऐप ग्लीडीन का कहना है कि कोविड-19 महामारी के दौरान भारत में उस के सब्सक्राइबर्स की संख्या 13 लाख को पार कर गई है. ग्लीडीन का यह भी कहना है कि पिछले 3 महीने में तो उस के सब्सक्राइबर्स की संख्या में जबरदस्त इजाफा हुआ है.

ग्लीडीन के मुताबिक, पिछले साल सितंबर, अक्तूबर और नवंबर महीनों में भारत में इस के सब्सक्राइबर्स की संख्या जून, जुलाई और अगस्त की तुलना में लगभग 246 प्रतिशत बढ़ गई है. हालांकि इस में चीटिंग ज्यादा हो रही है.

लड़कियों के अकेलेपन, भावुकता, जल्दी ही नया साथी पा लेने की हड़बड़ी को अपराधी मानसिकता के लोग भुनाने में लगे हैं. औनलाइन डेटिंग साइट्स पर इमोशनल और आर्थिक चोट पहुंचाने के केस आएदिन साइबर क्राइम सैल में दर्ज होते हैं. लेकिन विदेशों में यह गंदगी नहीं है.

ज्योति प्रभु 70 के दशक में जब अपने भाई से मिलने न्यूयौर्क गई थीं तो एक खिलंदड़ी किशोरी ही थीं, जिस के लिए दुनिया किसी अजूबे से कम न थी. न्यूयौर्क में ही उन की मुलाकात अपने भावी पति से हुई. वे कहती हैं कि शादी के बाद हमारे यहां 2 खूबसूरत बेटियां हुईं, जिन्हें हम ने अच्छे से पालापोसा. लेकिन लगभग 3 दशक की खुशहाल शादीशुदा जिंदगी के बाद उन के पति की मौत दिल का दौरा पड़ने से हो गई. वे 50-55 बरस के रहे होंगे, जब उन की मौत हुई.

ज्योति प्रभु बताती हैं, "मैं ने करीब 6 साल विधवा के रूप में बिताए. अकेलापन मुझे कचोटता था, तनहाईभरी शामों की खामोशियां कानों में गूंजती थीं, मन गहरे अवसाद में था, किताबों में भी दिल नहीं लगता था. कुछ परिचितों ने मुझे एक विधुर व्यक्ति से मिलने का सुझाव दिया तो मैं राजी हो गई."

उस वक्त ज्योति अपने पैरों पर खड़ी थी. उन्हें पैसों की कोई कमी नहीं थी. बस, एक साथी की कमी उन्हें बहुत खल रही थी.

ज्योति आगे कहती हैं, "मुझे डिनर के लिए, शो देखने के लिए, घूमनेफिरने और सफर के लिए एक साथी की जरूरत थी. तो हम ने अपनी जिंदगी के बाकी दिन एकदूसरे के साथ बिताने का फैसला किया. हम साथ मिल कर खूब मस्ती करते थे. उन के दोनों बेटे और मेरी 2 बेटियां बड़े हो गए थे.

वे अपनीअपनी जिंदगियों में व्यस्त थे और अलग रहते थे. इसीलिए हमारे पास एकदूसरे को तवज्जुह देने के लिए पर्याप्त समय था. लेकिन अगर मैं भारत में रह रही होती तो दूसरा साथी पाना मुश्किल था. यहां तो बच्चे ताउम्र साथ ही चिपके रहते हैं और मांबाप को दूसरी शादी की इजाजत ही नहीं देते. उन को लगता है कि बुढ़ापे में मां शादी करेंगी, तो समाज उन पर थूकेगा."

हालांकि आर्थिक आजादी के चलते भारत में भी हालात बदल रहे हैं लेकिन इस की रफ्तार बहुत धीमी है. इस का एक पहलू भारत में विरासत के अधिकार का भी है. दूसरी शादी का मतलब, परिवार की संपत्ति का भी हस्तांतरण होना है. बहुत से लोगों को यह मंजूर नहीं होता है.

बात अधिकारों की

भारतीय कानूनों के मुताबिक, तलाक या अलग होने पर पत्नी के आर्थिक अधिकार बेहद सीमित हैं. वह अपने पति से बस गुजाराभत्ता लेने का दावा कर सकती है. यही नहीं, भारत में ज्यादातर शादियां और तलाक के मामले तमाम धर्मों के पर्सनल लौ के हिसाब से तय होते हैं, जिन में महिलाओं के अधिकार बहुत ही सीमित हैं.

तलाक के बाद वे आर्थिकरूप से बदतर हालत में आ जाती हैं और दूसरों पर आश्रित हो जाती हैं. इस वजह से वे जिंदगी अपने आश्रयदाता के घर में एक नौकरानी के तौर पर बिता देती हैं और दूसरी शादी की इच्छा होने पर भी उस इच्छा को व्यक्त नहीं कर पातीं.

जिन महिलाओं के सामने आर्थिक समस्या नहीं है और जो दोबारा शादी करने के फैसले ले रही हैं उन के फैसलों पर भी सामाजिक व पारिवारिक दबाव भारी पड़ जाते हैं. मैट्रिमोनियल वैबसाइट के आंकड़े बताते हैं कि इन के लगभग 70 प्रतिशत यूजर मर्द ही होते हैं जो कुंआरी लड़कियों में ही ज्यादा इंटरैस्ट लेते हैं. यहां भी तलाकशुदा या एकाकी महिलाओं के लिए संभावनाएं बहुत सीमित हैं. ●

दिल्ली प्रैस

तथ्य, तर्क,
तकनीक, विज्ञान

ये आपके सुखद, स्वस्थ जीवन
के लिए आवश्यक हैं

धर्म, पाखंड, अंधविश्वास,
जाति और रंग को
फिर से हावी न होने दें

सरिता गृहशोभा
सरस सलिल चंपक

सदा से जागरूकों की पत्रिका

भारत भूमि युगे युगे

हम तो खुद रत्न हैं

भारतरत्न भंडारे के खाने जैसा हो गया है जिसे हर कोई मांग लेता है. लेकिन शीर्ष उद्योगपति रतन टाटा ने बड़ी विनम्रतापूर्वक अपने चाहने वालों से आग्रह किया है कि वे सोशल मीडिया पर कैम्पेन चला कर इसे उन के लिए न मांगें. कोई शक नहीं कि रतन टाटा इस सर्वोच्च सम्मान को डिजर्व करते हैं लेकिन उन की देश के माहौल की समझ को चुनौती नहीं दी जा सकती. कौर्पोरेट और इस मसले पर भी उन का नंबर तीसरा है, इसलिए उन्होंने बड़प्पन दिखाते खुद के भारतीय होने पर ही गर्व जताते यह ट्रैक छोड़ दिया.

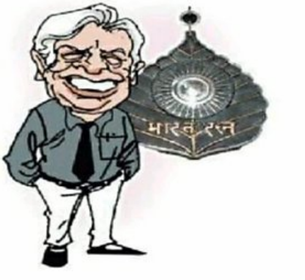

भारतरत्न के लिए इन दिनों घोषित शर्त यह है कि आप को राष्ट्रवादी और सरकार की गुडबुक में होना चाहिए, योग्यता, उपलब्धियां और देश के लिए कुछ करने का योगदान तो दीगर बातें हैं. अच्छा तो उन का यह न कहना रहा कि मुकेश अंबानी, बाबा रामदेव या गौतम अडानी जैसे देशभक्त कारोबारियों को इस नायाब खिताब से नवाज दो.

प्रह्लाद की पीड़ा

नरेंद्र मोदी के भ्राता प्रह्लाद मोदी 3 फरवरी को लखनऊ के अमौसी एयरपोर्ट पर धरने पर बैठ गए. बात सिर्फ इतनी सी थी कि उन का स्वागत करने जा रहे सहयोगियों को पुलिस ने अपना मेहमान बना लिया. प्रह्लाद यह सुन कर और भड़क गए कि ऐसा पीएमओ के हुक्म पर हुआ. जोशजोश में उन्होंने वह बात कह दी जिसे सोचने में भी लोग खौफ खाते हैं कि योगी के राज में गुंडागर्दी फलफूल रही है.

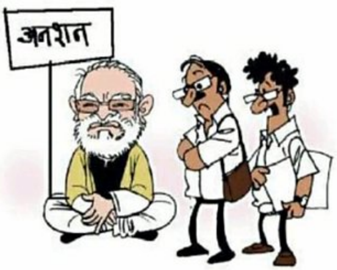

3 दिनों बाद खबर आई कि उन की बिटिया सोनाली मोदी भाजपा के कायदेकानूनों के तहत अहमदाबाद के स्थानीय निकाय चुनाव में भाजपा के टिकट पर चुनाव नहीं लड़ पाएंगी. व्यथित प्रह्लाद ने राजनाथ सिंह और अमित शाह के बेटों का उदाहरण दिया और एक इंटरव्यू में यह इशारा भी कर दिया कि वे नरेंद्र मोदी परिवार से कोई संबंध नहीं

रखते हैं. रिश्तों की खटास अभिजात्य ढंग से उजागर हुई. अब जो न समझे वह अनाड़ी ही कहा जाएगा कि नरेंद्र मोदी अपने भाई के बढ़ते कद से डरते हैं.

शाहनवाज का उद्योग

मन, वचन व कर्म से भाजपा के हिंदुत्व में गलेगले तक डूब चुके सैयद शाहनवाज हुसैन को बिहार का उद्योग मंत्री बना कर उन की निष्ठा का इनाम दे दिया गया है. अपनी वाक्‌शैली से ज्यादा रोमांस के लिए चर्चित इस खूबसूरत और स्टाइलिश नेता को इस बार भी वैलेंटाइन डे पर युवाओं ने मजनूं, रांझा और महिवाल की तरह याद किया क्योंकि ब्राह्मण परिवार की रेणु शर्मा को प्रपोज करने के बाद 9 साल तक उन्होंने परिवार व समाज के झुकने का इंतजार किया था.

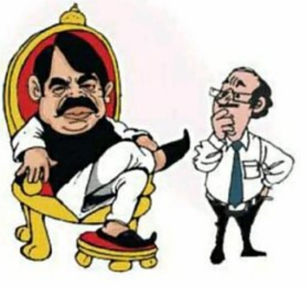

भाजपा ने उन्हें विधानसभा चुनाव नहीं लड़ाया था, सो, मुख्यमंत्री पेश करना तो दूर की बात थी क्योंकि इस से हिंदू वोट बड़ी तादाद में कटते. अपना मुसलिमप्रेम दिखा कर भाजपा ने एक तीर से कई शिकार कर डाले हैं जिन में से पहला नीतीश कुमार की दुश्वारियां बढ़ाना है. अब देखना दिलचस्प होगा कि बिहार में वे हिंदुत्व का उद्योग कैसे चलाते हैं.

दलित भोजनालय

मशहूर शायर निदा फाजली होते तो कहते,

"घर से होटल है बहुत दूर चलो यूं कर लें,
चलो किसी दलित के यहां खाना खाया जाए."

हुआ यों कि बीते दिनों ग्वालियर में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान एक सफाईकर्मी, वाल्मीकि समाज के, रामसेवक के यहां जा पहुंचे. उन के साथ सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया और इन दिनों किसानों व सरकार के बीच सैंडविच बने कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर भी थे. बस, तमाशा मच गया. दलित बस्ती के नारायण इन देवताओं को अपने बीच पा कर थोड़ी देर के लिए अपनी जाति का गम भूल गए.

जमीन पर बैठ कर इन देवताओं ने भोजन किया. शिवराज सिंह ने इस टोटके को पूरी शिद्दत से अपना लिया है. इस के पहले वे रीवां और जबलपुर में भी इसी तरह शूद्रों को उपकृत कर चुके हैं. लेकिन शायद ही वे इस सवाल का जवाब दे पाएं कि उन के गृहनगर विदिशा में उन्होंने जिस बाढ़ वाले गणेश मंदिर को ब्रैंड बना दिया है उस में शूद्रों की एंट्री क्यों बैन है?

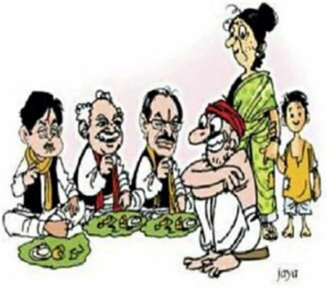

-भारत भूषण श्रीवास्तव •

T-SERIES AND CINE1 STUD
Bhool Bh

सरकारी नीतियों से बदतर होती फिल्म इंडस्ट्री

• शांतिस्वरूप त्रिपाठी

फिल्म इंडस्ट्री को उद्योग का दर्जा मिलने के साथसाथ बौलीवुड पर राजनीतिक शिकंजा कसना शुरू हुआ और बौलीवुड जाति, धर्म, ऊंचनीच व राजनीतिक सोच के अनुसार कई खेमों में बंटता चला गया. मौजूदा समय में अतिराजनीतिक घुसपैठ के चलते फिल्म इंडस्ट्री यानी बौलीवुड के भीतर जंगलराज पनपता जा रहा है.

वर्ष 2019 के लोकसभा चुनावों से पहले केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के चेयरमैन, गीतकार व फिल्म पटकथा लेखक प्रसून जोशी तथा कुछ निर्माताओं की पहल पर कई फिल्मी कलाकारों, निर्माता व निर्देशकों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में मुलाकात कर फिल्म इंडस्ट्री के विकास पर चर्चा की थी. उस के बाद अपने मुंबई आगमन पर भी कुछ फिल्मी हस्तियों संग प्रधानमंत्री ने मुलाकात कर काफी तसवीरें खिंचवाई थीं. लेकिन हकीकत में फिल्म इंडस्ट्री के हालात सुधरने के बजाय बदतर ही हुए हैं. फिल्म इंडस्ट्री के बदतर हालात के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम कुसूरवार नहीं हैं.

कई वर्षों से फिल्म उद्योग, फिर चाहे वह बौलीवुड (मुंबई) हो या टौलीवुड (दक्षिण भारत), ने सुचारुरूप से फिल्म निर्माण व उन के वितरण आदि को जारी रखने के लिए अपनी एक स्वतंत्र प्रणाली व तंत्र को विकसित कर रखा था. इसी मकसद से 1937 में इंडियन मोशन पिक्चर्स एसोसिएशन (इम्पा) का गठन किया गया था.

यह एसोसिएशन फिल्म 'आलम आरा' के निर्मातानिर्देशक खान बहादुर आर्देशीर एम ईरानी के दिमाग की उपज थी, जिस में उन्हें चंदूलाल जे शाह, एम ए फजल भौय, जे बी एच वाडिया, चिमनलाल बी देसाई, रुस्तम सी एन बरूचा और शंकर लाल जे भट्ट का साथ मिला था. 2006 से इम्पा अध्यक्ष के तौर पर टी पी अग्रवाल काबिज हैं. अनिल नागरथ इस के सचिव हैं. इम्पा का अपना इम्पा वैलफेयर ट्रस्ट भी है. इस से इम्पा के सदस्य निर्माता को बीमारी के समय सहायता दी जाती है. इम्पा का मानना रहा है कि अन्य सभी 32 एसोसिएशनें उस की छत के नीचे हैं.

इसी के साथ इस मुख्य एसोसिएशन के ही साथ फिल्म निर्माण में कार्यरत अलगअलग पेशे की एसोसिएशनों का

गठन किया गया. इम्पा और प्रोड्यूसर गिल्ड के अलावा सिने एंड टीवी आर्टिस्ट एसोसिएशन, इंडियन फिल्म डायरैक्टर एसोसिएशन, द फिल्म राइटर एसोसिएशन, सिने म्यूजिक डायरैक्टर एसोसिएशन इत्यादि दर्जनों एसोसिएशनें गठित की गई हैं. जब बौलीवुड में राजनीतिज्ञों की घुसपैठ हुई तो शिवसेना व दूसरी राजनीतिक पार्टियों के भी अपने संगठन बौलीवुड में कार्यरत हो गए.

हर एसोसिएशन किसी को भी अपनी एसोसिएशन का सदस्य बनाने के नाम पर पहली बार एक लंबी रकम वसूल करती है. उस के बाद वार्षिक सदस्यता शुल्क भी वसूलती है. मसलन, कभी जूनियर आर्टिस्ट एसोसिएशन का कार्ड बनवाने यानी कि इस एसोसिएशन का सदस्य बनने के लिए एक जूनियर आर्टिस्ट को एक लाख से डेढ़ लाख रुपए देने पड़ते थे. अब कितना लिया जा रहा है, इस पर कोई कुछ कहने को तैयार नहीं है.

जबकि इम्पा के समानांतर ही वर्करों के हित के लिए 1958 में फैडरेशन औफ वैस्टर्न इंडिया सिने इम्पलौइज एसोसिएशन की स्थापना हुई, जिसे बहुत ज्यादा अहमियत कभी नहीं मिली. मगर 2014 के बाद यह एसोसिएशन हावी होती चली गई. अब इस एसोसिएशन का दावा है कि उस की छत के नीचे 31 एसोसिएशनें कार्यरत हैं और इन की कुल सदस्य संख्या 5 लाख है. इस के अध्यक्ष बी एन तिवारी हैं. केंद्र में एनडीए की सरकार आने के बाद इस एसोसिएशन का दबदबा धीरेधीरे बढ़ता गया. उधर अब इम्पा का अस्तित्व न के बराबर है. वास्तव में द प्रोड्यूसर्स गिल्ड ज्यादा हावी है. वर्तमान समय में इम्पा के सदस्य शांत हैं, कोई भी सदस्य फिल्म का निर्माण नहीं कर रहा.

फैडरेशन आफ वैस्टर्न इंडिया सिने इम्पलौइज के अंतर्गत अधिकार फिल्म एंड टीवी वैंडर्स एसोसिएशन, औल इंडिया कैमरामैन अटैंडैंट एंड तकनीशियन, औल इंडिया सिने एंड टीवी फूड सप्लायर्स एसोसिएशन इत्यादि सहित कुल 31 एसोसिएशनें आती हैं.

इंडस्ट्री से जुड़ी हर एसोसिएशन अपने मैंबर बनाने के नाम पर मोटी रकम वसूलती है. यही हाल जूनियर आर्टिस्ट एसोसिएशन का है जहां मात्र सदस्य बनने तक के लिए बहुतकुछ दांव पर लगाना पड़ जाता है.

1954 में राजकपूर, शशधर मुखर्जी, महबूब खान, बी एन सरकार, व्ही शांताराम, विजय भट्ट व बी आर चोपड़ा ने द प्रोड्यूसर्स गिल्ड औफ इंडिया लिमिटेड स्थापित की थी. मगर वर्चस्व सिर्फ इम्पा का ही था. 2004 में टीवी निर्माता भी इस से जुड़े और तब इस का नाम बदल कर द फिल्म एंड टीवी प्रोड्यूसर्स गिल्ड औफ इंडिया किया गया. तभी से इस संस्था संग जुड़ कर रौनी स्क्रूवाला व सिद्धार्थ रौय कपूर ने रूपर्ट मर्डोक के इशारे पर खेल खेलना शुरू किया. 2006 से 2008 तक रौनी स्क्रूवाला इस गिल्ड के अध्यक्ष रहे. 2017 से सिद्धार्थ रौय कपूर इस के अध्यक्ष हैं (ज्ञातव्य है कि एक वक्त में रौनी स्क्रूवाला

सिद्धार्थ रौय कपूर

की कंपनी यूटीवी में सिद्धार्थ रौय कपूर कार्यरत थे जब 2003 में यूटीवी में रूपर्ट मर्डोक की हिस्सेदारी बढ़ी तब डिजनी यूटीवी के सीईओ सिद्धार्थ रौय कपूर बने थे. यह एक अलग बात है कि 2016 में सौ प्रतिशत एफडीआई का कानून बनते ही डिजनी यूटीवी पूरी तरह से डिजनी हो गया और सिद्धार्थ रौय कपूर की छुट्टी हो गई. 2017 से सिद्धार्थ रौय कपूर और रौनी स्क्रूवाला मिल कर आरएसवीपी नामक फिल्म प्रोडक्शन कंपनी चला रहे हैं).

2017 में प्रोड्यूसर्स गिल्ड ने पूर्णरूपेण इम्पा की ही तर्ज पर काम करना शुरू कर दिया. अब लोग इसे द प्रोड्यूसर्स गिल्ड औफ इंडिया के नाम से जानते हैं. मगर इस का रजिस्ट्रेशन अभी भी एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी द फिल्म एंड टीवी प्रोड्यूसर्स गिल्ड औफ इंडिया लिमिटेड के रूप में ही है.

अब तक बौलीवुड की दूसरी सभी एसोसिएशनों ने बौलीवुड में कार्यरत हर विभाग के कलाकारों, वर्करों व तकनीशियनों की समस्याओं को सुलझाने व जरूरत के वक्त उन की मदद करने तक ही खुद को सीमित कर रखा था. लेकिन द प्रोड्यूसर्स गिल्ड ने विभिन्न व्यापार निकायों, जैसे फैडरेशन औफ इंडियन चैंबर्स औफ कौमर्स एंड इंडस्ट्रीज (फिक्की), भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और पीएचडी चैंबर औफ कौमर्स द्वारा विभिन्न सैमिनार आयोजित कर के व्यापार व कानूनी विशेषज्ञों को विस्तृत रूप से जानने के लिए सहयोग करने का काम शुरू किया. गिल्ड ने ही सरकार के साथ मेलमुलाकातों का सिलसिला शुरू किया. इस के अलावा, गिल्ड ने फिल्म और टैलीविजन में उत्कृष्टता के लिए वार्षिक गिल्ड अवाड्र्स की स्थापना की है.

बौलीवुड में सभी एसोसिएशनों का काम सुचारुरूप से चल रहा था. फिल्म इंडस्ट्री में हर तरह के मतभेद ये संगठन आपस में बातचीत कर सुलझा लेते थे. परिणामतया फिल्म इंडस्ट्री के अंदर होने वाले झगड़े अदालत तक नहीं पहुंच पाते थे. इन एसोसिएशनों ने नियम बना रखा है कि किसी भी फिल्म, टीवी सीरियल या वैब सीरीज के निर्माण का हिस्सा कोई ऐसा शख्स नहीं हो सकता जो इंडस्ट्री के किसी भी एसोसिएशन का सदस्य न हो. इस तरह के नियम के चलते यदि कोई निर्माता किसी को पारिश्रमिक राशि नहीं देता है तो उस राशि को दिलवाने से ले कर हर तरह के विवाद को हल करने में ये एसोसिएशनें मदद करती आ रही हैं. यदि किसी निर्माता ने किसी को पारिश्रमिक राशि देने में आनाकानी की तो उस की अगली फिल्म में कोई भी कलाकार या तकनीशियन या वर्कर काम नहीं करता.

एसोसिएशन की कार्यशैली

यह अलग बात है कि फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े सभी संगठन फिल्म उद्योग में विभिन्न हितधारकों के लिए प्लेटफौर्मों व पंचायतों या यों कहें कि खाप पंचायतों की ही तरह काम करते रहे हैं और इन के निर्णय मानने के लिए सभी बाध्य होते थे. बौलीवुड के इन सभी संगठनों ने आम सहमति से नियम बनाया हुआ था कि उस इंसान के साथ कोई भी निर्माता, निर्देशक या संगठन काम नहीं करेगा, जो फिल्म इंडस्ट्री की किसी न किसी एक संस्था का

सदस्य न हो. जब किसी गरीब व मजबूर वर्कर का पैसा कोई ताकतवर निर्माता नहीं देता था तब यह एसोसिएशन उस के लिए मददगार बन कर खड़ी होती थी. उस वक्त तो इन की खाप पंचायत वाली कार्यशैली प्रशंसा के योग्य भी होती थी. पर कई बार इन का खाप पंचायत जैसा बरताव कुछ लोगों को अखरता भी रहा है. समय के साथ बदलाव होना भी चाहिए. इन एसोसिएशनों की सब से बड़ी खूबी यह रही है कि इन में शिकायत किए जाने पर देश की अदालतों की तरह निर्णय होने में वक्त नहीं लगता है.

कंपीटिशन कमीशन ने बिगाड़ा खेल

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने 2001 में फिल्म इंडस्ट्री को उद्योग का दर्जा देने के साथ ही बौलीवुड पर अपना शिकंजा कसना शुरू कर दिया. उसी वक्त से बौलीवुड के अंदर धीरेधीरे राजनीति हावी होने लगी. बौलीवुड जाति, धर्म, ऊंचनीच व राजनीतिक सोच के अनुसार कई खेमों में बंटना शुरू हो गया. उसी दौर में भाजपा ने बौलीवुड के इन संगठनों में अपनी पैठ बनानी शुरू कर दी. तो वहीं शिवसेना ने भी अपना एक संगठन खड़ा कर दिया.

लगभग डेढ़दो वर्ष बाद स्वच्छ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के मकसद से 14 अक्तूबर, 2003 में तब की वाजपेयी सरकार ने भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (कंपीटिशन कमीशन औफ इंडिया) का गठन किया जिस से बाजार को उपभोक्ताओं के हित का साधन बनाया जा सके. नवंबर 2018 से आईएएस अशोक कुमार गुप्ता इस के अध्यक्ष हैं. भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग ने सिनेमा तथा फिल्म इंडस्ट्री के हर विभाग के कामकाज व कार्यशैली के कमतर ज्ञान के बावजूद जिस तरह से बौलीवुड के कामकाज में दिलचस्पी लेनी शुरू की, उस से सभी को आश्चर्य हुआ.

सब से पहले अजय देवगन पहुंचे कंपीटिशन कमीशन

सरकार द्वारा 2003 में गठित किया गया कंपीटिशन कमीशन औफ इंडिया पहली बार 2012 में तब चर्चा में आया जब 13 नवंबर, 2012 को यशराज निर्मित व शाहरुख खान के अभिनय से सजी फिल्म 'जब तक है जान' और अजय देवगन निर्मित व उन के अभिनय से सजी फिल्म 'सन औफ सरदार' प्रदर्शित हुईं. उस वक्त यशराज फिल्म्स ने अपनी फिल्म 'जब तक है जान' के प्रदर्शन के लिए ज्यादातर सिनेमाघरों पर कब्जा कर लिया था. अजय देवगन को अपनी फिल्म 'सन औफ सरदार' के लिए अपेक्षित सिनेमाघर नहीं मिले थे. तब अजय देवगन ने इम्पा में शिकायत दर्ज कराने के बजाय एक नवंबर को भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (कंपीटिशन कमीशन औफ इंडिया) में शिकायत दर्ज कराई थी, जिस पर कार्यवाही करते हुए जनवरी 2013 में भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग ने अजय देवगन की शिकायत को रद्द कर दिया था. तब तक अजय देवगन की फिल्म भी प्रदर्शित हो चुकी थी. कंपीटिशन कमीशन से अजय देवगन की याचिका रद्द होने पर बौलीवुड के अंदर चर्चाएं गरम हो गई थीं कि अगर अजय देवगन ने बौलीवुड की कई दशकों से चली आ रही पुरानी परंपरा के अनुसार एक नवंबर को ही इम्पा के दरवाजे पर

दस्तक दी होती तो शायद 13 नवंबर से पहले कोई राह निकल आती.

नई सरकार के वक्त विपुल ए शाह पहुंचे कंपीटिशन कमीशन

बौलीवुड में प्रोडक्शन कर्मचारियों के प्रति उदासीन रवैया है. काम करने के बाद निर्माताओं द्वारा उन की मेहनत का भुगतान नहीं किया जा रहा है.

2014 में सरकार के बदलते ही निर्मातानिर्देशक विपुल अमृतलाल शाह ने भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग में फिल्म उद्योग की सभी एसोसिएशनों के खिलाफ शिकायत की. विपुल ए शाह का तर्क था कि वे किसी भी इंसान, कलाकार, लेखक, कर्मचारी, वर्कर को ले कर फिल्म बनाने के लिए स्वतंत्र हैं मगर फिल्म उद्योग की विभिन्न एसोसिएशनें उन्हें ऐसा करने से रोकती हैं. विपुल ए शाह ने बौलीवुड की सभी 32 एसोसिएशनों के खिलाफ शिकायत की थी, जिस पर सुनवाई करते हुए देवेंद्र कुमार सिकरी की अध्यक्षता में कंपीटिशन कमीशन औफ इंडिया ने 31 अक्तूबर, 2017 को अपने 90 पन्ने के आदेश में विपुल ए शाह के पक्ष में निर्णय दिया. इस निर्णय ने सभी एसोसिएशनों के अस्तित्व पर ही सवालिया निशान खड़ा कर दिया. उस के बाद लोग हर विवाद के लिए इन एसोसिएशनों में जाने के बजाय अदालत के दरवाजे खटखटाने लगे. फिलहाल पटकथा के कौपीराइट सहित कुछ मामले अदालत में लंबित हैं.

कंपीटिशन कमीशन की वजह से बौलीवुड में फैला जंगलराज?

कंपीटिशन कमीशन ने कमतर ज्ञान के चलते जिस तरह के निर्णय सुनाए, उन का सब से बड़ा खमियाजा 5 लाख डेली वेजर्स व कमजोर वर्करों को उठाना पड़ रहा है. अब ताकतवर निर्माता व निर्देशक न सिर्फ इन की पारिश्रमिक राशि हड़प रहे हैं बल्कि इन्हें काम भी नहीं दे रहे हैं. तमाम छोटेछोटे वर्करों के पेट पर लात पड़नी शुरू हो गई. काम करने के बाद उन की मेहनत का भुगतान नहीं किया जा रहा है. यह कटु सत्य है.

मसलन फिल्मकार रामगोपाल वर्मा ने लंबे समय से फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े कलाकारों, तकनीशियनों और वर्करों की पारिश्रमिक राशि नहीं चुकाई है. यह रकम सवा करोड़ रुपए से भी अधिक की है. वे उन नए वर्करों के साथ अपनी नई फिल्म बना रहे हैं जो किसी भी एसोसिएशन के सदस्य नहीं हैं. रामगोपाल वर्मा के इस कृत्य को ले कर वर्करों की तरफ से शिकायत मिलने के बाद फैडरेशन औफ वैस्टर्न इंडिया सिने इंप्लौइज ने कई बार रामगोपाल वर्मा को नोटिस भेज कर वर्करों का पैसा चुकाने का निवेदन किया. मगर रामगोपाल वर्मा के कानों में अब तक जूं नहीं रेंगी है.

रामगोपाल वर्मा

फैडरेशन औफ वैस्टर्न इंडिया सिने एम्पलौइज के अध्यक्ष बी एन तिवारी कहते हैं, "हमें बीच में पता चला कि कोरोनाकाल के समय भी रामगोपाल वर्मा अपने एक प्रोजैक्ट की शूटिंग कर रहे हैं जिस पर हम ने गोवा के मुख्यमंत्री को भी 10 सितंबर, 2020 को पत्र लिखा था. हम चाहते थे कि रामगोपाल वर्मा गरीब तकनीशियनों, कलाकारों और वर्करों की बकाया राशि का भुगतान करें. मगर रामगोपाल वर्मा ने इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया. वे हमारे पत्र भी बैरंग वापस कर रहे हैं."

फिल्म इंडस्ट्री एसोसिएशनों ने खोई पहचान

इस भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (कम्पीटिशन कमीशन औफ इंडिया) के दुर्भाग्यपूर्ण हस्तक्षेप ने फिल्म इंडस्ट्री के संगठनों व पंचायतों को लगभग दोषपूर्ण बना दिया. परिणाम अब अगर किसी निर्माता और वितरक या निर्माता और प्रदर्शक या निर्माता और ब्रौडकास्टर के बीच कोई विवाद है तो इसे केवल एक लंबे समय तक खींचे जाने वाले व बेहद बोझिल अदालती लड़ाई के जरिए ही हल किया जा सकता है.

धीरेधीरे फिल्म उद्योग के संगठन अपनी प्रासंगिकता और अधिकार खो सा चुके हैं. 2014 के बाद तो सरकारी दखलंदाजी व राजनीति इस कदर बढ़ी कि भाजपा समर्थक कुछ नए संगठन भी बन गए. द प्रोड्यूसर्स गिल्ड औफ इंडिया है जोकि 2004 से चर्चा में आना शुरू हुआ था. मगर 2017 के बाद यह बड़ी तेजी से उभरा और इस संगठन के चलते इम्पा का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है.

किस ने डुबोया इम्पा को

इम्पा अति पुराना संगठन होने के साथ ही इस संगठन के पास करोड़ों रुपए की संपत्ति भी है जिस पर कुछ खास लोगों का गिरोह ही 2006 से काबिज है. यों तो संस्था के नियमों के अनुसार, इम्पा की कार्यकारिणी का चुनाव हर 3 वर्ष पर होता है मगर यह चुनाव भी ठीक उसी तरह से होता है जिस तरह से कुछ दिनों पहले महाराष्ट्र में ग्राम पंचायतों के चुनाव हुए थे.

महाराष्ट्र में 15 जनवरी को संपन्न ग्राम पंचायत चुनाव से 2 दिनों पहले नासिक जिले के गांव उमरणे की ग्राम पंचायत की नीलामी 2 करोड़ और नंदूरबार जिले के गांव कोंडामली ग्राम पंचायत की नीलामी 42 लाख रुपए में हुई थी. यह अलग बात है कि इस की भनक चुनाव आयोग को लग गई और इन ग्राम पंचायतों के चुनाव रद्द कर दिए गए थे.

टी पी अग्रवाल

2006 से टी पी अग्रवाल गुट का इम्पा पर कब्जा है. 2006 से टी पी अग्रवाल ही लगातार इम्पा अध्यक्ष चुने जा रहे हैं. अभी इन का कार्यकाल 2022 तक है. इम्पा एक अति सशक्त संगठन रहा है. फिल्मों के नाम के रजिस्ट्रेशन से ले कर कई तरह के काम इस संस्था के तहत ही होते रहे हैं.

इसी वजह से एक ही नाम पर 2 फिल्में कभी नहीं बनीं. मगर इम्पा अध्यक्ष के नाते टी पी अग्रवाल की कुछ अपनी गलतियां, कुछ कंपीटिशन कमीशन औफ इंडिया की बेवजह की दखलंदाजी, कुछ सौ प्रतिशत एफडीआई

फिल्म इंडस्ट्री के मुख्य संगठन

- **इम्पा : सदस्यता शुल्क** : 11,800 रुपए. फिर प्रतिवर्ष 1,180 रुपए अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क 41,300 रुपए है.
- **सिने एंड टीवी आर्टिस्ट एसोसिएशन (सिंटा)** : 1958 में स्थापित कलाकारों की संस्था का नाम सिने आर्टिस्ट एसोसिएशन था. इस की पहली अध्यक्ष दुर्गा खोटे थीं. लेकिन टीवी इंडस्ट्री के विकसित होने व सैटेलाइट चैनलों के आने के बाद इस का नाम सिने एंड टीवी आर्टिस्ट एसोसिएशन किया गया. फिलहाल 9,000 कलाकार इस के सदस्य हैं. इस का सदस्यता शुल्क पहले 3 वर्ष तक प्रतिवर्ष 10 हजार रुपए है, चौथे वर्ष से प्रतिवर्ष 1,200 रुपए है.
- **निर्देशकों की संस्था** : इंडियन फिल्म डायरैक्टर्स एसोसिएशन का गठन 1959 में हुआ था. टीवी चैनलों के विस्तार के बाद 23 दिसंबर, 2007 को इस का नाम इंडियन फिल्म एंड टीवी डायरैक्टर्स एसोसिएशन हो गया. फिलहाल इस के 10 हजार सदस्य हैं और इस के वर्तमान अध्यक्ष अशोक पंडित हैं. इस का प्रथम वर्ष का सदस्यता शुल्क 25 हजार एक रुपए है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 50 हजार एक सौ रुपए है.
- **सिने म्यूजीशियन एसोसिएशन** : 1952 में स्थापित इस संस्था के वर्तमान अध्यक्ष अमर हल्दीपुर हैं.
- **सिने म्यूजिक डायरैक्टर्स एसोसिएशन** : इस संस्था के वर्तमान अध्यक्ष रंजीत बारोट हैं. प्रथम वर्ष 14,160 रुपए चुकाने होते हैं. इस के अलावा जिस तरह से संगीतकार काम करता है उस पर अलग से शुल्क भी देना पड़ता है.

के चलते विदेशी ताकतों की बढ़ी शक्ति व इंडस्ट्री के अंदर राजनीतिक दखलंदाजी के साथ ही द प्रोड्यूसर्स गिल्ड औफ इंडिया के बढ़ते प्रभाव से इम्पा का अस्तित्व लगभग समाप्त सा हो चुका है.

दो खेमों में बंटा बौलीवुड

हकीकत में देखा जाए तो 2003 से धीरेधीरे बौलीवुड जंगलराज में तबदील होने लगा था. मगर 2014 के बाद तो पूरी तरह से जंगलराज कायम हो गया है. अब बौलीवुड खुल कर 2 खेमों में बंट चुका है. एक वह खेमा है जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भक्त है, दूसरा जो उन के साथ नहीं है. इसी जंगलराज व नीति के चलते धीरेधीरे बौलीवुड में सिंगल निर्माताओं का जीवित रहना असंभव हो गया है.

राजनीतिक दखलंदाजी, भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग की कार्यशैली और सौ प्रतिशत एफडीआई के चलते बौलीवुड में स्वतंत्र निर्माता, डिस्ट्रिब्यूटर और एक्जीबीटर अब जीवित नहीं रह सकते. अब सिस्टम मुट्ठीभर संस्थाओं द्वारा संचालित है जो स्वतंत्ररूप से कार्य करने वालों को बाहर का रास्ता दिखाती रहती हैं. एक निर्माता बिना ओटीटी प्लेटफौर्म या बड़े खिलाड़ी के आदेश के बिना अपनी फिल्म का प्रचार तक नहीं कर सकता. प्रचार के मंच, विभिन्न टीवी चैनल और एफएम रेडियो स्टेशन वगैरह भी कुछ विदेशी संस्थाओं द्वारा नियंत्रित होते हैं जो बिना किसी नियम का पालन किए मनमाने ढंग से कार्य कर रहे हैं.

फिल्म इंडस्ट्री के लिए रैगुलेटरी बौडी की मांग

मजेदार बात यह है कि अब बौलीवुड के अंदर का एक तबका तो फिल्म व टीवी इंडस्ट्री के लिए भी एक रैगुलेटरी बौडी बनाने की मांग करने लगा है.

टीवी सीरियल 'नया सिनेमा' का निर्माण व निर्देशन कर चुके राजेश कुमार सिंह का तर्क है कि वर्तमान सरकार स्वस्थ प्रतिस्पर्धी माहौल में सभी के लिए समान अवसर प्रदान करने में विश्वास करती है, इसलिए इसे सुनिश्चित करने के लिए एक भारतीय फिल्म एवं टीवी उद्योग नियामक प्राधिकरण बनाया जाए. उन्होंने इस बाबत सरकार के नाम एक खुला खत लिखा है.

अपने खुले पत्र में राजेश कुमार सिंह ने फिल्म इंडस्ट्री के विकास के लिए 4 मुख्य मांगें रखी हैं-

1. उद्योग के कारोबार और विकास की निगरानी के लिए एक विश्वसनीय संरचना का निर्माण किया जाए. इस में बौक्सऔफिस कलैक्शन और टीवी व्यूअरशिप मौनिटरिंग अथौरिटी के लिए रिपोर्टिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की स्थापना शामिल हो.
2. फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े विभिन्न हितधारकों के बीच विवाद निबटान के लिए एक बुनियादी ढांचा व तंत्र का निर्माण किया जाए जो विभिन्न हितधारकों के बीच अपने निर्णयों को लागू करने के लिए पर्याप्त अधिकार के साथ सरकार द्वारा अधिकृत पंचायत के रूप में कार्य करे.
3. एक ऐसी नियामक संस्था का गठन किया जाए जोकि प्रतिस्पर्धी माहौल को बिगाड़ने वालों और कई तरीकों से छोटे खिलाड़ियों के साथ भेदभाव करने वालों को नियंत्रित कर सके. इस पर नजर रखने के लिए एक चौकीदार निकाय का निर्माण हो. इस निकाय को गलत संस्थाओं के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई करने का अधिकार हो.
4. राष्ट्र के नीतिनिर्माताओं और योजनाकारों को आवश्यक इनपुट प्रदान कर के उद्योग के साथसाथ विश्व स्तर पर इस की पूरी क्षमता का दोहन कर के उद्योग की आगे की वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए विचारों व दृष्टिकोणों का विकास किया जाए.

कोरोना वायरस के दौरान इम्पा ने फैडरेशन औफ वैस्टर्न इंडिया सिने इम्पलौइज को भेजे कानूनी नोटिस टी पी अग्रवाल इम्पा के माध्यम से कुछ भी सकारात्मक काम करने के बजाय 'मेरी कमीज से तुम्हारी कमीज साफ क्यों' की लड़ाई लड़ने में ही धन व समय बरबाद करते नजर आते हैं. कोरोना वायरस के प्रकोप के दौरान जब 3 माह का पूरा लौकडाउन था, जब देश के साथ ही पूरी फिल्म इंडस्ट्री बंद थी, तब फैडरेशन औफ वैस्टर्न इंडिया सिने इम्पलौइज ने सलमान खान व अन्य लोगों से विनती कर अपने संगठन से जुड़े लोगों तक कुछ धनराशि व राशन सामग्री भिजवाने की व्यवस्था की थी.

फैडरेशन औफ वैस्टर्न इंडिया सिने इम्पलौइज ने सरकार से बात की. इतना ही नहीं, फिल्म इंडस्ट्री में जल्द से जल्द शूटिंग शुरू करने की इजाजत देने के लिए इस संगठन ने गिल्ड और सिंटा के साथ मिल कर सरकार से बात की. फैडरेशन औफ वैस्टर्न इंडिया सिने इम्पलौइज ने

फिल्म इंडस्ट्री इस समय अतिराजनीति और खेमेबाजी की शिकार है. यदि वह इस से मुक्त हो जाए तो इस से जुड़े सभी लोगों के हित साधे जा सकते हैं.

केंद्र सरकार, केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्रालय व महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को कई पत्र लिखे. तब टी पी अग्रवाल ने इम्पा की तरफ से फैडरेशन के अध्यक्ष बी एन तिवारी को कानूनी नोटिस भेजा था कि वे झूठ बोल रहे हैं. उन के संगठन के पास 5 लाख सदस्य नहीं हैं और इम्पा ही एकमात्र संस्था है जोकि बौलीवुड का प्रतिनिधित्व करती है. इम्पा ने सरकार को भी इसी आशय का पत्र लिखा था जिस का फैडरेशन ने मुंहतोड़ जवाब देते हुए अपने सदस्यों की एक सूची तक भेजी थी. कहने का अर्थ यह है कि टी पी अग्रवाल के नेतृत्व में इम्पा ने आपस में ही लड़ाई की. इस के चलते भी फिल्म उद्योग की संस्थाएं चरमरा गईं.

एसोसिएशनों को राजनीति से मुक्त करने की जरूरत

वास्तव में भारतीय फिल्म उद्योग के समुचित विकास व वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए सरकार को मनोरंजन क्षेत्र में सौ प्रतिशत की एफडीआई की छूट नहीं देनी चाहिए थी. इस के अलावा, कला जगत व फिल्म इंडस्ट्री को भी कंपीटिशन कमीशन के अंतर्गत नहीं लाना चाहिए था. मगर फिल्म इंडस्ट्री की सभी एसोसिएशनों को सुचारुरूप से चलने देने के साथ इन एसोसिएशनों की कार्यशैली पर अंकुश रखने की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि इम्पा, द प्रोड्यूसर्स गिल्ड, फिल्म डायरैक्टर्स एसोसिएशन, सिने फिल्म एंड टीवी आर्टिस्ट एसोसिएशन जैसी फिल्म इंडस्ट्री की अपनी एसोसिएशनें काफी बड़ी हैं. इन के सदस्य भी करोड़ों रुपए कमाने वाले हैं.

हालांकि इन के अपने अंदरूनी चुनाव दूध के धुले नहीं हैं मगर फिल्म इंडस्ट्री की एसोसिएशन आदि पर अंकुश रख कर परोक्ष या अपरोक्ष रूप से रचनात्मक स्वतंत्रता पर पाबंदी का भी समर्थन नहीं किया जा सकता. इस के अलावा इन एसोसिएशनों को राजनीति से दूर रखना चाहिए जोकि फिलहाल नजर नहीं आता.

वर्तमान समय में यदि इन एसोसिएशनों पर बारीकी से गौर किया जाए तो लगभग सभी बड़ी एसोसिएशनों की कार्यकारिणी में वही लोग हैं जो भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा से जुड़े हुए या इस राजनीतिक दल की किसी न किसी संस्था का हिस्सा हैं. यदि बौलीवुड की सभी एसोसिएशनें राजनीति से मुक्त हो जाएं तो वे फिल्म इंडस्ट्री का विकास करने व वर्करों के हित साधने की दिशा में सही व बेहतर ढंग से काम कर सकती हैं. ●

लव जिहाद कानून में आर्य समाज की शुद्धि गैरकानूनी

• भारत भूषण

उत्तर प्रदेश की तर्ज पर मध्य प्रदेश में भी लव जिहाद कानून वजूद में आया है. इस के आने के बाद युवाओं में दहशत फैल गई है. उन की प्रेम करने की आजादी पर पहरा लग गया है जिस में खुला समर्थन उन के अभिभावकों का भी शामिल है. मसलन, इस नए कानून में शुद्धिकरण पर प्रतिबंध आरएसएस का मंसूबा दिखाता है.

उत्तर प्रदेश के बाद दूसरे सब से बड़े भाजपाशासित राज्य मध्य प्रदेश में भी धर्मातरण और अंतर्धर्मीय शादियों पर सरकारी लगाम लगाने के लिए 'मध्य प्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अध्यादेश 2020' वजूद में आ गया है. इस अध्यादेश के मसौदे में कोई नई खास बात नहीं है बल्कि यह पुराने कई कानूनों का खिचड़ी संस्करण है जिस का इकलौता मकसद यह जताना है कि भाजपा अपने हिंदू राष्ट्र के उस एजेंडे पर कायम है जिस का बड़ा रास्ता दलितों के साथसाथ मुसलमानों और ईसाईयों को डराने से हो कर जाता है. आमतौर पर कानूनों का मकसद अपराधियों को सजा दिलाना और न्याय व्यवस्था में आम लोगों का भरोसा कायम रखना होता है. जबकि, यह नया कानून इन पैमानों पर खरा उतरने के बजाय दहशत फैलाता हुआ लगता है.

धर्मांतरण और अंतर्धर्मीय शादियां हमेशा से ही हिंदू धर्म के ठेकेदारों की बड़ी परेशानी और सिरदर्दी रही हैं. लेकिन इन ठेकेदारों ने यह सोचने की जहमत कभी नहीं उठाई कि क्यों खासतौर से निचले तबके के हिंदू यानी दलित ही इसलाम, बौद्ध या ईसाई धर्म कुबूल कर लेते हैं और खासतौर से ही हिंदू लड़कियां शादी के लिए धर्म बदलने को आसानी से राजी हो जाती हैं.

इस सवाल का जवाब या समस्या का हल नएनए कानूनों से नहीं मिलता क्योंकि जो हिंदू, वजह कुछ भी हो, धर्म परिवर्तित करते हैं वे दरअसल, वर्णव्यवस्था, जातिगत भेदभाव, शोषण और प्रताड़ना से इतने आजिज आ चुके होते हैं कि उन्हें समाज में रहने में घुटन महसूस होने लगती है. दलित दूल्हे को घोड़ी पर बरात निकालने पर मारा गया, दलित को मंदिर में प्रवेश करने पर कूटा गया, दलित को कुएं से पानी नहीं भरने दिया गया, नाई ने दलित के बाल काटने से इनकार किया और सिंह सरनेम लिखने पर दलितों की हुई धुनाई जैसी कई वैराइटियों वाली खबरें रोजमर्रा की बातें हैं.

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के कुछ दिनों बाद ही मुरादाबाद के कोई 50 दलितों ने इसलाम अपना लिया था जिस से भगवा खेमे में

सनाका खिंच गया था. 13 मई, 2017 को इन दलितों ने साफतौर पर कहा था कि योगी सरकार में दलितों पर अत्याचार हो रहे हैं और चूंकि भाजपा कार्यकर्ता ही कर रहे हैं, इसलिए उन का हिंदू धर्म से मोहभंग हो गया है. इन दलितों ने अपने घरों में रखी हिंदू देवीदेवताओं की मूर्तियों को नदी में बहा दिया था.

ऐसी छिटपुट घटनाएं अकसर होती रहती हैं. लेकिन पिछले साल फरवरी के दूसरे हफ्ते में तमिलनाडु के कोयम्बटूर में एकसाथ 400 दलितों ने इसलाम ग्रहण कर लिया था. तब तमिल पुलीगल काची नाम के एक दलित संगठन के बैनर तले सभी दलितों ने हलफनामे के जरिए स्वेच्छा और बिना किसी दबाव या प्रलोभन के इसलाम कुबूल करने की बात कही थी. दलित से मुसलमान बने पंगुडी ने बानू नाम लेने के बाद मार्के की बात यह कही थी कि हिंदू धर्म से आजादी, जातिगत भेदभाव और छुआछूत को दूर करने का इकलौता रास्ता यही है. बाद में किस्तों में मुसलमान बने दलितों की तादाद 3 हजार तक पहुंच गई थी.

नए कानून नई दहशत

ऐसे मामलों से हिंदुत्व के ठेकेदार कोई सबक लेते सुधरते नहीं, फिर उन से यह उम्मीद करना तो बेकार की बात है कि वे कभी इस तथ्य पर गौर करेंगे कि उन के धर्म में दूसरे धर्म के लोग क्यों शामिल नहीं होते. यहीं से उन की तिलमिलाहट शुरू होती है और अपनी कमजोरियों व खामियों को ढकने के लिए वे हिंदू राष्ट्र का राग अलापना शुरू करते गिनाने लगते हैं कि पहले अंगरेजों और फिर मुगलों ने सोने की चिड़िया वाले उन के देश को लूटा, मंदिर तोड़े, औरतों की आबरू लूटी और हमारे महान धर्म व संस्कृति को तहसनहस कर डाला.

गुजरे कल की आधेअधूरे सच वाली इन बातों का बदला लेने को अब भगवा गैंग अचानक हरकत में आ गया है. नया लव जिहाद कानून इस बात का सुबूत है, जिस का मकसद अल्पसंख्यकों में महज दहशत फैलाना और सवर्ण हिंदुओं को इस खुशफहमी में रखना है कि सब्र रखो, देश अब सनातन धर्म के मार्ग पर चल पड़ा है और जल्द ही सबकुछ हमारा होगा.

धर्मांतरण और अंतर्धर्मीय शादियों का हल लव जिहाद कानून के जरिए ढूंढ़ने की कोशिश एक फुजूल बात है क्योंकि, दरअसल समस्या कुछ और है जिस से लोगों का ध्यान भटकाया जा रहा है. बात मध्य प्रदेश की करें तो धार्मिक स्वंतत्रता अध्यादेश खामियों से भरा पड़ा है. इस की धारा 2(1)(क) कहती है, "प्रलोभन से अभिप्रेत है और इस में सम्मिलित है, नकद अथवा वस्तु के रूप में कोई दान या परितोषण या भौतिक लाभ या रोजगार किसी धार्मिक निकाय द्वारा संचालित विद्यालय में शिक्षा बेहतर जीवनशैली दैवीय प्रसाद या उस का वचन या अन्यथा के रूप में किसी प्रलोभन देने का कोई कार्य."

मुरादाबाद और कोयम्बटूर के मामलों में दलितों ने साफसाफ धर्मांतरण की वजह बताई थी कि वे क्यों मुसलमान बन रहे हैं. इस पूरे अध्यादेश में कहीं इस बात का जिक्र नहीं है कि अगर कोई प्रताड़ना और शोषण के चलते धर्म परिवर्तन करता है तो उस धर्म के मुखियाओं को भी कोई सजा दी जाएगी. यहां सरकार यह भी स्पष्ट नहीं कर पाई है कि बेहतर जीवनशैली से उस का अभिप्राय क्या है

और किसी धार्मिक संस्था द्वारा संचालित स्कूलों में शिक्षा से उसे क्या एतराज है और ये बातें किस लिहाज से लालच के दायरे में आती हैं.

जल्दबाजी और हड़बड़ाहट में बनाए गए इस कानून के नियम ही नहीं बनाए गए हैं जिस से यह समझ आए कि इस पर अमल कैसे होगा. लेकिन मौटेतौर पर 2 बातें लोगों को समझ आईं कि अब धर्मांतरण से पहले संबंधितों को 2 महीने पहले डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को सूचना देनी होगी और अगर कोई शादी के मकसद से धर्म बदल रहा है तो यह अपराध होगा, यानी अब धर्मांतरण काफी कठिन बना दिया गया है.

धर्म के नाम पर कानूनी पहरा युवाओं की आजादी छीनने जैसा है.

सब से ज्यादा दिलचस्प बात जो लोग चाहते थे वह यह है कि धर्म छिपा कर शादी करने वालों को सजा दी जाए तो उस के बारे में धारा 5 में कहा गया है, "परंतु यह कि जो कोई भी उस के द्वारा माने जाने वाले धर्म से भिन्न किसी धर्म के व्यक्ति से विवाह करना चाहता है और अपना धर्म इस प्रकार छिपाता है कि अन्य व्यक्ति, जिस से वह विवाह करना चाहता है, विश्वास करता है कि उस का धर्म वास्तव में वही है जोकि उस का है, को कारावास 3 वर्ष से कम का न होगा. यह 10 वर्ष तक का भी हो सकता है तथा जुर्माने का भी दायी होगा जो 50 हजार रुपए से कम का नहीं होगा, दंडित किया जाएगा."

बोलचाल की भाषा में इस का मतलब यह है कि कोई असलम नाम का युवक अमर नाम रख कर जनेऊ धारण कर, भगवा कपड़े पहन और टीका लगा कर आशा नाम की युवती को धोखा दे कर उस से शादी करेगा तो वह अपराधी होगा. यह लव जिहाद कानून का पूरा सार है और इसीलिए यह कानून गढ़ा गया है. सोशल मीडिया पर बीते 3 सालों से इस तरह की पोस्टें प्रवाहित हो रहीं थीं या जानबूझ कर की जा रही थीं, एक ही बात है कि मुसलिम लड़के धार्मिक पहचान बदल कर हिंदू लड़कियों को अपने प्रेमजाल में फंसाते हैं और फिर उन से शादी कर उन्हें मुसलमान बनने पर मजबूर करते हैं और वे नहीं मानतीं तो उन्हें शारीरिक रूप से प्रताड़ित करते हैं.

यह नई बात नहीं है. यह पहले भी अपराध था और किसी असलम को फूलमाला नहीं पहनाई जा रही थी बल्कि कानून के तहत दोषी पाए जाने पर सजा ही दी जा रही थी. इस में कोई शक नहीं कि ऐसा हो रहा था लेकिन यह इतना छिटपुट था कि उस के लिए अलग से कानून बनाना बेतुकी और गैरजरूरी बात है और उस पर होहल्ला मचाने का मकसद मुसलमानों को डराना भर है जिस से वे हिंदू लड़की से प्यार और शादी की बात ही न सोचें.

आजादी पर पहरा

इस कानून के जरिए शिवराज सरकार ने मुसलिम युवकों से ज्यादा हिंदू युवतियों की आजादी पर अंकुश लगाने की कोशिश की है क्योंकि वे जागरूक होते जातपांत, रूढ़ियों और धर्म की बंदिशें तोड़ने लगी हैं. नए दौर की शिक्षित युवतियां आर्थिक और सामाजिक रूप से भी आत्मनिर्भर हो चली हैं, इसलिए खुद की जिंदगी से जुड़े अहम फैसलों के लिए, धर्म तो दूर की बात है, वे अपने अभिभावकों की भी मुहताज नहीं रह गईं हैं. भोपाल के नामी नूतन कालेज में पढ़ी एक छात्रा आरती रैकवार (आग्रह पर बदला हुआ नाम) की मानें तो कोई 5 साल पहले उस की एक ब्राह्मण सहेली ने किसी की परवा न करते हुए एक मुसलिम लड़के से शादी कर ली थी.

थोड़ा बवंडर सहेली के परिवारजनों ने मचाया पर चूंकि दोनों वयस्क और नौकरीपेशा थे, इसलिए कुछ खास हल्ला नहीं मचा. अब वह युवती एक बच्चे की मां है और पति के साथ खुशीखुशी रह रही है. इस युवती को खुशी इस बात की भी है कि उस ने अपनी मरजी से पसंद का जीवनसाथी चुना. लेकिन कुछ रुक कर आरती कहती है, "अब इस कानून के लागू होने के बाद युवाओं में दहशत है क्योंकि कई हिंदू लड़कियां मुसलमान लड़कों को और कई मुसलमान युवतियां हिंदू लड़कों को चाहती हैं."

बकौल आरती, दहशत इस बात की कि हिंदू संगठन के लोगों ने हुड़दंग मचा रखा है. यह एक तरह से दोनों धर्मों के युवाओं को खुली धौंस है कि वे आपस में प्यार और शादी का खयाल दिल से निकाल दें. ये हुड़दंगी आएदिन पार्कों, मौल्स और रैस्टोरैंट्स वगैरह में रेकी किया करते हैं कि कहीं कोई प्यार तो नहीं कर रहा. एकाध मामले में कोई हिंदू लड़की मुसलमान लड़के के साथ पकड़ी यानी, साथ बैठी पाई गई तो इन लोगों ने शहर सिर पर उठा लिया. मामला बीती 9 सितंबर का है जब संस्कृति बचाओ मंच के कार्यकर्ताओं ने जौहरी होटल पर धावा बोलते कुछ लड़केलड़कियों को पकड़ा था और आरोप यह लगाया था कि यहां लव जिहाद हो रहा था. अब तो न केवल भोपाल, बल्कि देशभर में यह हुड़दंग रोज की बात हो चली है."

अभिभावक भी हैं इन के साथ

असल में हिंदू मांबाप भी अपनी लड़कियों को ले कर इस चिंता में रहते हैं कि उन की लाड़ली कहीं अपनी मरजी से शादी न कर ले. इसलिए कोई भी हिंदूवादी संगठनों के हुड़दंग का विरोध नहीं करता. आरती आगे कहती है, "अब तो कानून भी इन के साथ है. अब तक लव जिहाद के महज 2 मामले कथित रूप से सामने आए हैं, उन में अहम रोल इन्हीं लोगों का है. आज अगर मेरी सहेली शादी करती तो यह मुमकिन ही नहीं हो पाता क्योंकि पहले उसे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को खबर देनी पड़ती और आर्य समाज मंदिर, जहां से उस ने शादी की थी, के कर्ताधर्ता भी शादी कराने से इनकार कर देते."

यानी अब गोपनीयता की गारंटी खत्म हो गई है. कौन, कहां, किस से शादी करने वाला है, यह बात प्रशासन की तरफ से भी लीक हो सकती है और शादी कराने वाले धर्मस्थलों से भी, क्योंकि इन्हें भी नया कानून बाध्य करता है कि वे धर्मांतरण और अंतर्धर्मीय शादी की पूर्व सूचना दें नहीं तो सजा भुगतने को तैयार

रहें. अधिनियम की धारा 10(2) में निर्देश है, "कोई धर्माचार्य और/या कोई व्यक्ति जो धर्म संपरिवर्तन का आयोजन करना चाहता है उसे जिले के जिला मजिस्ट्रेट को, जहां ऐसा धर्म संपरिवर्तन किया जाना प्रस्तावित है, ऐसे प्रारूप में 60 दिन पूर्व सूचना देगा."

अब डर यह भी है कि इस नए कानून को हथियार बनाते धड़ल्ले से मांबाप अपनी मरजी से शादी करने वाली बेटी के अरमानों का गला घोंटेंगे क्योंकि अधिकांश सवर्ण हिंदू तो यह भी नहीं चाहते कि उन की बेटी, मुसलमान और ईसाई तो दूर की बात है, अपने से छोटी जाति वाले लड़के से भी शादी करे. अब होगा यह कि लड़की अगर छोटी जाति वाले लड़के के साथ भागी तो वे उसे अपहरण बताते लड़के को मुसलमान बताएंगे. पकड़े जाने के बाद लड़के की जो पूजा हवालात में होगी, उस से उसे ज्ञान प्राप्त हो जाएगा कि यह इश्कविश्क बेकार की बात है. शादी बराबरी वालों यानी अपनी ही जाति में करना ठीक रहता है. खुद को बजाय असलम के अमर साबित करने में उसे पसीने छूट जाने हैं.

प्यार और आजादी पर पहरा बिठाने वाले इस कानून ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह की इमेज कट्टरवादी हिंदू नेता की बना दी है जिस से वे युवाओं की नजर में भी विलेन बन गए हैं. लेकिन उन की मजबूरी ऊपर से आए आदेशनिर्देश हैं कि जैसे भी हो और जितना भी हो, ऊंची जाति वाले हिंदुओं को खुश करने वाले फैसले लो. सो, वे ले रहे हैं, वरना उन्हें चलता कर देने में कोई लिहाज भगवा खेमा नहीं करेगा. इसी जल्दबाजी में शिवराज सिंह यह भूल गए कि नया अधिनियम शुद्धि को भी प्रतिबंधित करता हुआ है.

आर्य समाज बनाम आरएसएस

जिन युवाओं के अभिभावक मरजी से उन्हें शादी नहीं करने देते, आर्य समाज मंदिर उन के लिए बेहद मुफीद और सस्ते साबित होते हैं (और अब तक सुरक्षित भी थे) क्योंकि वहां कम खर्च में मान्यताप्राप्त शादी हो जाती है. भोपाल के 10 नंबर मार्केट स्थित आर्य समाज मंदिर की कर्ताधर्ता अर्चना सोनी बताती हैं, "अकेले भोपाल के 3 आर्य समाज मंदिरों में औसतन प्रतिदिन 5 शादियां होती हैं जिन में से 3 में युवा घर, जाति या समाज वालों से विद्रोह कर शादी कर रहे होते हैं."

एक वरिष्ठ समाजसेवी धर्मेंद्र कौशल मानते हैं कि लव जिहाद कानून से आर्य समाज पद्धति से होने वाली शादियों की संख्या कम होगी जिस के कई दुष्परिणाम भी सामने आएंगे क्योंकि आर्य समाज के नाम पर फर्जीवाड़ा भी होने लगा है. अकेले भोपाल में ही कई आर्यसमाजियों ने शादी कराने की दुकानें खोल ली हैं. अंतर्धर्मीय शादियां कराने वाले सहूलियत के चलते इन के पास जाने को मजबूर होंगे क्योंकि ये लोग डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को अंतर्धर्मीय शादियों की सूचना न देने के पैसे भी जोड़ों से वसूलेंगे. बकौल धर्मेंद्र, कई मुसलमान युवक हिंदू युवती से शादी करने के लिए खुद हिंदू बन जाते हैं जिन की शुद्धि आर्य समाज मंदिर में की जाती है. नए कानून में यह भी कहा गया है, "पैतृक धर्म में वापसी धर्मांतरण नहीं माना जाएगा, लेकिन इस में शुद्धिकरण की बात नहीं की गई है."

शुद्धिकरण के इतिहास के बारे में नई पीढ़ी तो यह बिलकुल भी नहीं जानती कि इसे आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने शुरू किया था और स्वामी श्रद्धानंद ने इसे एक मुहिम की शक्ल दी थी. 20वीं सदी से शुरू हुए शुद्धि आंदोलन का असल मकसद उन दलित आदिवासियों को हिंदू धर्म में वापस लाना था जो मुरादाबाद और कोयम्बटूर के दलितों की तरह प्रताड़ना, छुआछूत के चलते ईसाई या मुसलमान हो गए थे. यह अभियान बड़े पैमाने पर चला था जिस का विरोध ईसाईयों और मुसलमानों के अलावा ऊंची जाति वाले हिंदुओं ने भी किया था क्योंकि उन की नजर में दक्षिणा न चढ़ा पाने वाले शूद्र पशुतुल्य हुआ करते थे.

आर्य समाज हिंदू धर्म में व्याप्त उन कुरीतियों की भी मुखालफत करता है जिन में बलि, दानदक्षिणा, मूर्तिपूजा, बालविवाह, तीर्थयात्रा, पूर्वजों की पूजा, जातिव्यवस्था आदि शामिल हैं जिन से सदियों से ब्राह्मणों की रोजीरोटी चल रही है. पंडेपुजारियों को आर्य समाजी सिद्धांत, जो मूलतया सुधारवादी थे, कभी फूटी आंख नहीं सुहाए.

अब यह टकराव नई शक्ल में देखने में आ रहा है जिसे आरएसएस बनाम आर्य समाज कहे जाने में किसी लिहाज की जरूरत नहीं. लव जिहाद कानून में शुद्धि की बात इसीलिए जानबूझ कर उड़ाई गई है क्योंकि आरएसएस वाले हिंदू शुद्धि में यकीन ही नहीं करते लेकिन हिंदुओं की घटती आबादी का रोना हर कभी रोते इसे राष्ट्रवाद के लिए खतरा जरूर बताते रहते हैं. दिक्कत तो यह है कि यह वर्ग वे सब बुराइयां नहीं छोड़ना चाहता जिन का आर्य समाज विरोध करता है.

यह श्रेष्ठि वर्ग चाहता है कि शादियां भी सनातनी रीतिरिवाजों से हों, इसलिए आर्य समाजी शादियों को लव जिहाद कानून के जरिए हतोत्साहित किया जा रहा है. लेकिन धर्मेंद्र कौशल इसे आर्य समाज और आरएसएस का टकराव नहीं मानते, क्यों? इस सवाल का जवाब भोपाल के ही एक आर्यसमाजी आर सी श्रीवास्तव यह कहते देते हैं, "असल में इन दिनों हर कोई भगवा रंग में रंगा जा रहा है. तूती उन लोगों की बोल रही है जिन्होंने हिंदू धर्म का नाश करने में कोई कसर न पहले छोड़ी थी, न आज छोड़ रहे हैं. ये लोग नहीं चाहते कि जातिगत रूप से हिंदू एक हों." बकौल आर सी श्रीवास्तव, हालत तो यह है कि संघियों ने आर्य समाज के उन कई स्थलों पर कब्जा कर रखा है जिन्हें शाखा चलाने को मित्रवत दे दिया गया था.

यह मतभेदों की शुरुआत है क्योंकि आरएसएस और भाजपा जिस एजेंडे पर चल रहे हैं वह हिंदुओं में फूट डाल कर राज करते रहना है. अब यह कब तक चलेगा और इस का हश्र क्या होगा, यह कह पाना मुश्किल है लेकिन अमेरिका में जिस तरह रिपब्लिकन पार्टी और डोनाल्ड ट्रंप खारिज कर दिए गए, उसे देख महसूस तो यही होता है कि लोकतंत्र में कट्टरवाद की उम्र बहुत ज्यादा नहीं होती. लव जिहाद जैसे कानून एक अनूठे तरीके से कट्टरता को बढ़ावा दे रहे हैं जबकि जरूरत इस बात की है कि अंतर्धर्मीय और अंतरजातीय शादियों को ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन मिले.

हो इस का उलटा रहा है जो युवाओं से उन की प्राइवेसी, खुशी और हक छीन रहा है. ●

बच्चों के मुख से

मेरा 8 वर्षीय पुत्र रुब्बान अकसर कहता रहता है कि मेरा कोई भाई नहीं है, मैं किस के साथ खेलूं? मुझे एक भाई ला कर दो. एक दिन मैं ऐमेजौन पर सर्च कर रहा था, मेरी लगभग साढ़े 4 वर्ष की पुत्री जन्नत भी मेरे पास बैठी सर्चिंग को देख रही थी. तभी अचानक मेरा पुत्र किसी बात से नाराज होता हुआ मेरे पास आ कर बोला, “मुझे एक भाई ला कर दो.”

उस की बात सुन कर मेरी पुत्री तपाक से बोली, “पापा, इसे एक औनलाइन भाई मंगा दो.” उस की बात सुन कर मैं जोर से हंस पड़ा.

मो. अजमल जमाल खान (सर्वश्रेष्ठ)

मेरी मुंहबोली बहन का 5 वर्षीय बेटा आशू बहुत नटखट है. एक दिन आशू अपनी मम्मी तेजू के साथ मेरे घर आया. मैं ने उस दिन नगजड़ित चप्पल पहनी थी.

मेरी चप्पल की ओर इशारा कर तेजू बोली, “देखो आशू बेटा, कितनी सुंदर चप्पल पहनी है मौसी ने.”

आशू बोला, “सुंदर चप्पल है.”

इस पर तेजू अपने जूते जिन में गोलगोल छेद वाला डिजाइन बना था दिखा कर बोली, “बेटा, मेरे जूते दिखने में कैसे हैं?”

इस पर आशू ने एक नजर जूतों पर डाली व तुरंत बोला, “मम्मी, ये जूते तो फटेफटे हैं.”

यह सुनना था कि हम दोनों ठहाका लगा कर हंस पड़े.

गीतू बंसल

मेरी एक सहेली के घर ‘सरिता’ पत्रिका सब बहुत शौक से पढ़ते हैं. जिस दिन पेपर वाला भैया पत्रिका दे कर जाता है उसी वक्त ‘सरिता’ के लिए छीनाझपटी शुरू हो जाती है. ‘पहले मैं’, ‘पहले मैं’ पढ़ने की होड़ लग जाती है.

एक दिन मैं उन के घर गई तो ‘सरिता’ के लिए लड़ाई हो रही थी. उन की 4 वर्षीय बेटी महक मुझ से कहने लगी, “आंटी, मुझे भी ‘सरिता’ अच्छी लगती है क्योंकि जब मम्मी पढ़ रही होती हैं, उस वक्त मैं चौकलेट के लिए पैसे मांगती हूं तो मम्मी से फटाफट पैसे मिल जाते हैं.” उस की बात सुन कर हम सब हंस पड़े.

निर्मल कांता गुप्ता ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ में बच्चों के मुख से कही गई बातें भेज सकते हैं. प्रकाशित अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8,**
झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.

*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/ औडियो** भी कर सकते हैं.*

08527666772

मध्यवर्ग के लिए निवेश के अवसर

• मनीषा अग्रवाल

मध्यवर्ग के लोग अपनी सीमित आय तथा अधिक खर्च के कारण थोड़ी बचत ही कर पाते हैं. ऐसे में यह आवश्यक है कि वे अपनी बचत राशि को सुनियोजित तथा सुरक्षित तरीके से निवेश करें जो वृद्धावस्था में किसी आपातकाल की स्थिति में अथवा किसी और जरूरत के समय उन के काम आ सके. बेहतर तरीके से निवेश के लिए बेहतर प्लानिंग जरूरी होती है.

निवेश के कुछ विकल्प निम्न हैं :

• **एफडी तथा आरडी :** यह आम लोगों के बीच निवेश का सब से लोकप्रिय माध्यम है. बैंक या पोस्टऔफिस में कराई जाने वाली टैक्स सेविंग एफडी (फिक्स्ड डिपौजिट) तथा आरडी (रेकरिंग डिपौजिट) से आप निवेश के वक्त सैक्शन 80 सी के तहत टैक्स बचा सकते हैं. यह निवेश का सुरक्षित एवं गारंटीड रिटर्न का विकल्प है.

इस पर मिलने वाले ब्याज पर आप को इनकम टैक्स स्लैब के अनुसार टैक्स चुकाना पड़ता है.

● **सोना :** प्राचीनकाल से भारतीय सोने में निवेश करते रहे हैं. महंगाई के खिलाफ निवेश का अच्छा यह माध्यम है. सोने को चोरी से बचाने के लिए गोल्ड बौंड या गोल्ड ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) द्वारा भी हम सोने में निवेश कर सकते हैं. गोल्ड ईटीएफ में निवेश तथा भुनाना दोनों ही शेयर बाजार द्वारा होता है.

> मध्यवर्ग के लिए निवेश के अवसर दिखने में अच्छे लगते हैं पर इन की असलियत छिपी रह जाती है. फिर भी जो प्रचार फाइनैंस कंपनियां करती हैं, इन के बारे में जानिए.

● **जमीन या मकान खरीदने में रुपया लगाना एक आम तरीका है :** निवेश के पहले उस मकान या जमीन के सभी कागजों का अच्छी तरह से निरीक्षण कर लें. इस के लिए बैंक से लोन भी आसानी से मिल जाता है. रेगुलराइज्ड कालोनी में घर लेने पर, पहले घर पर, प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत छूट भी मिलती है. पूरी तरह विकसित क्षेत्र की जगह सभी सुविधाओं से युक्त डैवलपिंग क्षेत्र में यदि घर या जमीन ली जाए तो बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना रहती है. इस के अलावा किराए से आमदनी का विकल्प भी होता है.

● **शेयर :** इस में रिटर्न की निश्चित गारंटी नहीं होती है. किंतु अन्य विकल्पों की तुलना में लंबी अवधि में रिटर्न देने की क्षमता शेयरों में सब से अधिक होती है. बेहतर जानकारी के साथ सही समय पर अच्छे शेयरों में निवेश करना काफी मुनाफे वाला साबित हो सकता है.

● **डिबैंचर :** यह निश्चित रिटर्न देने वाले ऋणपत्र होते हैं जिन में 10,000 रुपए का भी निवेश कर सकते हैं. निवेश के पहले इन की क्रैडिट रेटिंग अवश्य देख लेनी चाहिए. इन में बैंक एफडी की तुलना में अधिक ब्याज मिलता है.

● **म्यूचुअल फंड :** ये इक्विटी, हाइब्रिड, डेट आदि विभिन्न प्रकार के होते हैं. एसआईपी (सिस्टमैटिक इन्वैस्टमैंट प्लान) द्वारा इन में लंबे समय के लिए निवेश सुरक्षित माना जाता है. अपनी

जोखिम लेने की क्षमता के अनुसार ही म्यूचुअल फंड का चयन करना चाहिए. इस में बेहतर रिटर्न मिलता है. म्यूचुअल फंड को बेच कर आप कभी भी अपना रुपया वापस ले सकते हैं.

● **जीवन बीमा :** इस में निवेश के साथ आप को लाइफ कवर भी मिलता है. अर्थात, आप के असमय निधन की स्थिति में यह आप के परिवार के लिए वित्तीय मददगार साबित होता है. साथ ही, जीवन बीमा में निवेश की राशि तथा मैच्योरिटी की राशि टैक्सफ्री होती है. ध्यान में रखने की बात यह है कि जो निश्चित राशि आप जीवन बीमा निधि के रूप में जमा कर सकते हैं तथा निकट भविष्य में उस की आवश्यकता नहीं हो, उतनी ही राशि का प्रीमियम रखें क्योंकि इस की सरैंडर वैल्यू काफी कम हो जाती है.

● **एनपीएस :** नैशनल पैंशन स्कीम सरकार समर्थित सब से अच्छा सौल्यूशन है जिस में 18 से 60 साल का व्यक्ति निवेश कर सकता है. इस में 2 तरह के खाते होते हैं. एक में खातों से 60 साल की उम्र तक पैसे नहीं निकाल सकते हैं. दूसरा बचत खाते की तरह काम करता है. आवश्यक होने पर आंशिक निकासी संभव है. हालांकि, 60 वर्ष की उम्र के बाद भी इस में निवेश में बने रह सकते हैं. यह शेयर, एफडी, कौर्पोरेट बौंड फंड तथा सरकारी निवेश का मिलाजुला रूप है. पिछले कुछ वर्षों के दौरान इस ने बहुत अच्छा रिटर्न दिया है.

● **पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडैंट फंड) :** जिन लोगों के पास नौकरी या कारोबार का कोई संगठित ढांचा नहीं है, वे लंबी अवधि के सुरक्षित निवेश के लिए इसे चुन सकते हैं. 1.5 लाख रुपए तक के निवेश पर निवेशित राशि, पीपीएफ का ब्याज तथा मैच्योरिटी की रकम टैक्सफ्री है. सरकार समर्थित इस फंड का रिटर्न काफी अच्छा है. इस के लिए खाता बैंक या पोस्टऔफिस में खोला जा सकता है. इस में न्यूनतम 15 वर्ष का लौकइन समय होता है. सो, लंबी अवधि के निवेश के लिए ही इस का चयन करें.

लंबी अवधि के लिए पीपीएफ का चयन करें. इस में ब्याज तथा मैच्योरिटी की रकम टैक्सफ्री है.

एक बेहतर निवेशक के रूप में आप के लिए आवश्यक है कि बेहतर योजना के साथ अपनी जरूरतें आमदनी तथा जोखिम उठाने की क्षमता को परख कर ही निवेश करें. अपना निवेश कई जगहों पर विभाजित रखें ताकि आपातकाल की स्थिति में भी आप रुपया निकाल सकें. अपनी मेहनत से कमाए रुपए को भरोसेमंद निवेश विकल्प में ही निवेश करें. ●

दिन दहाड़े

बात कुछ दिनों पहले की है. एक सेल्समैन हमारे घर आया. उस की उम्र 20-22 वर्ष की रही होगी. एक मशहूर कंपनी का डिटरजैंट पाउडर उस ने दिखाया और कहा, "एक विशेष योजना के तहत यह एक के साथ एक मुफ्त दिया जा रहा है और यह योजना बाजार में उपलब्ध नहीं है."

संतुष्टि के लिए एक थैली उस ने हमारे सामने खोली जो ओरिजनल थी. हम लालच में आ गए और एकसाथ 10 थैलियां खरीद लीं. उस समय थैली खोलने का सवाल ही नहीं था क्योंकि वह खोल कर दिखा चुका था परंतु जब बाद में एक थैली खोली तो उस में नमक मिला. जब सारी थैलियां खोलीं तो हम ने माथा पकड़ लिया क्योंकि सब में नमक ही भरा हुआ था. इस तरह उस ने दिन दहाड़े हमें मूर्ख बना दिया.

महेश शर्मा (सर्वश्रेष्ठ)

एक बार मैं किसी कार्यवश दिल्ली से रुड़की जा रहा था. बस का सफर था. एक सज्जन मेरे साथ की सीट पर आ बैठे. उन्हें मेरठ जाना था. मेरे पास काला सूटकेस था वैसा ही उन सज्जन के पास था. दिल्ली से बस चली. राह में एक होटल में गाड़ी रुकी ताकि जलपान किया जा सके. उन सज्जन से बात हुई. मैं चाय पीने उतर गया था. 20 मिनट बाद सवारियां बस में लौट आईं. बस चल पड़ी. थोड़ी देर में मुझे झपकी आ गई. वे सज्जन पता नहीं कब उतर गए. मैं ने अपने सूटकेस की तरफ देखा वह वहीं ऊपर रखा दिखा. बाद में मैं ने घर पहुंच कर सूटकेस देखा तो उस में अखबार ही अखबार भरे थे. मैं दंग रह गया.

उन सज्जन ने जानबूझ कर मेरा सूटकेस उठा लिया तथा अपना वहां पर रख दिया. ऐसी लूट दिन दहाड़े हुई. मेरे कपड़े तथा रुपए उसी सूटकेस में थे. मैं दिन दहाड़े लुट गया था.

जगदीश सिंह नेगी

एक बार हम सपरिवार बस से उदयपुर जा रहे थे. गरमी बहुत थी. पानी हमारे पास खत्म हो चुका था. रोड पर थोड़ा ट्रैफिक जाम हुआ तो बस धीरेधीरे चलने लगी तो पानी बेचने वाले लड़के आ गए. हम ने चलती बस में ही 4 बोतल खरीद लीं. ट्रैफिक खुल गया. बस ने रफ्तार पकड़ ली.

हम ने पानी की बोतल खोलनी चाही तो देखा कोई सील नहीं थी और बोतल नकली थी. वे लड़के हमें बेवकूफ बना गए थे. **मायरा तिवारी** ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव **नाम व पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/ऑडियो** भी कर सकते हैं.*

08527666772

अंधविश्वास का वीभत्स रूप

आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में घटी अंधविश्वास की घटना ने साबित किया कि धार्मिक पाखंडों पर कौपीराइट सिर्फ गरीब, दलित या आदिवासी का ही नहीं है बल्कि इस मामले में पढ़ालिखा सभ्य समाज भी पूरी तरह जकड़ा हुआ है. फर्क बस, झोंपड़े और बंगले का है, भीतरखाने कर्मकांड में कोई फर्क नहीं.

24 जनवरी को पुत्रदा एकादशी का व्रत कई मांओं ने रखा था जिस से उन की संतानें सुखी रहें. लेकिन एक मां ऐसी भी थी जो व्रत रखने वाली महिलाओं से भी ज्यादा अंधविश्वासी व धर्मपरायण निकली. धार्मिक अंधविश्वास के नाम पर 2 जवान बेटियों का बेरहमी से कत्ल कर देने वाली इस कुमाता का नाम पद्मजा है. हादसा दिल दहला देने वाला है जिसे जिस किसी ने भी सुना उस ने सतयुग लाने वाली इस कलियुगी मां की काली करतूत पर थूथू की. लेकिन अफसोस इस बात का ज्यादा होना चाहिए कि किसी ने उस धर्म और उस के पाखंडों व ग्रंथों पर लानत न भेजी जो इस मानसिकता व उन्माद का स्रोत और उद्गम है. जराजरा सी बात पर हिंदू खतरे में है का नारा लगाने वाले एकदम चुप हैं. मानो, वे इस का मूक समर्थन कर रहे हैं.

पुत्रदा एकादशी व्रत के बारे में यह कहा जाता है कि इसे करने से घर में सुखशांति और धनवैभव वगैरह भी आता है. आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के मदनपल्ली कसबे में रहने वाले नायडू परिवार के पास वह सबकुछ था जिस की इच्छा हर कोई रखता है लेकिन नहीं थी तो मानसिक शांति. इस संपन्न परिवार का कोई भी सदस्य नशापत्ता नहीं करता था लेकिन यह पूरा परिवार दुनिया के सब से घातक व खतरनाक नशे – धर्म – की लत में था जिस की खुमारी 24 जनवरी को उतरी, तो देशभर में सनाका खिंच गया.

यह सच भी किसी हादसे से कम नहीं, बल्कि बढ़ावा देने वाला है कि किसी शिक्षित सांसद, विधायक, बुद्धिजीवी या कुलीन ने यह नहीं कहा कि यह एक धार्मिक विकृति है, उलटे, इसे मानसिक विकृति कहते सभी ने जता और बता दिया कि नशे में तो, हलके ही सही, वे भी हैं. जो नशा हमारे पूर्वज हमें दे गए हैं उसे हम धरोहर समझ अगली पीढ़ी को देने का दस्तूर निभा रहे हैं क्योंकि इस विकृति पर हमें शर्मिंदगी नहीं, बल्कि गर्व है. मदनपल्ली के इस बेटी हत्याकांड में शुक्र की बात तो लोगों का खुलेआम यह न कहना रहा कि पुलिस को नायडू दंपती को वक्त देना चाहिए था मुमकिन है बेटियां जिंदा हो भी जातीं.

सतयुग आने वाला है

यही बात पद्मजा नायडू 24 जनवरी की रात चिल्लाचिल्ला कर पुलिस वालों से कह रही थी कि सुबह होने दो, दोनों बेटियां जिंदा हो जाएंगी क्योंकि सुबह सतयुग आने वाला है. मदनपल्ली के पुलिस इंस्पैक्टर एम श्रीनिवास को पुरुषोत्तम नायडू के पड़ोसियों ने खबर दी थी कि उन के यहां से चीखनेचिल्लाने की अजीबअजीब आवाजें आ रही हैं. इन पड़ोसियों ने किसी अनहोनी की आशंका जताई थी.

Dr. V. PURUSHOTHAM NAIDU
M.Sc. M.Phil. Ph.D
ASSOCIATE PROFESSOR OF CHEMISTRY
GOVT. DEGREE COLLEGE (W)
MADANAPALLE
Smt. V. PADMAJA
GOLD MEDALIST
CORRESPONDENT
MASTERMINDS IIT TALENT SCHOOL

पुत्रदा एकादशी के चक्कर में नायडू दंपती ने अपनी 2 बेटियों को मार डाला.

पुलिस दल पहुंचा तो पहले इन दोनों यानी पुरुषोत्तम और पद्मजा ने उसे घर में दाखिल होने से रोकने की कोशिश की, जिस से पुलिस वालों का शक और गहरा उठा. लिहाजा, वे जबरदस्ती अंदर घुसे. वहां का नजारा देख उन के भी दिल कांप उठे. किसी पुलिस वाले ने अपनी सर्विसलाइफ में ऐसा वीभत्स दृश्य नहीं देखा था.

पूजाघर में 22 वर्षीय साईं दिव्या की नग्न लाश खून से लथपथ पड़ी थी जिस के ऊपर लाल रंग का चुनरीनुमा कपड़ा पड़ा था. हत्या से पहले उस का मुंडन भी किया गया था. दूसरे कमरे में 27 वर्षीय आलेख्या की नग्न लाश पड़ी थी. इस दौरान पद्मजा पुलिस की कार्यवाही से लापरवाह नाचती रही और पुरुषोत्तम सोफे पर समाधि की मुद्रा में पालथी मारे बैठा रहा मानो उन्होंने हत्याएं न की हों बल्कि मच्छर मसले हों. आप शायद यकीन न करें और यह सोचने में ही आप का दिल दहल जाए कि दोनों खूबसूरत युवतियों के सिर धड़ से अलग पड़े थे और खून बह रहा था. लेकिन उन के जन्मदाता और पालनहार धर्म के नशे में झूम रहे थे मानो बेटियों को मार डालने का जश्न मना रहे थे.

दहशत में आमतौर पर मुजरिम आता है, लेकिन यहां पुलिस वालों को गश आ रहे थे कि घर में जवान लड़कियों की सिरकटी नग्न लाशें पड़ी हैं और मां नाच रही है और बाप भगवान बुद्ध की स्टाइल में इस तरह सामाधिष्ठ बैठा है मानो ऊपर वाले से सीधे बात कर पूछ रहा हो, प्रभो, हत्या कर दी है, अब क्या करना है, निर्देश दो.

इधर पुलिस वाले कुछ संभले तो उन्हें समझ आ गया कि मामला धर्म से जुड़े तंत्रमंत्र का है और ये दोनों पगलेट बेकार का ड्रामा कर रहे हैं. लिहाजा, उन्होंने पुलिसिया अंदाज और रोब दिखाया तो भगवान का भूत इन के सिर से थोड़ा उतरा और उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने अपने जिगर की इन टुकड़ियों को भगवान के पास पहुंचाया. बकौल नायडू दंपती, उन्होंने साईं दिव्या की हत्या त्रिशूल से की और आलेख्या का कत्ल भारीभरकम डंबलों से किया.

क्यों किया, इस पर दोनों ने चौंकाने वाले जवाब दिए, जिन का सार यह था कि ये लोग एक तांत्रिक अनुष्ठान कर रहे थे जिस का मकसद बेटियों के भीतर बैठी दुष्ट आत्माओं को बाहर निकालना था. इन्हें स्वर्ग से एक दैवीय इशारा इस बाबत मिला था कि लड़कियों को मार डालो, सुबह वे फिर से जिंदा हो जाएंगी क्योंकि सतयुग शुरू हो जाएगा. यह मूढ़ता, मूर्खता और क्रूरता की इंतहा थी जो एक सभ्य समाज के शिक्षित परिवार में समारोहपूर्वक हुई. पुलिस हिरासत में भी पद्मजा खुद को शिव का अवतार बताते यह कहती रही कि कोरोना वायरस तो शिवशंकर ने दुष्ट आत्माओं के संहार के लिए भेजा है. योजना तो इन दोनों ने खुद की खुदकुशी की भी बना रखी थी जिस से सतयुग में पुनर्जन्म ले सकें लेकिन पुलिस के आ जाने से यह मुमकिन नहीं हो पाया.

पढ़ेलिखे ढोल, गंवार

पूछताछ में उजागर हुआ कि पूरा नायडू परिवार उच्चशिक्षित है. पीएचडी कर चुके वी पुरुषोत्तम नायडू मदनपल्ली के सरकारी कालेज में कैमिस्ट्री के प्रोफैसर पद पर हैं और मास्टर डिग्री में गोल्ड मैडल हासिल करने वाली पद्मजा चित्तूर के एक कौर्पोरेट स्कूल की प्रिंसिपल हैं. इन की बड़ी बेटी आलेख्या मास्टर डिग्री के बाद भोपाल के इंडियन इंस्टिट्यूट

औफ फौरेस्ट मैनेजमैंट से एक डिप्लोमा कोर्स कर रही थी तो साईं दिव्या ए आर रहमान स्कूल, हैदराबाद से संगीत का कोर्स कर रही थी. इस के पहले वह बीबीए की डिग्री ले चुकी थी. दोनों बेटियों को भी मांबाप अंधविश्वास की खाई में ढकेल चुके थे जिस का अंदाजा साईं दिव्या की हादसे से 4 दिनों पहले सोशल मीडिया पर डाली यह पोस्ट है कि शिव आ गए हैं, काम पूरा हुआ.

अब हादसे से ज्यादा हैरानी से सवाल यह भी उठा कि क्या पढ़ेलिखे लोग भी इतने अंधविश्वासी होते हैं और अगर होते भी हैं तो ऐसी शिक्षा के माने क्या? उजागर यह भी हुआ कि यह पूरा परिवार विकट का धार्मिक और घनघोर अंधविश्वासी था.

बड़ा दोषी बाबा मेहर

ये लोग शिर्डी वाले साईं बाबा, ओशो यानी रजनीश और एक अन्य नामी बाबा मेहर के भक्त थे. घर में नियमित पूजापाठ और आरतीभजन हुआ करते थे और इन की गतिविधियां भी रहस्मय थीं. कोरोनाकाल में दोनों बेटियां घर आ गई थीं. इस के बाद धार्मिक ढोंग, पाखंडों की तादाद ज्यादा बढ़ गई थी और अकसर नायडू परिवार धार्मिक स्थलों की यात्रा करता रहता था.

पढ़ेलिखे लोग क्यों इतने अंधविश्वासी होते हैं जितना कि नायडू परिवार था? यह सवाल पूछने वाले शिक्षित लोग एक दफा ईमानदारी से यह सवाल खुद से पूछें तो जवाब उन्हें मिल जाएगा कि वे भी इस के अपवाद नहीं हैं. धार्मिक पाखंडों पर कौपीराइट उन लोगों के ही नहीं हैं जो गरीब, दलित या आदिवासी हैं बल्कि इस मामले में दोनों तबकों में कोई अंतर नहीं है. फर्क इतना है कि छोटा तबका बड़े व नामी बाबाओं को अफोर्ड नहीं कर पाता, इसलिए अपनी हैसियत के मुताबिक उस ने अपने छोटेछोटे तांत्रिक, बाबा, ओझा और गुनिया पैदा कर रखे हैं जो इन्हें बताते रहते हैं कि वशीकरण कैसे करना है, घरेलू कलह से छुटकारा पाने के लिए कौन से टोटके करने हैं, गढ़ा धन निकालने के लिए अमावस्या के दिन कितने मुर्गों की बलि दी जाती है वगैरहवगैरह.

पैसे वालों के आलीशान मकानों, फ्लैट्स और बंगलों में ये ढोंगपाखंड पूरी शिद्दत और बराबरी से होते हैं. 10 में से 9 घरों में किसी न किसी ब्रैंडेड बाबा, गुरु, संत, कथित महात्मा, मुनि या शंकराचार्य की फूलमाला से सुसज्जित तसवीर टंगी रहती है. घर के पूजाघरों में सुबहशाम पूजा आरती और खास दिनों में खास गोपनीय अनुष्ठान भी होते हैं. ये कुलीन अभिजात्य लोग भी गंवारों की तरह दैवीय चमत्कारों में पूरा भरोसा करते हैं और इस की कीमत भी अदा करते हैं. यानी मानसिक स्तर पर किसी में कोई फर्क नहीं है. फर्क है तो आमदनी, रहनसहन और स्टेटस का, जिस के चलते ये बड़े लोग खुद को बुद्धिमान और तार्किक होने की खुशफहमी पाले रहते हैं. इन पढ़ेलिखे गंवारों की पोल कम ही खुलती है क्योंकि ठगे जाने या बेबकूफीभरा कोई पाखंड करने के बाद ये खामोश रहते हैं और कई बार खामोश कर भी दिए जाते हैं.

असल गुनहगार ये हैं

पुरुषोतम और पद्मजा को अदालत के आदेश पर तिरुपति के एसवीआरआर अस्पताल के मनोरोग विभाग में दिमागी जांच के लिए भरती करा दिया गया. अगर यह बीमारी थी तो भोपाल के नामी मनोचिकित्सक डाक्टर विनय मिश्रा इसे

विनय मिश्रा

डिल्यूजन बताते हैं, जिस में रोगी मिथ्या विश्वासों यथा स्वर्गनर्क, जादूटोनों, तंत्रमंत्र आदि को सच मानने लगता है. इस लिहाज से देखें तो हमारे देश की 80 फीसदी से कहीं ज्यादा आबादी इस बीमारी की गिरफ्त में है. फर्क उस के प्रभाव के कम या ज्यादा होने भर का है.

अब जरूरत इस बात की महसूस होने लगी है कि इस और इन कई बीमारियों की जड़ नष्ट की जाए जिन के सामने कोरोना जैसे वायरस बेहद छोटे व कम नुकसानदेह हैं. कोरोना की तो वैक्सीन बन गई लेकिन धार्मिक उन्माद, वहशीपन और पागलपन की वैक्सीन बनना मुश्किल है क्योंकि इस बीमारी के वायरस किसी चीन के वुहान से नहीं आए हैं बल्कि देश के धर्मस्थलों में इन का रोज उत्पादन होता है.

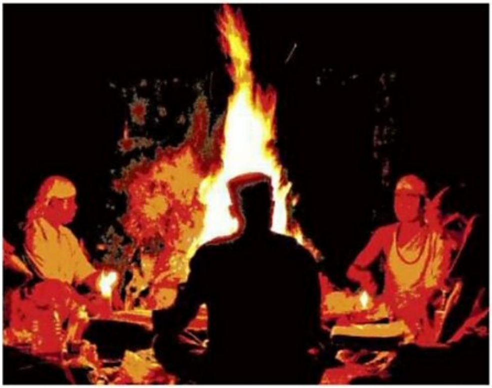
समाज का पढ़ालिखा वर्ग अपनी बुद्धि, तर्क ताक पर रख कर तंत्रमंत्र, यज्ञ अनुष्ठान में लिप्त हो जाएगा तो अनपढ़ लोगों को क्या कहा जाए.

धर्मग्रंथ और धर्मगुरु बड़ा खतरा हैं क्योंकि अपनी रोजीरोटी चलाए रखने के लिए पागलपन यही लोग फैलाते हैं. इन्हें यह ज्ञान धर्मग्रंथों से मिलता है जो ऊटपटांग, बेतुके और काल्पनिक प्रसंगों से भरे पड़े हैं. गरुणपुराण इस का एक उदाहरण है जिस में स्वर्ग और नर्क की इतनी वीभत्स व्याख्या की गई है कि सख्त कलेजे वाला नास्तिक भी इसे सुन कर कांप उठता है.

सभी धर्मग्रंथ ऐसी ही बेहूदी बातों से भरे पड़े हैं जिन के निर्देशों का पालन नायडू दंपती ने किया. लेकिन असल सजा के हकदार और इन से भी बड़े गुनहगार वे धर्मगुरु हैं जो धार्मिक पाखंड के वायरस के वाहक हैं और खुद भी किसी खतरनाक परजीवी वायरस से कम नहीं. लेकिन कोई अदालत स्वतःसंज्ञान लेते इन मगरमच्छों से बैर लेगी, ऐसा सोचने की कोई वजह नहीं.

कृषि कानूनों को किसानों के भले का बताने वाली सरकार को चाहिए कि वह 130 करोड़ देशवासियों के भले के लिए पापपुण्य और मोक्षमुक्ति के कारोबार को बंद करने को कानून लाने की हिम्मत दिखाए. लेकिन यह उम्मीद उस भगवा सरकार से करना तो बेकार है जो खुद गले तक इसी में डूबी है. तब तक आइए किसी नए हादसे का इंतजार करें जिस में बालिका सुरक्षा दिवस के मौके पर कोई नई आलेख्या और दिव्या मार दी जाएं.

–भारत भूषण ●

दिल्ली प्रैस

सरिता 'युवा नारायणी' पुरस्कार

2021-22

श्रीमती कुसुम नारायण (1931-2015) ने नारायणी के नाम से 150 से ज्यादा कहानियां हिंदी की पत्रिकाओं में लिखीं. अधिकतर कहानियां दिल्ली प्रैस की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं. श्रीमती कुसुम नारायण के परिवार के अनुरोध पर उन की स्मृति में दिल्ली प्रैस की पत्रिकाओं सरिता, गृहशोभा, मुक्ता द्वारा हर वर्ष 'युवा नारायणी पुरस्कार' दिया जाता है.

कुछ नए नियमों के साथ नारायणी पुरस्कार की हकदार इस वर्ष लेखिकाओं की उम्र 35 वर्ष तक होनी चाहिए.

इस नारायणी पुरस्कार शृंखला के अंतर्गत नई युवा उभरती लेखिकाओं को मौका दिया जा रहा है कि वे लेखन प्रतियोगिता का हिस्सा बन कर अपनी नई सोच, नए मापदंडों, नए आदर्श कहानी के माध्यम से उजागर करें. उन के प्रयास को लोगों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी दिल्ली प्रैस की पत्रिकाओं की है जो वर्षों से अपने पाठकों को नया दृष्टिकोण देने की क्षमता रखती हैं.

अंतिम तारीख 31 जुलाई, 2021

पुरस्कार
₹ 1,00,000
के नकद पुरस्कार
₹ 50,000 का
प्रथम पुरस्कार
₹ 10,000 के
3 द्वितीय पुरस्कार
₹ 5,000 के
4 अन्य पुरस्कार

नियम

- रचनाएं केवल मेल से भेजी जाएं. कहानी के पहले पृष्ठ पर 'युवा नारायणी पुरस्कार' शब्द लिखें.
- पुरस्कृत लेखिकाओं को पत्रिकाओं द्वारा सूचित किया जाएगा.
- इस बारे में संपादक का निर्णय अंतिम होगा.
- विस्तृत नियम जानने के लिए एक ब्लैंक मेल editor.pratiyogita@delhipress.biz पर भेजें. आप को रिप्लाई में सभी लेखन संबंधी नियम मिल जाएंगे.

कहानियां सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, वैश्विक, प्रेम, विघटन, मनोवैज्ञानिक विषयों पर हो सकती हैं.

रचनाएं भेजने का ई मेल
editor.pratiyogita@delhipress.biz

वृद्ध अपनी संपत्ति बेटों से बचाएं

वो कहते हैं न, ‘न बाप बड़ा न भैया, सब से बड़ा रुपैया.’ यह शतप्रतिशत सच है. संपत्ति वह चीज है जो रिश्तों में अच्छेअच्छों का असल चेहरा सामने ला कर रख देती है. वे वृद्ध मातापिता जिन का सहारा ही उन की संपत्ति होती है, वही कष्ट का कारण बन जाती है.

उत्तर प्रदेश के मऊ जिले में एक बेटे ने पिता और पुत्र के रिश्ते को कलंकित कर दिया. जायदाद के विवाद को ले कर नशे में धुत पुत्र ने पिता की पीटपीट कर हत्या कर दी. जमुनीपुर गांव के रहने वाले 60 वर्षीय रामहित चौहान के 35 वर्षीय पुत्र सूर्यनाथ अपनी पत्नी व बच्चों को ले कर पिता से अलग रहता था. रामहरि की पत्नी की कई साल पहले मौत हो गई थी. दूसरा पुत्र शिशुपाल दुबई में नौकरी करता था. रामहरि अपनी 20 वर्षीय अविवाहित पुत्री के संग रहता था. रामहित का पुत्र सूर्यनाथ उन से अपना हिस्सा मांगते हुए अकसर विवाद करता था. पिता जब जायदाद में हिस्सा देने से मना करता था तो झगड़ा होता था. एक दिन ऐसे ही झगड़े में मारपीट हुई जिस में सूर्यनाथ ने अपने पिता रामहरि को इस बेरहमी से मारा कि उन की मौत हो गई.

उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में मिल एरिया थाना क्षेत्र के अंतर्गत कोड़रस के रहने वाले 55 वर्षीय राम दयाल खेतीकिसानी कर परिवार का पालनपोषण करते थे. बड़ा बेटा फूलचंद अपनी पत्नी व 2 बच्चों के साथ घर के सामने दूसरा घर बना कर रह रहा था. छोटा बेटा शर्मानंद पढ़ाई कर रहा था. राम दयाल अपनी 18 साल की बेटी मीरा की शादी की तैयारियां कर रहा था. वह बेटी की शादी के पहले जमीनजायदाद का बंटवारा नहीं करना चाहता था. लेकिन फूलचंद जमीन के बंटवारे के लिए दबाव डाल रहा था. एक दिन सुबह फूलचंद ने घर के बाहर सो रहे पिता पर डंडे से प्रहार करना शुरू कर दिया. जब पिता को बचाने मीरा आई तो उस ने उसे भी पीट दिया. मीरा की चीख सुन कर आसपड़ोस के लोग मौके पर पहुंचे और फूलचंद को पकड़ कर बाहर किया. घायल राम दयाल को अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया.

कमलजीत का मामला

पंजाब के संगरूर जिले के बरदवाल गांव में रहने वाले कमलजीत सिंह ने अपने 65 वर्षीय पिता हरभजन सिंह की हत्या कर दी. हरभजन का दोष यह था कि उन्होंने अपनी संपत्ति कमलजीत के बेटे यानी अपने पोते के नाम कर दी थी. इस से गुस्से में आ कर कमलजीत ने पिता की हत्या कर दी. पुलिस को बहकाने के लिए कमलजीत ने एक शिकायत दर्ज कराई कि उस के पिता पिछले 20 दिनों से लापता हैं. पुलिस की छानबीन के दौरान कमलजीत ने स्वीकर कर लिया कि उस ने पिता की हत्या कर उन के शव को घर के आंगन में ही दबा दिया था.

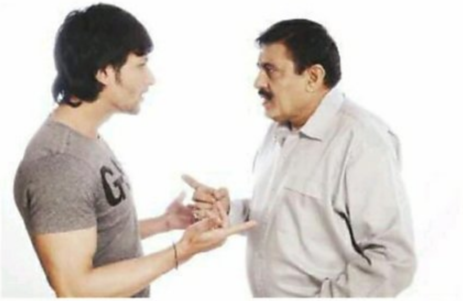

मातापिता को कानूनी हक है कि बच्चों के नाम की वसीयत बदलवा कर अपनी संपत्ति बच्चों से छीन सकते हैं.

भगवान प्रसाद की मौत

बिहार प्रदेश के सीवान जिले में कोइरी टोला गांव में रहने वाले 70 वर्षीय भगवान प्रसाद की हत्या उन के ही छोटे

बेटे व बहू द्वारा गला दबा कर कर दी गई. हत्या की वजह जमीन का विवाद था. घटना के 15 दिन पहले भगवान प्रसाद ने अपनी जायदाद में से 3 कठा 10 धूर जमीन अपने बड़े बेटे हरिहर प्रसाद के इकलौते पुत्र राहुल कुमार के नाम रजिस्ट्री कर दी थी. जिस की जानकारी, उस ने अपने छोटे बेटे कंचन प्रसाद और उस की पत्नी लालती देवी को नहीं दी. जब इस बात की जानकारी कंचन प्रसाद और लालती देवी को हुई तो परिवार में काफी क्लेश बढ़ गया. कंचन प्रसाद और उस की पत्नी लालती देवी ने ही वृद्ध पिता की गला दबा कर हत्या कर दी.

पुलिस ने दोनों आरोपी कंचन प्रसाद व लालती देवी को गिरफ्तार कर लिया है. गिरफ्तार कंचन प्रसाद व उस की पत्नी लालती देवी का आरोप है कि हरिहर प्रसाद व उस के परिवार के लोगों ने पिता की हत्या की है और साजिश के तहत उन्हें फंसा दिया है. कंचन प्रसाद 5 साल से गांव में है. इस के पूर्व वह विदेश में रहता था.

कानून तो बना पर मदद नहीं मिल रही

मातापिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरणपोषण एवं कल्याण कानून में वरिष्ठ नागरिकों के लिए बेहतर जीवन सुनिश्चित करने एवं उन के साथ दुर्व्यवहार करने पर 6 माह तक कारावास या 10 हजार रुपए जुर्माना या दोनों सजा का प्रावधान है. इस कानून के तहत प्रत्येक जिले में वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष पुलिस यूनिट का गठन करने, प्रत्येक थाने में वरिष्ठ नागरिकों के लिए शीर्ष अधिकारी नियुक्त करने तथा वरिष्ठ नागरिक हैल्पलाइन रखने की बात कही गई है. विधेयक में दुर्व्यवहार के रूप में शारीरिक रूप से दुर्व्यवहार, गालीगलौच करना, भावनात्मक दुर्व्यवहार, आर्थिक रूप से दुर्व्यवहार, अनदेखी करना और परित्याग, हमला करना, चोट पहुंचाना, शारीरिक एवं मानसिक रूप से कष्ट देना शामिल किया गया है.

कानून के मुताबिक, राज्य सरकार वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा एवं संरक्षा के लिए एक हैल्पलाइन स्थापित करेगी. इस के तहत पूरे देश में एकसमान नंबर होगा तथा जिसे स्वास्थ्य देखरेख, पुलिस विभाग और संबद्ध अभिकरणों से जोड़ा जाएगा. इस में कहा गया है कि सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि सभी अस्पताल चाहे वे सरकार द्वारा पूर्णतया या अंशतया वित्तपोषित हों या निजी स्वास्थ्य संबंधी देखरेख संस्थाएं हों, वरिष्ठ नागरिकों को यथासंभव सुविधा प्रदान करेंगी. विधेयक में वरिष्ठ नागरिकों के लिए प्राधिकरण स्थापित करने का प्रावधान भी किया गया है ताकि वे भरणपोषण और सहायता के दावों का निपटारा कर सकें.

अधिवक्ता राजेश तिवारी कहते हैं, ''सरकार वृद्ध लोगों की मदद करने के लिए तमाम दिशानिर्देश और कानून बना चुकी है. परेशानी की बात यह है कि इस सब तरह से मदद के लिए वृद्ध लोग अपनी बात कहने को सरकारी औफिस या कोर्ट पहुंचें, यह व्यावहारिक नहीं है. कई बार वृद्ध लोग शरीर और पैसे से सक्षम नहीं होते. उम्र के इस दौर में वृद्ध लोगों को दूसरों पर आश्रित होना होता है. ये लोग परिवार के होते हैं. यही समस्या के कारण भी होते हैं. सरकार वृद्ध लोगों की परेशानी को सुने और उन की इस तरह मदद करे कि उन को सरकारी औफिस या कोर्ट में चक्कर न काटने पड़ें. तभी समस्या का पूरी तरह से समाधान हो पाएगा.''

विदेश में रहने के दौरान उस ने काफी संपत्ति भी अपने नाम बना ली थी, जिस को ले कर भी हरिहर प्रसाद व उस का परिवार मानसिक रूप से काफी परेशान रहा करता था. इसी विवाद में हरिहर प्रसाद ने एक दुकान भी अपनी पत्नी के नाम से सीवान में जेपी चौक के पास ले रखी थी.

घटनाएं आम हैं

इस तरह की घटनाएं पूरे देश में होती हैं. इन में गांव और शहर का भेद नहीं है. यही वजह है कि अब वृद्ध लोगों के लिए अपनी संपत्ति को अपने ही बेटों से बचाने के लिए सोचना पड़ रहा है. 'पूत सपूत तो का धन संचय, पूत कपूत तो का धन संचय' कहावत का अर्थ है कि बेटा अगर लायक है तो उस के लिए धन एकत्र करने की जरूरत क्या. वह अपनी जरूरत के हिसाब से धन कमा लेगा. अगर बेटा नालायक है तो भी धन एकत्र करने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह आप का एकत्र किया धन अपनी खराब आदतों से उड़ा देगा.

धार्मिक कथाओं में भी यह बताया ही गया है कि इंसान का जीवन 4 समूहों में बांटा गया है. मनुष्य के जीवन को बाल्यावस्था, युवावस्था, गृहस्थ और वानप्रस्थ हिस्सों में बांटा गया है. यहां भी धन के महत्त्व को समझाया गया है. इस में यह अपेक्षा की गई है कि बुढ़ापे के समय में धन का मोह त्याग देना चाहिए और अपना घरद्वार, राजपाट छोड़ कर वानप्रस्थ की ओर निकल जाना चाहिए. इतिहास में ऐसे तमाम मामले भरे पड़े हैं जब बूढ़े राजा ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में बेटे को राजपाट दे कर संन्यास ले लिया. कई उदाहरण ऐसे भी हैं जिन

बेटे को कर सकते हैं संपत्ति से बेदखल

1. बेटा अपने पिता की संपत्ति का स्वाभाविक दावेदार होता है. संपत्ति के लिए कई बार विवाद भी होते हैं और ये अपराध की हद तक चले जाते हैं.
2. कभीकभी मातापिता नहीं चाहते कि उन की संपत्ति उन के बेटे को मिले. कानून अलगअलग तरह से इस मामले में मदद करता है.
3. यदि संपत्ति पैतृक है तो पिता अपने बेटे को उस से बेदखल नहीं कर सकता.
4. यदि संपत्ति मातापिता द्वारा अर्जित की गई है तो उन्हें पूरा अधिकार है कि वे अपनी एक संतान या सभी संतानों को चाहे वह बेटा हो या बेटी, संपत्ति से बेदखल कर दें. इस के लिए कानून के तहत कार्यवाही कर के वकील के माध्यम से एक सार्वजनिक सूचना बनवा कर स्थानीय अखबारों में प्रकाशित कराया जाता है.
5. यदि कोई पिता मरने के बाद बेटा या बेटी को अपनी निजी संपत्ति का कानूनी वारिस नहीं बनाना चाहते तो वे रजिस्टर्ड वसीयत बनवाएं जिस में स्पष्ट करें कि कुल कितने लोग प्रौपर्टी के कानूनी वारिस हैं. उन में से किसकिस को बेदखल कर रहे हैं या वारिस के अधिकार से हटा रहे हैं.
6. अगर बच्चे अपने मांबाप की देखभाल नहीं करते तो ऐसी स्थिति में मांबाप संपत्ति का हस्तांतरण कर दोबारा संपत्ति के हकदार भी हो सकते हैं. मैंटीनैंस एंड वैलफेयर औफ पेरैंट्स एंड सीनियर सिटिजन एक्ट 2007 आंध्र प्रदेश, असम, दिल्ली, गोवा, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, नगालैंड, राजस्थान और त्रिपुरा में लागू है.

में गद्दी पर कब्जा करने के लिए अपने ही पिता को कैद करने का काम भी किया गया.

सीधेतौर पर देखें तो साफ पता चलता है कि वृद्ध लोगों की संपत्ति पर उन के अपने बेटों की निगाह गड़ी रहती है. कई बार तो बेटे जबरदस्ती जायदाद, घर और मकान पर कब्जा कर लेते हैं. कब्जा करने के साथ ही साथ वे वृद्ध लोगों की उपेक्षा भी करते हैं. उन को घर से निकाल देते हैं और वृद्ध लोगों को उन की ही कमाई से बेदखल कर देते हैं. अगर वृद्ध पैंशन पा रहे हैं तो वह भी जबरन छीन लेते हैं. हैल्पएज इंडिया की रश्मि मिश्रा बताती हैं, “हमारे पास मदद के लिए ऐसी तमाम कौल्स आती हैं जिन में वृद्ध लोग यह शिकायत करते हैं कि उन के ही बेटा या बेटी ने जायदाद से बेदखल कर दिया है. तमाम मामलों में देखा गया है कि वृद्ध लोगों से बेटा या बेटी जबरन या धोखाधड़ी से कागजात पर हस्ताक्षर करा कर जायदाद को अपने नाम करा लेते हैं.”

वे बिंदु जिन पर गौर करना जरूरी

- पिता अपनी खुद की बनाई संपत्ति से मातापिता बच्चे को बेदखल कर सकते हैं. जब तक वे न चाहें, बच्चे हकदार नहीं होंगे. पिता की मृत्यु बाद वे दावा कर सकते हैं अगर पिता ने किसी और को संपत्ति नहीं दी है तो. पैतृक उत्तराधिकार वाली संपत्ति के मामले में वे बच्चों को बेदखल नहीं कर सकते.
- हिंदू मैरिज एक्ट के तहत पहली पत्नी के रहते दूसरा विवाह वैध नहीं माना जाता. लेकिन पहली पत्नी की मौत के बाद व्यक्ति दूसरी शादी करता है तो उसे वैध माना जाएगा. फिर उस के बच्चे भी विरासत में हकदार होंगे.
- पिता ने जीवित रहते खुद खरीदी संपत्ति किसी को दे दी तो वारिसों को उस में हिस्सा नहीं मिलता. पिता की मौत के बाद भी वे हक नहीं मांग सकते. रजिस्ट्रेशन एक्ट के अनुसार, अचल संपत्ति का गिफ्ट डीड कराना जरूरी है. यदि पिता ने इसे रजिस्टर्ड नहीं कराया है तो कोर्ट में चुनौती दी जा सकती है.

कोर्ट के फैसलों में राहत

कानून ने बुजुर्गों को यह अधिकार दिया है कि यदि बच्चे उन से दुर्व्यवहार करें, समय पर ठीक भोजन न दें, उन से नौकर जैसा बरताव करें तो मातापिता बेटाबेटी व दामाद या कोई और, सभी को अपने घर से निकाल सकते हैं, वसीयत से बेदखल कर सकते हैं. यदि वसीयत बच्चों के नाम कर दी है तो उसे बदलवा कर अपनी संपत्ति बच्चों से छीन सकते हैं.

दिल्ली हाईकोर्ट ने 2016 में ऐसे ही एक मामले में आदेश सुनाया था कि बेटा केवल मातापिता की मरजी से ही उन के घर में रह सकता है. मातापिता न चाहें तो उसे उन के घर में रहने का कानूनी हक नहीं है. भले ही उस की शादी हुई हो या न हुई हो.

दिल्ली हाईकोर्ट ने 2017 में एक अन्य फैसले में कहा था कि जिन बुजुर्गों के बच्चे उन से खराब व्यवहार करते हैं, वे किसी भी तरह की प्रौपर्टी से, वसीयत से बच्चों को बेदखल कर सकते हैं. सिर्फ मातापिता की कमाई से बनी संपत्ति पर ही यह बात लागू नहीं होती, बल्कि यह प्रौपर्टी उन की पैतृक और किराए की भी हो सकती है जो बुजुर्गों के कानूनी कब्जे में हो. - **-शैलेंद्र सिंह** ●

नजदीक चले आते

नहीं करते वो बात
भुलाने की कोशिश में,
दिल में जो लगी आग
बुझाने की कोशिश में.

लेते हैं सहारा सदा
झूठी ही बातों का,
पर बात बिगड़ती है
बनाने की कोशिश में.

कहते नहीं वो बात
वही दिल में छिपी जो,
नजदीक चले आते
बताने की कोशिश में.

वे महफिलों में बैठ
वहां पर मुसकराए भी,
दिल अपना कहीं और
लगाने की कोशिश में.

बढ़ रही मोहब्बत
अब दुश्मनी के रास्ते,
यों करीब आए
दूर जाने की कोशिश में.

वे बात नहीं समझे
मेरे मन की अभी तक,
कई बार रुला चुके
हंसाने की कोशिश में.

दिल के पंछी उड़ कर
वापस कभी नहीं आते,
यह कहती है ‘कुसुम’
समझाने की कोशिश में.

● कुसुम

परफैक्ट पार्टनर

• मिनी सिंह

अक्षत की रोजरोज की खराब आदतों से अनु तंग आ चुकी थी. बारबार समझाने के बावजूद अक्षत से कुछ न कुछ गलती रह ही जाती. वह अक्षत को एक टेबल मैनर हसबैंड के रूप में देखना चाहती थी. लेकिन अक्षत उस की बात को हंसी में उड़ा देता. फिर एक दिन अनु को जो पता चला उस से उस की आंखें खुल गईं.

अक्षत ने फ्रिज से पानी की बोतल निकाली और सीधे मुंह लगा कर पीने लगा. फिर वापस बोतल फ्रिज में रख दी. इसे देख अनु का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया. आव देखा न ताव, उस ने फ्रिज से बोतल निकाली और घुमा कर बाहर फेंक दी.

"अरे, पानी की बोतल बाहर फेंक क्यों दी? अभी परसों ही तो मौल से खरीद कर लाया था. तुम भी न अनु," बोल कर अक्षत बोतल लाने को लपका ही कि, अनु ने उसे रोक दिया.

"कोई जरूरत नहीं. पड़ी रहने दो बाहर ही," गुस्से से नाक फुलाते हुए अनु बोली, "अब तो मैं फ्रिज में पानी रखूंगी ही नहीं. पियो बाहर का पानी."

अनु को घिन्न आती थी जब अक्षत पानी जूठा कर उसे फ्रिज में रख देता था. सिर्फ पानी ही नहीं, वह ऐसे ही हाथ से फ्रिज में रखा खाना, केक, मिठाइयां वगैरह भी निकाल कर खा लेता और किसी में भी हाथ पोंछ कर फारिग हो जाता था. नाक में उंगली डाल कर हाथ धोता भी नहीं था और उसी हाथ से टीवी रिमोट, फोन छू देता और फिर वही टीवी रिमोट, मोबाइल फोन छू कर वह खाना भी खाने लगता था.

"तुम कोई बच्चे तो नहीं हो न, जो बारबार तुम्हें समझाना पड़े कि बोतल का पानी जूठा मत करो. कुछ भी खाने से पहले हाथ धोया करो, धोने के बाद हाथ यहांवहां नहीं, बल्कि टौवेल से ही पोंछो. बोलो, क्यों नहीं समझते मेरी बात?"

"अरे, तो क्या हो गया. हम 2 ही तो हैं घर में, कोई बाहर का आदमी थोड़े ही है यहां," बेफिक्री से बोल कर अक्षत हंस देता.

"हां तो, बाहर का आदमी नहीं है तो क्या सब जूठापूठा कर के रख दें. कोई भी हमारे घर आ जाता है तो हम उस से कम से कम पानी के लिए तो पूछते ही हैं न? तो क्या हम उन्हें अपना जूठा पानी पीने के लिए देंगे? अच्छा लगेगा क्या? औरों के घर में जा कर देखो, कितने सलीके से रहते हैं लोग," अनु कहती.

"ओह, तुम भी न अनु, कितना सोचती हो. सब चलता है. और तुम्हें कैसे पता कि दूसरे अपने घर में कैसे रहते हैं और कैसे नहीं?" कह कर वह अनु को अपनी बांहों में भर कर चूम लेता और हंसते हुए कहता, "लो, मैं ने तुम्हें भी जूठा कर दिया, अब क्या करोगी?"

"उंह," अपना मुंह पोंछते हुए अनु कहती कि उसे यह सब नहीं पसंद.

"पसंद तो करना ही पड़ेगा मेरी जान. समझ लो, अब तुम्हारा मुझ से छुटकारा नहीं है," कह कर वह एक और चुम्मा अनु के गाल पर जड़ कर भाग जाता और अनु खिसिया कर रह जाती थी. गुस्सा तो उसे अपनी सास पर भी आता था कि अक्षत को उन्होंने कुछ नहीं सिखाया. काश, बेटियों की तरह बेटों को भी कुछ सिखाया होता तो आज उसे इतनी दिक्कत न होती.

आज फिर अक्षत ने बोतल से मुंह लगा कर पानी पी लिया तो अनु ने गुस्से से वह बोतल भी बाहर फेंक दी और बोली, "कितनी बार... कितनी बार समझाया मैं ने तुम्हें कि बोतल में मुंह लगा कर पानी मत पिया करो. लेकिन तुम्हें यह बात समझ में क्यों नहीं आती? और तो और, पीने के बाद बचे पानी की बोतल फ्रिज में रख देते हो. क्या भर नहीं सकते बोतल को? नहीं, भरोगे क्यों, मैं जो हूं इस घर की नौकरानी."

लंच का डब्बा डाइनिंग टेबल पर पटकते हुए अनु भुनभुनाई, "कोई

सलीका ही नहीं है इस आदमी में. समझासमझा कर हार गई मैं, लेकिन दिमाग हो तब तो समझे? कभीकभी तो लगता है इस इंसान से शादी कर के मैं ने बहुत बड़ी गलती कर दी."

अनु का बढ़ता गुस्सा देख अक्षत समझ गया कि आज उस की खैर नहीं. इसलिए बेटा, जितनी जल्दी हो सके घर से निकल लो, नहीं तो आज तेरी तो खैर नहीं, अपनेआप में बुदबुदाते हुए अक्षत समय से कुछ मिनट पहले ही औफिस के लिए निकल गया. अक्षत हमेशा ऐसा ही करता था.

जब भी अनु गुस्सा होती थी वह घर से निकल जाता था और तभी आता जब उस का गुस्सा शांत हो चुका होता. शादी के 3 साल गुजर जाने के बाद भी आज तक अनु और अक्षत में एक बार भी लड़ाई इसलिए नहीं हुई क्योंकि उस ने उसे वह मौका ही नहीं दिया. ऐक्सिडैंट तभी होता है जब दोनों तरफ से गाड़ी तेज स्पीड में हो. और अक्षत अपनी गाड़ी की स्पीड हमेशा धीमी रखता था ताकि ऐक्सिडैंट न होने पाए.

लेकिन मन ही मन वह भी झल्ला पड़ता था कभी यह सोच कर कि अब क्या इंसान को अपने घर में भी कायदेकानून से रहना पड़ेगा? फिर क्या फायदा, होटल में ही न रह ले. लेकिन बोलता नहीं था. वरना और बवाल मच जाता घर में. कहा भी गया है, 'एक चुप सौ सुख.' इसलिए अक्षत चुप रहने में विश्वास रखता था. लेकिन अनु को कहां चैन था. वह तो हर समय किसी न किसी बात को ले कर अक्षत को सुनाती ही रहती थी. अक्षत अनु को गुस्सा नहीं दिलवाना चाहता था, पर बेचारे से गलती हो जाती थी तो क्या करे?

अनु और अक्षत की मुलाकात एक फैमिली शादी समारोह में हुई थी. 'हवे तू लौंग वे मैं इलाची... तेरे पीछे आगवाची... तेरे इशक ने मारी... कुड़ी कच्च दी कंवारी...' गाने पर जब शादी में अनु ने डांस किया तो लोग देखते ही रह गए और अक्षत की निगाहें तो अनु पर ऐसे ठहर गईं कि तालियों की गड़गड़ाहट भी उसे सुनाई नहीं पड़ी. जब उस के दोस्त ने हिलाया तो उसे भान हुआ कि गाना खत्म हो चुका है. पूरी शादी में उस की नजर सिर्फ अनु पर ही टिकी रही. गोरी, पतली, छरहरी और अनु की बड़ीबड़ी आंखों पर अक्षत ऐसा मरमिटा कि क्या बताएं.

अनु भी तो लंबे, सांवलेसलोने और घुंघराले बाल वाले अक्षत पर ऐसे फिदा हो गई कि कनखियों से उसे देखे ही जा रही थी. अपने जीवन में उस ने इतना हैंडसम लड़का नहीं देखा था.

शादी के दूसरे दिन दुलहन की सभी सहेलियां दूल्हे को घेरे खड़ी थीं और दुलहन सिर झुकाए, शरमाए एक तरफ सब की बातों का मजा ले रही थी. लेकिन अनु और अक्षत तो एकदूसरे में ही खोए हुए थे. कहां भान था उन्हें किसी की बातों का भी. लेकिन दुलहन सब समझ रही थी कि यहां अलग ही खिचड़ी पक रही है, बल्कि पक चुकी है.

पता चला कि अक्षत दूल्हे के बूआ का बेटा है. फिर तो कोई समस्या ही नहीं थी. दोनों परिवारों की सहमति से दोनों का रिश्ता तय हो गया. सगाई के 2 महीने बाद उन की शादी की डेट भी फिक्स हो गई.

लेकिन इन 2 महीनों में अक्षत का निहायत सादगीभरा व्यवहार, उस का बातबात पर हंस पड़ना, किसी भी बात की टैंशन न लेना और मुश्किलों में भी मुसकराते रहना अनु को बहुत पसंद आया था. समझ गई कि अक्षत ही उस का

परफैक्ट पार्टनर है. शादी के बाद हनीमून के लिए दोनों 15 दिनों के लिए सिंगापुर गए थे. लेकिन वहां से आने के बाद भी जैसे अक्षत उसी मद में चूर था. एक पल के लिए भी वह अपनी अनु को अपनी आंखों से ओझल नहीं होने देना चाहता था. ठेल कर अनु ने ही उसे औफिस जाने को कहा तब उस ने औफिस जौइन किया था. औफिस से आते ही वह अनु को कभी सिनेमा दिखाने, कभी कहीं घुमाने, तो कभी शौपिंग पर ले जाता था.

अकसर रात का खाना दोनों बाहर ही खाते थे. लेकिन अनु को ज्यादा फुजूलखर्ची नहीं पसंद थी. उस का कहना था, पैसे सिर्फ उड़ाने के लिए नहीं कमाए जाते. भविष्य के लिए बचत भी जरूरी है.

अक्षत बहुत खुश था, उसे अनु जैसी सुंदर व समझदार पत्नी मिली जो उसे इतना सपोर्ट करती है, वरना कई पत्नियां तो समझती ही नहीं.

लेकिन वहीं, अनु को अक्षत के व्यवहार से बड़ी कोफ्त होने लगी थी. शुरूशुरू में तो उसे समझ नहीं आया, लेकिन धीरेधीरे अक्षत की आदतें उसे परेशान करने लगीं. अक्षत का बेफिक्री अंदाज, किसी बात को सीरियसली न लेना, साफसफाई से दूरदूर तक कोई नातारिश्ता नहीं रखना, एक ही कपड़े को बिना धोए कईकई दिनों तक पहनना आदि आदतों से अनु को चिढ़ होने लगी थी.

कभीकभी तो अक्षत के कपड़ों से इतनी बदबू आती कि क्या कहें. अक्षत के सौक्स से इतनी गंदी बदबू आई कि अनु को लगा उसे उलटी हो जाएगी. "आखिर कैसे तुम इतनी गंदी तरह से रह सकते हो? घिन्न नहीं आती तुम्हें?" मुंह बनाते हुए अनु बोली, "सच कहती हूं, अगर मुझे पहले पता होता न तुम्हारी इन गंदी आदतों के बारे में, तो..."

"तो, तो, तुम मुझ से शादी न करतीं?" बीच में ही अक्षत बोल पड़ा और अपने वही बदबूदार सौक्स अनु को सुंघाने लगा तो वह जोर से चीख पड़ी.

"ओ ओके ओके. देखो, मैं ने अपना सौक्स फेंक दिया और हाथ भी धो लिया साबुन से,’ जहां अक्षत की हंसी रुक नहीं रही थी वहीं अनु अभी भी मुंह बनाए बैठी थी.

"जानती हो अनु, यह तो कुछ भी नहीं है. एक बार तो मेरे जींसपैंट में चूहे ने 5-6 बच्चे पैदा कर दिए थे. मेरी आदत थी मैं अपनी जींस महीनोंमहीनों तक नहीं धोता था. टंगा रहता दरवाजे के पीछे. जब मन होता, झाड़ कर पहन लेता था," यह सुन कर अनु के तो रोंगटे खड़े हो गए थे.

"दिल्ली में हम 4-5 लड़के 2 कमरे का घर ले कर रहते थे. सब के सब एकजैसे ही थे. किसी को खाना पकाना

सोसाइटी की जो औरतें अपने पति की अच्छाई का बखान करते नहीं थकती थीं, आज उन की सचाई अनु के सामने थी.

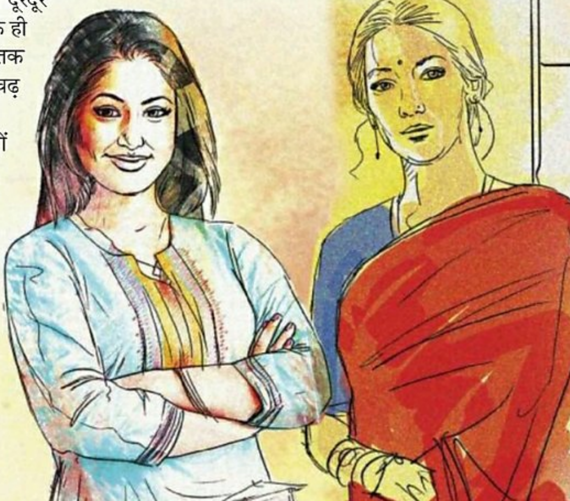

नहीं आता था. इसलिए हम बाहर जा कर खाते थे या घर पर ही मंगवा लिया करते थे. कभीकभी तो पिज्जा के डब्बों में कौकरोच रेंग रहा होता और हम उसे भी साफ कर खा लेते थे. अपना अंडरवियर तो हम कईकई दिनों तक धोते ही नहीं थे. हमारे कमरे में बियर की केन बिखरी देख मकानमालिक चेतावनी भी दे डालते कि ऐसा रहा तो निकाल देंगे यहां से. तब हम सौरी बोल देते थे लेकिन फिर वही करते."

"छि... कितने गंदे होते हो तुम लड़के भी न," अनु ने मुंह बनाया था.

"हां, वह तो है. पर हम जैसे लड़के ज्यादा रचनात्मक होते हैं. उन लड़कों में आज कोई डाक्टर है तो कोई आईएएस औफिसर. मुझे ही देख लो न, टौप का इंजीनियर हूं मैं. तुम खुश रहो अनु, वरना साफसफाई वाला सनकी पति मिल जाता न, तो तुम्हारी तो खैर नहीं होती, मैडम."

अक्षत की दलीलें सुन अनु ने मुंह बिचका दिया और बोली, "अच्छा होता, कम से कम तुम जैसे गंदे इंसान से पाला तो न पड़ता मेरा. न तो तुम में टेबल मैनर्स था और न ही लोगों से बात करने का सलीका. वह सब मैं ने सिखाया है तुम्हें जनाब."

अनु की बात पर अक्षत ने सीने पर हाथ रख सिर झुका कर उसे सलाम किया, "थैंक्यू मैडम, आप का बड़ा उपकार है मुझ पर."

अनु हंस पड़ी थी. अनु के संसर्ग में धीरेधीरे अक्षत ने साफसफाई से रहना, रोज धुले कपड़े पहनना जैसी कुछ बातें तो सीख ली थीं मगर अभी भी उस की कुछ आदतें अनु को परेशान कर देती थीं. अनु की सफाई की सनक के आगे अक्षत हमेशा कमजोर पड़ जाता था. जितना वह अनु को खुश करने की कोशिश करता, उतनी ही उस से गलतियां हो जाती थीं.

अक्षत के औफिस जाते ही अनु रोज की तरह कमरा ठीक करने ही लगी कि बिछावन पर गीला तौलिया देख उस का पारा चढ़ गया. चीख पड़ी वह एकदम से. सिर पकड़ लिया उस ने अपना. जानवर है यह जानवर, मन तो किया अनु का अभी फोन लगा कर उस की खबर ले, तभी उसे चैन पड़ेगा. मगर वह दांत भींच कर रह गई.

कितनी बार कहा है इस इंसान से कि भीगा तौलिया बिछावन पर मत रखा करो. देखो, अलमारी भी खुली पड़ी है. कपड़े निकाल कर बंद करना ही भूल गया. आखिर समझता क्या है अपनेआप को? मैं क्या कोई नौकरानी हूं इस की? सच में, मैं तो तंग आ गई हूं. क्या करूं इस आदमी का?

अनु बड़बड़ा ही रही थी कि तभी दरवाजे की घंटी घनघना उठी. मीना थी. देखा तो वही पानी की बोतल हाथ में लिए चली आ रही है. "किस ने कहा तुम्हें यह बोतल उठा कर लाने को, हां? जाओ वहीं फेंक आओ," कह कर अनु ने खुद ही उस के हाथ से बोतल झपट कर बाहर फेंक दी. मीना अवाक थी कि आज हो क्या गया अनु को?

"अरे दीदी, क्या हुआ, बोतल बाहर क्यों फेंक दी? और आप इतने गुस्से में क्यों हो?" झाड़ू हाथ में लेते हुए मीना बोली, "ओ, लगता है आज भैया से फिर गलती हो गई, तभी आप इतनी लालपीली हुई जा रही हो?" बोल कर मीना हंसी तो अनु का कलेजा जल उठा.

"तू अपना काम कर. ज्यादा पंचायत करने की जरूरत नहीं, समझी. और सुन, चाहे तो वह बोतल लेती जा और फ्रिज में खाना पड़ा है वह भी लेती जा," कह कर

अनु अनमने ढंग से टीवी औन कर बैठ गई. अक्षत के औफिस जाते ही, बाकी काम निबटा लेने के बाद अनु की आदत थी कि एक कप कौफी ले कर टीवी देखने बैठ जाती थी. उस के बाद कुछ देर वह मीना से गप्पें लड़ाती थी.

मगर न तो आज उस का टीवी देखने का मन कर रहा था और न ही मीना से गप्पें लड़ाने का. इसलिए वह मोबाइल ले कर उसे स्क्रौल करने लगी. पर वह भी नहीं, उस में भी उस का मन नहीं लग रहा था आज. वह घर से कहीं बाहर जाना चाहती थी या किसी अपने से बात कर मन हलका कर लेना चाहती थी.

"हैलो भाभी, मम्मी हैं क्या घर पर? अच्छा, मम्मीपापा मामाजी के घर गए हुए हैं? ठीक है, मम्मी आए तो कहना बात करने के लिए," कह कर अनु ने फोन रख दिया. अनु का मायका लखनऊ में था और वह यहां दिल्ली में रहती थी.

मीना देख रही थी अनु भाभी काफी बेचैन नजर आ रही थी. लेकिन डर से वह कुछ पूछ नहीं पा रही थी. मगर जानती है वह अनु गुस्से में क्यों है? जरूर फिर अक्षत भैया ने कोई सामान यहांवहां रख दिया होगा या गंदे हाथों से कुछ छू दिया होगा, इसलिए वह इतने गुस्से में है. दोनों के बीच लड़ाई, बस, इसी कारण तो होती है. वरना, प्यार कम नहीं है इन के बीच.

भाभी जितनी साफसफाई और हर सामान को व्यवस्थित ढंग से रखने में विश्वास रखती है, भैया उस के उलट उतना ही अव्यवस्थित और सफाई से कोई नातारिश्ता नहीं रखने वाला इंसान हैं. कितनी बार भाभी को आप को समझाते हुए उस ने देखा है कि जो सामान जहां से उठाओ, वहीं रख दिया करो. लेकिन फिर भी भैया यह बात भूल जाते हैं और ढूंढ़ने की मशक्कत अनु को करनी पड़ती है.

परसों ही टूथपेस्ट भैया ने प्याज की टोकरी में रख दिया जिसे ढूंढ़तेढूंढ़ते घंटों

हुस्न बचा कर रखना

तुम्हारे चाहने वाले बहुत होंगे,
जी भर कर देखने वाले बहुत होंगे.

माना कि हुस्न के होंगे पुजारी भी,
बदन से खेलने वाले बहुत होंगे.

कद्र होती नहीं है अब मुहब्बत की,
कि अस्मत लूटने वाले बहुत होंगे.

झूठी तारीफों से दिल जीत लेते हैं,
फरेबी दिलजले वाले बहुत होंगे.

तुम्हें खुद को बचा कर रखना है अंजू,
नजर से नोचने वाले बहुत होंगे.

• अंजु दास 'गीतांजलि'

लग गए. भैया तो अपनी उंगलियां दांत पर फिरा कर औफिस चले गए मगर भाभी से बिना ब्रश किए खाया जाता क्या?

अक्षत वाकई मस्तमौला था. बिलकुल बेफिक्रा. उस दिन अनु ने अक्षत को दूध लाने भेजा था और वह यह बोल कर खाली हाथ लौट आया था कि दुकान में दही नहीं मिला.

'देखो, ध्यान से सुनो, दुकान का नाम अंबिका है अंबिका. वहीं से मिठाई ले कर आना. अच्छी मिलती है उस के यहां मिठाइयां,' अनु ने अक्षत को खूब समझाबुझा कर भेजा था. दरअसल, उस दिन अनु के घर कुछ मेहमान आने वाले थे, इसलिए उस ने अक्षत को मिठाई लाने के लिए भेजा था. मगर जब उस ने आ कर यह कहा कि कितना ढूंढ़ा उस ने पर उसे चंद्रिका मिठाई की दुकान कहीं नहीं मिली. तो अनु ने अपना सिर पीट लिया था. अक्षत की ऐसी छोटीछोटी लापरवाहियों के कारण ही कभीकभी अनु को दूसरों के सामने शर्मिंदा होना पड़ जाता था.

उस दिन पड़ोस के ग्रोवर दंपती ने उन्हें अपने घर चाय पर इन्वाइट किया था. मगर वहां भी अक्षत ने अपनी हरकतों से अनु को शर्मिंदा कर दिया. कितनी बार समझाया अनु ने पैर मत हिलाया करो, अच्छा नहीं लगता. लेकिन वह मानता कहां है. उस दिन पैर हिलाते हुए ही उस ने कप में ऐसा जोर का मारा कि वह लुढ़कते हुए दूर जा कर चकनाचूर हो गया. खुद उस ने ही चाय पी कर कप सोफे के नीचे रख दिया था और खुद ही तोड़ दिया. बेचारी ग्रोवर आंटी, कैसा मुंह बन गया था उन का. बनेगा क्यों नहीं, उन के सैट का कप जो टूट गया.

'सौरी आंटी,' कह कर अनु ने ही हाथ जोड़ लिए थे. मगर अक्षत ने हंसते हुए कहा था कि 'अरे, गलती से टूट गया भई, किसी से भी टूट सकता था. इस में सौरी क्यों बोल रही हो, क्यों आंटी?' उस की बात पर ग्रोवर दंपती हंस पड़े थे. पर अनु अंदर ही अंदर सुलग उठी थी.

घर आ कर उस ने अक्षत को खूब लताड़ा था कि वह कहीं भी जाने के लायक नहीं है. सोसाइटी में कैसे उठाबैठा जाता है, कुछ नहीं आता उसे. अक्षत का चाय पीते हुए कभी कपड़ों पर गिरा देना, कपड़ों पर खाने का दाग लगा देना जैसी आदतों से अनु परेशान रहती थी. सोचती, अगर अक्षत उस का अपना बच्चा होता तो खींच कर उस की गलती पर तमाचा जड़ देती. मगर वह उस का पति है.

अनु के मायके में भी जब अक्षत ऐसा कुछ करता, मतलब बिना हाथ धोए ही खाने बैठ जाता और खाते वक्त बातें करता, मुंह से आवाज निकालता तो अनु शर्मिंदा हो जाती थी. अनु के पापा फौज में अफसर थे तो शुरू से ही उस के घर में सब कायदेकानून से रहते आए थे. समय पर उठना, समय पर सोना, खाने के समय बातें न करना आदि बातों का सभी लोग पालन करते थे. लेकिन अक्षत तो सारे नियमकानूनों की धज्जियां उड़ा देता था. कहता, 'जिंदगी एक बार मिलती है, बारबार थोड़े ही जो कायदेकानून में बंध कर रहें. मैं तो भई, खुल कर जीने में विश्वास रखता हूं.'

भले ही अनु के घर वाले कुछ बोलते नहीं थे पर उन के हावभाव से पता तो चल ही जाता था न कि अक्षत का व्यवहार उन्हें पसंद नहीं है. मगर वह उस घर का दामाद है, इसलिए कोई कुछ बोलता नहीं था.

"दीदी, आप कौफी पी लो, अच्छा लगेगा," उस के हाथ में कौफी का मग जब मीना ने पकड़ाया था तो वह चौंक

गई. अपना भी कप ले कर वह वहीं जमीन पर बैठ गई और कहने लगी, “दीदी, एक बात कहूं आप से, बुरा तो नहीं मानोगी न? आप समय की बलवान हो जो आप को अक्षत भैया जैसे पति मिले. हां दीदी, सही कह रही हूं मैं.

“मैं कितने घरों में काम करती हूं. देखा है मैं ने मैडम के साहब लोगों को. कैसे वे अपनी पत्नी पर चिल्लाते हैं, मारतेपीटते हैं उन्हें. वह महिमा मैडम हैं न, अरे वही, आप के चार घर छोड़ कर जिन का घर है. उन के पति तो बाप रे बाप... एकदम शैतान हैं दीदी. उस दिन कैसे वे मेरे सामने ही महिमा मैडम को मारने लगे. यह भी नहीं सोचा कि मैं हूं वहां पर. अगर मैं बीचबचाव न करती तो उन्हें शायद मार ही डालते. एक और बात बताऊं दीदी, महिमा मैडम का पति एक नंबर का शराबी इंसान है और वह तो...” बोलतेबोलते मीना चुप हो गई.

“चुप क्यों हो गई, बोल न मीना. क्या वह तो...”

अनु जानना चाहती थी कि जो महिमा हमेशा यह दिखाने की कोशिश में रहती है कि उस का पति कितना ‘वेलमैनर्ड’ आदमी है आखिर वह है क्या?

“बोल न मीना, मैं किसी को नहीं बताऊंगी, सच्ची.”

“दीदी, महिमा मैडम के पति का अपने ही औफिस की एक महिला के साथ गहरा संबंध है. वे उस महिला के साथ... क्या कहते हैं, हां, लिवइन में रहते हैं, जैसे बिना शादी किए लड़केलड़कियां साथ रहते हैं न, वैसे ही. अपने घर तो वह कभीकभार ही आते हैं वह भी सिर्फ अपने बच्चों की खातिर.”

लेखन

लेखन का काम सैक्स की तरह होता है, पहले आप खुद के आनंद के लिए लिखते हो, उस के बाद फिर अपने दोस्तों के लिए लिखते हो और आखिर में पैसे कमाने के लिए लिखते हो.

–वर्जीनिया वुल्फ

सरिता

“क्या बात कर रही तू? महिमा का पति किसी और औरत के साथ लिवइन में रहता है?” अनु को तो विश्वास ही नहीं हो रहा था कि जो वह सुन रही है, सही है. एक दिन महिमा ने ही उस से कहा था कि उस का पति उस के सिवा किसी और को नजर उठा कर भी नहीं देखता, इतना प्यार करता है वह उस से.

“लेकिन तुम्हें यह सब कैसे पता मीना?”

“एक दिन मैं जल्दी ही उन के घर काम करने पहुंच गई, क्योंकि मुझे अपने बेटे के स्कूल जाना था. जैसे ही मैं उन के घर गई. महिमा मैडम रोरो कर फोन पर किसी से बोल रही थीं कि आखिर उस औरत में ऐसा क्या है जो मुझ में नहीं है. लोग पूछते हैं तो झूठ बोलना पड़ता है कि मेरे पति ज्यादातर टूर पर ही रहते हैं. लेकिन सच तो यह है कि वे उस औरत के साथ लिवइन

में रहते हैं. अपनी कमाई का पैसा भी वे उस औरत पर ही ज्यादा खर्च करते हैं. मुझे तो बस गिनाचुना पैसा ही देते हैं. शायद वे अपनी मां से बात कर रही थीं और मुझे देखते ही चुप हो गईं."

"ओह, यह बात है. और देखो, कहती थी कि उस का पति ज्यादातर औफिशियल टूर पर रहता है, इसलिए उसे ही सारा कुछ मैनेज करना पड़ता है और बच्चों को ट्यूशन तो वह टाइमपास के लिए पढ़ाती है. हां, यह भी कहती थी कि उस का पति उस के लिए महंगेमहंगे गिफ्ट लाता है. इस का मतलब वह सब झूठ बोलती थी," अनु बोली.

"हां दीदी, सब झूठ ही था. लेकिन दया आती है मुझे उन पर, सच में. ऐसा पति किसी को भी न मिले. मेरा पति भी मारतापीटता है, पर प्यार भी कम नहीं करता है मुझे. लेकिन दीदी, यह बात आप किसी को बताना मत. मेरी नौकरी का सवाल है," मीना ने हाथ जोड़े तो अनु ने उसे विश्वास दिलाया कि वह निश्चिंत रहे, यह बात वह किसी को भी नहीं बताएगी.

यह अंक
आप को कैसा लगा

इस अंक की कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई, आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना पसंद करेंगे? हमें बताएं, हम आप की आलोचनाओं का भी और सुझावों का भी स्वागत करेंगे.

पत्र संपादक, सरिता, दिल्ली प्रैस, ई-8, रानी झांसी रोड, झंडेवाला, नई दिल्ली-110055 पर डाक से या editor@delhipress.biz **पर ईमेल से या 08527666772 पर एसएमएस या व्हाट्सऐप से भेजें.**

–संपादक

सोसाइटी की जो औरतें अपने पति की अच्छाई का बखान करते नहीं थकती थीं, आज उन के पतियों की सचाई जान कर अनु को अक्षत का मोल समझ आ गया कि वह कितना अच्छा इंसान है. हमेशा अनु अक्षत में कमियां ही निकालती आई है, कभी उस की खूबियों को देखा ही नहीं उस ने.

अनु अपनी सहेलियों के पति से, बहन के पति से अक्षत की तुलना किया करती थी और सोचती कि अक्षत उन जैसा क्यों नहीं है? क्यों उसे ही ऐसे इंसान से पाला पड़ा जिस में कोई सलीका ही नहीं है. लेकिन आज उसे समझ में आ गया कि अक्षत तो वह हीरा है जो दीया ले कर ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलेगा. हां, कुछ कमियां हैं उस में तो वह कौन सी बड़ी दूध की धुली है.

हमेशा उस के सिर पर सफाई की सनक सवार रहती है. यह नहीं देख पाती कि कैसे उस का पति उसे प्यार से निहार रहा है. बस, यही दिखता है कि अक्षत ने यह काम बिगाड़ दिया या उस ने बिना हाथ धोए वह क्यों छू दिया.

लेकिन वहीं अक्षत को कभी भी अनु में कोई कमी नजर नहीं आई. आज भी अनु उस के लिए वही है जो 3 साल पहले थी. अक्षत कविता लिख रहा हो या गीत गुनगुना रहा हो, उस की नायिका अनु ही होती है. अनु के सिवा उस ने कभी भी किसी और के बारे में सोचा तक नहीं. मगर वह जताता नहीं है. शादी के बाद जब अनु ने पहली बार करवाचौथ का व्रत

रखा था और भूखप्यास के कारण वह बेहोश हो कर गिर पड़ी थी. तब अक्षत ने सब के मना करने के बावजूद अनु को पानी पिला दिया था यह बोल कर कि अनु कोई व्रतउपवास नहीं करेगी आज से.

अनु भूखी नहीं रह सकती तो क्यों उस के साथ जबरदस्ती की जा रही है इस घर में? और पति की लंबी उम्र की जिम्मेदारी क्या औरतों की ही है? जिसे जितना जीना है, जीता ही है, किसी के व्रतउपवास करने या न करने से किसी की आयु लंबी या छोटी नहीं हो जाती. ढकोसला है यह सब और कुछ नहीं. अक्षत के मुंह से ये बातें सुन कर सब उसे जोरू का गुलाम बुलाने लगे. लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि अनु उस के लिए सब से इंपौर्टेंट थी और उसे कष्ट हो, यह वह सहन नहीं कर सकता था.

"दीदी, मैं घर जा रही हूं," मीना ने जब यह कहा तो अनु का ध्यान टूटा.

"दीदी, एक बात कहूं? भैया बहुत ही अच्छे इंसान हैं. मैं कई घरों में काम करती हूं, इसलिए पुरुषों की नजरों को अच्छे से पहचानती हूं. पर भैया ने कभी मुझे उन नजरों से नहीं देखा. जब भी मैं उन्हें चायपानी देने गई, उन की नजरें नीचे ही होती हैं. फिर कहती हूं, आप समय की बहुत बलवान हो जो आप को अक्षत भैया जैसे पति मिले."

आज मीना के मुंह से अक्षत के लिए यह सब सुन कर जहां अनु गर्व महसूस कर रही थी, वहीं खुद के व्यवहार पर उसे तरस आ रहा था. क्या एक साफसफाई न रहना इंसान के पूरे व्यक्तित्व को बुरा बना देता है?

"दीदी, कल मैं नहीं आऊंगी. वह कल मेरी... शादी की वर्षगांठ है तो..." कहते हुए मीना शरमा रही है कि कल वह अपने पति के साथ कहीं घूमने जाएगी.

"नहीं आना, ठीक है, पर रुक जा एक मिनट," कह कर अनु कमरे में गई और एक पैकेट उठा लाई.

"यह रख, साड़ी है इस में, कल पहनना और थैंक्यू मेरी आंखें खोलने के लिए," आज अनु की आंखें खुल चुकी थीं कि जैसा वह अपने पति को समझती है वैसा नहीं है वह.

हमेशा मैं उस के सम्मान को ठेस पहुंचाती रही यह बोलबोल कर कि उस में मैनर्स नाम की कोई चीज ही नहीं है. कुछ नहीं आता उसे. लेकिन मेरी हर बात को अक्षत हंस कर लेता. आज तक कभी भी ऐसा नहीं हुआ जब मैं ने किसी चीज की डिमांड की और अक्षत ने वह ला कर न दी हो मुझे. आधी रात को भी अगर मैं बोल दूं कि मुझे आइसक्रीम खाने का मन कर रहा है तो वह दौड़ कर ले आता है. और मैं क्या करती हूं उस के साथ? बातबात पर उसे झिड़कती रहती हूं, जैसे वह मेरा पति नहीं, नौकर हो.

उस से ही मेरी यह शानोशौकत है और उसे ही मैं नीचा दिखाती रहती हूं. यह सब सोचती हुई अनु की आंखें गीली हो गईं. तभी पीछे से किसी का स्पर्श पा कर उस ने गरदन घुमाई तो देखा सामने अक्षत खड़ा था.

"अक्षत, मुझे माफ कर दो. मैं ने तुम्हारे साथ..." बोलती हुई अनु का गला रुंध गया. कुछ न बोल कर अक्षत ने उसे अपने सीने से लगा लिया और उस के उलझे बालों को समेटते हुए बोला, "यहां पास में ही आइसक्रीम पार्लर खुला है, चलो वहां चलते हैं," फिर दोनों खिलखिला कर हंस पड़े और अनु एक बार फिर कस कर अक्षत के गले लग गई. आज उसे अक्षत पर बहुत प्यार जो आ रहा था. ●

कहानी

बंटवारा

• आरती पंड्या

Rajesh.na
सरिता

लक्ष्मी बचपन में परिस्थितिवश पाकिस्तान पहुंच कर अमीरन बना दी गई लेकिन उस के भीतर लक्ष्मी मौजूद रही. वह अपने परिवार वालों से मिलने को हिंदुस्तान आना चाहती थी, और आई भी लेकिन बुजुर्गावस्था में. और फिर...

चूल्हे पर रोटियां सेंकतेसेंकते फौजिया सामने फर्श पर बैठे पोतेपोतियों को थाली में रोटी और रात का बचा सालन परोसती जा रही थी, साथ ही, बगल में रखी टोकरी में भी रोटियां रखती जा रही थी ताकि शौहर और बेटों के लिए समय से खेत पर खाना भेज सके. तभी उस की सास की आवाज सुनाई पड़ी, "अरी खस्मनुखानिये, आज मैनू दूधरोट्टी मिल्लेगी कि नई?"

सास की पुकार पर फौजिया ने जल्दी से पास रखे कटोरदान में से 2 बासी रोटियां निकाल कर एक कटोरे में तोड़ कर गुड़ में मींसीं और उस में थोड़ा पानी व गरम दूध डाल कर अपनी बगैर दांत वाली सास के खाने लायक लपसी बना कर पास बैठी बेटी को कटोरा थमा दिया, "जा, दे आ बुड्ढी नूं." कटोरा तो पकड़ लिया रजिया ने, लेकिन जातेजाते अम्मी को ताना जरूर दे गई, "जब तू ताज्जी रोटी सेंक रही है हुण बेबे नूं बास्सी रोटी किस वास्ते दे दीं?"

फौजिया ने कोई जवाब न दे कर गुस्से से बेटी को घूरा और वहां से जाने का इशारा किया तो रजिया बड़बड़ाती हुई चली गई. फौजिया ने अपनी बड़ी बहू सलमा को आवाज दे कर खेत में खाना पंहुचाने को कहा और जल्दीजल्दी सरसों का साग व कच्ची प्याज फोड़ कर रोटियों के साथ टोकरी में रख कर टोकरी एक तरफ सरका दी.

रजिया को अपनी दादी के प्रति अम्मी के दोगले व्यवहार से बहुत चिढ़ है. लेकिन उस का कोई वश नहीं चलता, इसीलिए हर रोज अपनी अम्मी से छिपा कर वह दादी के लिए कुछ न कुछ खाने का ताजा सामान ले जा कर चुपचाप उसे खिला देती है और दादी भीगी आंखों व भरे गले से अपनी पोती को पुचकारती रहती हैं. आज जब रजिया नाश्ते का कटोरा ले कर बेबे के पास गई तो वह अपनी फटी कथरी पर बैठी अपने सामने एक पुरानी व मैली सी पोटली खोल कर उस में कुछ टटोल रही थी पर उस की आंखें अपनी पोती के इंतजार में दरवाजे की तरफ ही गड़ी हुई थीं. रजिया ने रोटी का कटोरा बेबे को पकड़ा कर अपने दुपट्टे के खूंट में बंधे 3-4 खजूर निकाल कर झट से तोड़

कर कटोरे में डाले और बेबे को जल्दी से रोटी खत्म करने को कहा. बेबे की बूढ़ी आंखों में खजूर देख कर चमक आ गई और उस ने कटोरा मुंह से लगा लिया. तभी रजिया की नजर खुली पोटली पर पड़ी जिस में किसी बच्ची की लाख की चूड़ियां, चांदी की पतली सी हसली और पैरों के कड़े एक छींटदार घाघरे व चुनरी में लिपटे रखे हुए थे. बेबे ने एक हाथ से पोटली पीछे सरकानी चाही तो रजिया ने पूछा, "बेबे, आ की ?"

पोती के सवाल को पहले तो बेबे ने टालना चाहा मगर रजिया के बारबार पूछने पर लाख की लाल चूड़ियों को सहलाती हुई बोली, "ये म्हारी सचाई, म्हारो बचपण छे री छोरी."

दादी को अलग ढंग से बात करते सुन रजिया को थोड़ी हैरानी हुई और उस ने हंस कर पूछा, "अरी बेबे, आज तू कैसी गल्लां कर दी पई ?" बेबे ने चेहरा उठाया, तो आंखों में आंसू डबडबा रहे थे. कुछ देर रुक कर बोली, "आज मैं तैनू सच्च दसां पुत्तर," और फिर बेबे ने जो बताया उसे सुन कर रजिया का कलेजा कांप उठा और वह बेबे से लिपट कर रोते हुए बोली, "बेबे, मैं तैनू जरूर त्वाडे असली टब्बर नाल मिलावां गी. तू ना घबरा," और अपने आंसू पोंछती हुई वह खाली कटोरा ले कर आंगन में आ गई.

रजिया 18-19 साल की एक संजीदा और समझदार लड़की है जो अपने अनपढ़ परिवार की मरजी के खिलाफ जा कर अपनी एक सहेली की मदद से 8वीं तक की पढ़ाई कर चुकी है और अब उसी सहेली अफशां के स्मार्टफोन के जरिए फेसबुक व व्हाट्सऐप जैसी आधुनिक दुनिया की बातों के बारे में भी जान गई है. यों तो रजिया के अब्बू और तीनों भाई उस का घर से निकलना पसंद नहीं करते पर अफशां चूंकि गांव के सरपंच अजीबुर्रहमान की बेटी है, इसलिए उस के घर जाने की बंदिश रजिया पर नहीं है. अफशां लाहौर के एक कालेज में पढ़ती है और छुट्टियों में ही घर आती है. इसलिए उस से मिल कर शहरी फैशन और वहां के रहनसहन के बारे में जानने की उत्सुकता रजिया को अफशां के घर ले जाती है.

रजिया के अब्बा 4 भाई और 3 बहनें थीं जिन में से सब से बड़ी बहन का पिछले साल इंतकाल हो गया. बाकी 2 बहनें अपनेअपने परिवारों के साथ आसपास के गांवों में रहती हैं और चारों भाई इसी गांव में पासपास घर बना कर रहते हैं. हालांकि इन की बीवियां एकदूसरे को जरा भी पसंद नहीं करती हैं मगर खेतों का बंटवारा अभी तक नहीं हुआ है. इसलिए सभी भाई एकसाथ खेतों में काम करते हैं और उन की बीवियों को जगदिखाई के लिए अपनेपन का नाटक करना पड़ता है.

सभी भाइयों के बच्चे अंगूठाछाप हैं क्योंकि उन के खानदान में पढ़ाईलिखाई को बुरा माना जाता है. रजिया ने अफशां की मदद से जो थोड़ी किताबें पढ़ लीं हैं उस की वजह है रजिया का मंगेतर जहीर, जो चाहता था कि निकाह से पहले रजिया थोड़ा लिखनापढ़ना सीख ले. वह खुद भी 12वीं पास कर के पास ही के कसबे में नौकरी करता है और साथ ही, आगे की पढ़ाई भी कर रहा है. वह हमेशा रजिया को आगे और पढ़ने के लिए कहता रहता है. लेकिन रजिया के अब्बू उसे किसी स्कूल में भेजने के खिलाफ हैं, इसलिए अफशां से ही जो भी सीखने को मिल जाता है उसी से रजिया तसल्ली कर लेती है.

पाकिस्तान में जैसे ही अफशां ने संजय से बात की वह खुशी के मारे दौड़ती हुई रजिया के पास पहुंची.

आज बेबे की बातें सुनने के बाद रजिया ने मन ही मन तय किया कि वह हर हाल में अपनी बेबे को उस के अपनों से मिलवा कर रहेगी. इस के लिए चाहे उसे अपने खानदान से लड़ाई ही क्यों न करनी पड़े. मगर सिर्फ तय कर लेने से तो काम बनेगा नहीं, उस के लिए कोई राह भी तो निकालनी पड़ेगी. तभी रजिया को अफशां के फोन पर देखे फेसबुक के देशविदेश के लोगों का खयाल आया और वह तुरंत अफशां के घर की तरफ लपक ली.

सुबहसुबह रजिया को आया देख कर हैरान अफशां ने आने की वजह पूछी, तो रजिया उस के कंधे पर सिर रख कर सिसकने लगी. अफशां उसे अपने कमरे में ले गई और आराम से बैठा कर उस की परेशानी की वजह पूछी. तब रजिया ने अपनी बेबे का पूरा इतिहास उस के सामने रख दिया. "बाजी, बेबे हिंदुस्तानी हैं." रजिया की यह बात सुन कर अफशां ने हंस कर कहा कि पाकिस्तान में बसे आधे से ज्यादा लोग हिंदुस्तानी ही हैं क्योंकि बंटवारे के वक्त वे लोग यहां आ कर बसे हैं. "ना बाजी, बेबे साडे मजहब दी नहीं हैगी. और फिर रजिया ने बेबे की पूरी आपबीती अफशां को सुनाई.

विभाजन के समय बेबे 13-14 साल की बच्ची थी और राजस्थान के एक गांव में रहती थी. उसे अपने गांव का नाम व पता तो अब याद नहीं है लेकिन इतना जरूर याद है कि उस के गांव में मोर बहुत थे और उसी बात के लिए उस का गांव मशहूर था. परिवार में अम्मा, बापू के अलावा 3 भाई और 1 बहन थी. बहन व भाइयों के नाम उसे आज भी याद हैं- बंसी, सरजू और किसना 3 भाई और बहन का नाम लाली. उस का बापू कालूराम गांव के जमींदार के खेतों में काम करता था और अम्मा भी कुंवरसा (जमींदार) के घर में पानी भरने व कपड़ेभांडे धोने का काम करती थी.

अपने छोटे बहनभाइयों को लक्ष्मी (बेबे) संभालती थी. बापू ने पास के गांव में लक्ष्मी का रिश्ता तय कर दिया था. लक्ष्मी का होने वाला बिनड़ा चौथी जमात में पढ़ता था और उस की परीक्षा के बाद दोनों के लगन होने की बात तय हुई थी.

उसी दौरान देश का विभाजन होने की खबर आई और चारों तरफ हड़कंप सा मचने लगा. उस के गांव से भी कुछ मुसलमान परिवार पाकिस्तान जाने की तैयारी करने लगे. लक्ष्मी के बापू ने उस की ससुराल वालों से हालात सुधरने के बाद लगन करवाने के लिए कहा तो लक्ष्मी के

होने वाले ससुर ने कहा कि ब्याह बाद में कर देंगे, पर सगाई अभी ही करेंगे.

सगाई वाले दिन हाथों में मेहंदी लगा व नया घाघराचोली पहन कर लक्ष्मी तैयार हुई. अम्मा ने फूलों से चोटी गूंथी तो लक्ष्मी घर के एकलौते शीशे में बारबार जा कर खुद को निहारने लगी. आंगन में ढोलक बज रही थी और आसपास की औरतें बधाइयां गा रही थीं. फिर उस की होने वाली सास ने लक्ष्मी को चांदला कर के हंसली व कड़े पहनाए और हाथों में लाललाल चूड़ियां पहना कर उस को सीने से लगा लिया.

घर में गानाबजाना चल रहा था, तब मां की आंख बचा कर लक्ष्मी अपने गहने व कपड़े सहेलियों को दिखाने के लिए झट से बाहर भाग गई व दौड़ती हुई खेतों की तरफ चली गई. बहुत ढूंढ़ा, पर उसे वहां कोई भी सहेली खेलती हुई नहीं मिली. हां, खेतों के पास से कई खड़खड़ों में भर कर लोगों की भीड़ कहीं जाती हुई जरूर दिखाई दी.

लक्ष्मी वापस लौटने लगी, तभी किसी ने उसे पुकारा. उस ने पलट कर देखा. उस की सहेली फातिमा एक खड़खड़े में बैठी उसे आवाज दे रही थी. लक्ष्मी दौड़ कर उस के पास गई और उस से पूछने लगी कि वह कहां जा रही है? फातिमा ने बताया कि वह पाकिस्तान जा रही है और अब वहीं रहेगी. लक्ष्मी अपनी सहेली से बिछुड़ने के दुख से रोने लगी. तभी फातिमा के अब्बू जमाल चचा ने लक्ष्मी को झट से हाथ पकड़ कर अपने खड़खड़े में बैठा लिया और कहा कि जब तक चाहे वह अपनी सहेली से बात कर ले, फिर वह उसे नीचे उतार देंगे. खड़खड़ा चल पड़ा और दोनों सहेलियां बातें करते हुए गुट्टे खेलती रहीं. बीचबीच में जमाल बच्चियों को गुड़ के लड्डू खिलाता जा रहा था. इन्हीं सब में वक्त का पता ही न चला और घर जाने का खयाल लक्ष्मी को तब आया जब जमाल चचा ने उसे अपने खड़खड़े से उतार कर दूसरी ऊंटगाड़ी में बैठा दिया.

उस ने चारों तरफ निगाह घुमाई तो देखा कि वह अपने गांव से बहुत दूर रेगिस्तानी रास्ते में है और वहां ढेर सारी भीड़ गांव से उलटी दिशा में चली जा रही है. लक्ष्मी यह देख कर ऊंटगाड़ी से कूदने लगी तो गाड़ी में बैठे दाढ़ी वाले आदमी ने उस का हाथ कस कर पकड़ लिया और फिर एक रस्सी से

लक्ष्मी को किशनचंद ने बताया कि बंसी भैया का 2 वर्ष पहले देहांत हो गया. सबकुछ अब बदल चुका था.

उस के हाथपैर बांध कर अपनी अम्मा के पास बैठाते हुए बोला कि वह उस को अपने साथ पाकिस्तान ले जा रहा है क्योंकि उस ने जमाल को पूरे 30 रुपए दे कर लक्ष्मी को खरीदा है और अब वह उस की बीवी है. लाचार लक्ष्मी पूरे रास्ते रोती रही. पर न उस आदमी को रहम आया, न ही उस की बूढ़ी अम्मा को.

गफूर नामक वह आदमी भी राजस्थान के किसी गांव से ही आया था. पाकिस्तान पहुंच कर इस गांव में उस ने अपना डेरा डाल दिया और धीरेधीरे अच्छा पैसा कमाने लगा. आते ही गफूर ने यह मकान और कुछ खेत यह सोच कर खरीद लिए कि उस की गिनती गांव के रईसों में होने लगेगी और लोग उस की इज्जत करेंगे. मगर जिसे अपना असली मुल्क समझ कर वह आया था वहां तो उसे हमेशा परदेसी का ही दर्जा दिया गया और अपनी इस घुटन व झुंझलाहट को वह अमीरन यानी लक्ष्मी पर उतारता था.

दिनभर उस की मां अमीरन को मारतीपीटती रहती और रात को गफूर अपना तैश उस बच्ची पर निकालता. उस की सास ने पहले तो उसे डराधमका कर गोश्त पकाना सिखाया और उस से भी मन नहीं भरा, तो मांबेटे ने कई दिनों तक भूखा रख कर उसे जबरदस्ती गोश्त खिलाना भी शुरू कर दिया और आखिर उस को लक्ष्मी से अमीरन बना कर ही दम लिया. जब तक अमीरन 20 वर्ष की हुई तब तक 3 बच्चे जन चुकी थी. धीरेधीरे खानदान बढ़ता गया और अमीरन के अंदर की लक्ष्मी मरती गई.

अमीरन (लक्ष्मी) के बच्चे छोटेछोटे थे, तभी गफूर की मौत हो गई और लक्ष्मी की परेशानियां और भी बढ़ गईं क्योंकि अकेली औरत जान कर गांव वालों ने उस के खेतों पर कब्जा करने की कोशिश तो शुरू कर ही दी, साथ ही, कई लोगों ने उस को अपनी हवस का शिकार भी बनाना चाहा. और जब एक दिन खेत में काम करते समय बगल के खेत वाले अब्दुल ने उस को धोखे से पकड़ कर उस के साथ जबरदस्ती करनी चाही तो अमीरन के अंदर की राजस्थानी शेरनी जाग गई और उस ने घास काटने वाले हंसिए से अब्दुल की गरदन काट डाली.

गांव में उस की इस हरकत से हंगामा मच गया और उस को पंचायत में घसीट कर ले जाया गया. लेकिन लक्ष्मी डरी नहीं. उस ने साफसाफ कह दिया कि जो भी उस के खेतों की तरफ या उस की तरफ बुरी नजर डालेगा उस का वह यही हश्र करेगी.

कुछ लोग उस की इस जुर्रत के लिए उसे पत्थरों से मारने की सजा देने की बात करने लगे और कुछ लोगों ने गांव से निकाल देने की सलाह दी. लेकिन गांव के सरपंच, जो एक बुजुर्गवार थे, ने फैसला अमीरन के हक में करते हुए गांव वालों को चेतावनी दी कि कोई भी इस अकेली औरत पर जुल्म नहीं करेगा वरना उस आदमी को सजा दी जाएगी.

सरपंच की सरपरस्ती के कारण लक्ष्मी अपनी मेहनत से अपने बच्चों को पालने लगी. बड़ा बेटा अकरम जब खेतों में अम्मी की मदद करने लायक हो गया तो लक्ष्मी को थोड़ा आराम मिला. लेकिन उसे हमेशा इस बात का अफसोस रहा कि उस के अपने बच्चों ने भी कभी अपनी अम्मी का साथ नहीं दिया. कितनी बार उस ने अपने बेटों की खुशामद की कि एक बार उसे हिंदुस्तान ले जा कर उस के भाइयों से मिलवा दें लेकिन उन लोगों की निगाहों में तो अम्मी

के नाते वाले सब काफिर थे और काफिरों से नाता रखना उन के मजहब के खिलाफ है. इसलिए हर बार बेटों ने उस के अनदेखे परिवार वालों को दोचार गालियां देते हुए लक्ष्मी (अमीरन) को काफिरों के पास जाने की जिद छोड़ देने को कहा.

अमीरन ने गांव वालों से भी कई बार खुशामद की कि उसे हिंदुस्तान भिजवाने का कुछ इंतजाम करवा दें. कुछ लोगों ने तो उस की बात पर कान ही नहीं दिए लेकिन गफूर के एक दूर के रिश्तेदार कादिर ने पास के एक गांव से 2 लोगों को ला कर उस के सामने खड़ा कर दिया और बोला, 'परजाई, तेरे प्रा नू लै आया.' पहले तो अमीरन उन को देख कर खुश हो गई लेकिन जैसे ही उस ने उन दोनों के नाम पूछे तो कादिर का झूठ खुल गया क्योंकि उन नकली भाइयों ने अपने नाम जाकिर और हशमत बताए. बस, फिर क्या था, अमीरन ने झाड़ू से पीटपीट कर तीनों को घर से बाहर निकाल दिया और कादिर को दोबारा इस तरफ आने पर जान से मार देने की धमकी दे दी.

वक्त गुजरता गया और धीरेधीरे चारों बेटों ने खेतीबाड़ी पूरी तरह से संभाल ली. लक्ष्मी को पुराने बेकार सामान की तरह घर के एक कोने में पटक दिया. रहीसही कसर बहुओं ने अपनी सास की दुर्दशा कर के पूरी कर दी. धीरेधीरे चारों बेटे अलगअलग घर बसा कर रहने लगे और मां को बड़े बेटे के पास छोड़ गए. तब से लक्ष्मी अकरम के परिवार के साथ रह रही है और उन लोगों द्वारा किए जाने वाले अपमान को सह रही है. लेकिन दुख के इस अंधेरे में रजिया उस के लिए उम्मीद की किरण बन कर हमेशा उस के साथ खड़ी रहती है.

सारी बात सुन कर अफशां ने रजिया से पूछा, "रज्जो, हुण त्वाडे दिमाग विच की चलदा प्या मैनू दस." तब रजिया ने उस से पूछा कि क्या वे बेबे की मदद करने के लिए फेसबुक पर बेबे के परिवार वालों को ढूंढ़ने की कोशिश करेगी? अफशां ने जवाब दिया कि बगैर नामपता जाने फेसबुक पर किसी को ढूंढ़ना मुश्किल है और बेबे को अपने भाइयों के पूरे नाम भी मालूम नहीं हैं. और यह भी जरूरी नहीं है कि बेबे के परिवार वाले लोग फेसबुक पर हों.

रजिया यह सुन कर निराश हो गई. तब अफशां ने कुछ सोच कर लक्ष्मी की पूरी कहानी और मोर गांव का जिक्र करते हुए एक लेख फेसबुक पर पोस्ट किया और साथ ही, लोगों से प्रार्थना की कि इस बारे में कोई भी जानकारी होने पर तुरंत सूचित करें.

पोस्ट डाले कई दिन बीत गए. लेकिन किसी का कोई जवाब नहीं आया. अफशां निराश हो गई और रजिया से बोली कि शायद बेबे को उस के परिवार से मिलवाना संभव नहीं होगा. मगर रजिया ने उम्मीद नहीं छोड़ी और अफशां को दोबारा लोगों से अपील करने को कहा जिस पर अफशां ने एक बार फिर लोगों से मदद की अपील की.

रजिया के गांव से 4-5 सौ किलोमीटर दूर बीकानेर के एक दफ्तर में बैठे मनीष राठौर ने जब अपने फेसबुक के पन्ने पर लक्ष्मी की कहानी पढ़ी तो उस का ध्यान सब से पहले मोर गांव ने खींचा और उस ने फौरन अपने मित्र संजय मेघवाल को फोन मिलाया जो मूलरूप से मोर गांव का रहने वाला है. "संजय, तू ने फेसबुक पर लक्ष्मी की कहानी देखी?" संजय ने शायद जवाब नहीं में दिया क्योंकि मनीष

ने उसे बताया कि कहानी किसी लक्ष्मी नाम की महिला से संबंधित है जो मोर गांव से पार्टीशन के समय गायब हुई थी. “यार, जल्दी से पढ़ पूरा किस्सा, हो सकता है तेरे पापा या दादाजी इस औरत को जानते हों.”

मित्र के आग्रह पर संजय ने पूरा किस्सा फेसबुक पर पढ़ा तो उसे खयाल आया कि बहुत पहले दादू ने एक बार जिक्र तो किया था अपनी किसी रिश्तेदार के गायब होने का.

दफ्तर से शाम को घर पंहुचने पर संजय ने अपने दादू को लक्ष्मी की कहानी के बारे में बताया तो किशन चंद मेघवाल तुरंत पलंग पर सीधे बैठ गए और खुश हो कर चिल्लाए, “म्हारी बीरी मिली गई.” दादू से इस प्रतिक्रिया की उम्मीद संजय को हरगिज न थी. उस ने दादू को तकिए से टिका कर बैठाते हुए पूछा कि क्या लक्ष्मी उन की बहन का नाम है?

किशनचंद ने आंसू पोंछते हुए हामी भरी और बताया कि वे उस समय करीब 5 वर्ष के रहे होंगे, इसलिए ज्यादा कुछ याद नहीं है पर उस दिन घर में खूब रौनक थी. उन को लड्डू खाने को मिले थे और घर में गानाबजाना हो रहा था. लेकिन कुछ देर बाद ही शोर मचने लगा कि लक्ष्मी गायब हो गई है और मासा रोने लगी थी. सब ने बहुत ढूंढ़ा लेकिन बीरी कहीं नहीं मिली. मासा ने तो इसी दुख में बिस्तर पकड़ लिया और जल्दी ही दुनिया से चली गईं. परिवार वाले भी धीरेधीरे बीरी को भूल गए. “के संजय बेटा, म्हारी बात हो सके छे बीरी से?” किशनचंद ने पोते से पूछा.

निश्चय

यह निश्चय करना कि आप को क्या नहीं करना है उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि यह निश्चय करना कि आप को क्या करना है.

– स्टीव जौब्स

सरिता

“पता करता हूं दादू,” संजय ने जवाब दिया और फिर से फेसबुक पर लक्ष्मी की कहानी पर नजर दौड़ाने लगा तो नीचे एक व्हाट्सऐप नंबर दिखाई दिया. संजय ने तुरंत उस नंबर पर मैसेज कर के अपना फोन नंबर भेजा और वीडियोकौल करने को कहा. इस के बाद उस ने यह खबर मनीष को दी और फिर अपने पापा व मम्मी को बताने गया. पापा तो खबर सुन कर खुश हो गए लेकिन मां ने एक सवाल खड़ा कर दिया, “तुम्हें क्या मालूम कि ये असली लक्ष्मी हैं या आतंकवादियों की नई चाल? तुम्हारे पास क्या सुबूत है कि वह औरत बाबूजी की बहन ही हैं? जानते तो हो कि आजकल न जाने कितने धोखेबाज झूठी कहानियां बना कर लोगों को लूटते रहते हैं. तुम तो इन चक्करों से दूर ही रहो बेटा.”

मां की बात में दम तो था लेकिन संजय का मन कह रहा था कि एक बार इस कहानी की सचाई जाननी जरूरी है. उधर

पाकिस्तान में अफशां ने जैसे ही संजय मेघवाल का संदेश और फोन नंबर देखा, वह रजिया के घर की तरफ दौड़ी. रजिया की भाभियां और अम्मी आंगन में बैठ कर गेहूं साफ कर रही थीं.

अफशां को अपने घर आया देख कर वे सब चौंक गईं और अफशां उन लोगों को इतना हैरान देख कर अपने आने की वजह उन लोगों को बताने ही वाली थी कि तभी बेबे की कोठरी से निकलते हुए रजिया की नजर अफशां पर पड़ी और वह अफशां बाजी चिल्लाती हुई दौड़ कर उस के पास आई व उस का हाथ पकड़ कर बहाने से उसे छत पर ले गई. अफशां ने उसे बताया कि वह बेबे की बात उन के भाई से करवाने के लिए यहां आई है, इसलिए अभी बेबे के पास चलना जरूरी है.

रजिया ने मारे खुशी के अफशां का हाथ पकड़ कर उस को नचा डाला और फिर उसे ले कर बेबे के पास गई.

फौजिया ने बेटी को अफशां के साथ बेबे के पास जाते हुए देखा तो वह लपक कर आई और रजिया से बोली कि बेबे की कोठरी में तो बहुत गरमी है, इसलिए अफशां को बैठक में ले जा कर बैठाए. उस पर अफशां ने कहा कि वह बेबे से खास किस्म की शीरमाल बनाने के बारे में पूछने आई है. फौजिया ने झट से कहा कि शीरमाल बनाना तो उस को भी आता है वही सिखा देगी लेकिन रजिया ने अम्मी को परे करते हुए कहा कि अफशां शीरमाल के बारे में बेबे से पूछना चाहती है, इसलिए वह बीच में न पड़े और फिर दोनों सहेलियां दौड़ कर बेबे के पास पंहुच गईं.

अफशां ने रजिया से कोठे का दरवाजा बंद करने को कहा और फिर शुरू हुआ बरसों से बिछुड़े भाई और बहन का वार्त्तालाप जिस में बातें तो कम हुईं लेकिन दोनों तरफ से आंसू ज्यादा बहे. बेबे फोन में दिखाई दे रहे सफेद बालों वाले बूढ़े के चेहरे में अपने छोटे से किसना को ढूंढ़ रही थी और किशनचंद मेघवाल अपनी जर्जर बूढ़ी बहन की हालत देख कर दुखी हो रहे थे.

फिर बेबे से फोन ले कर अफशां ने संजय से कहा कि अगर वे लोग बेबे को हिंदुस्तान बुलाना चाहते हैं तो उस के लिए उन लोगों को ही कोशिश करनी होगी क्योंकि यहां बेबे के बेटे इस मामले में उस की कोई मदद नहीं करेंगे. संजय ने उस से कहा कि वह बेबे को भारत लाने का सारा प्रबंध होते ही अफशां को सूचित कर देगा.

इधर अफशां को काफी देर से बेबे की कोठरी में दरवाजा बंद कर के बैठे हुए देख कर रजिया की छोटी भाभी ने फौरन अपनी सास के कान भरे और दरवाजा खुलवाने को कहा. फौजिया दनदनाती हुई आई और दरवाजे पर लात मार कर रजिया से दरवाजा खोलने को कहा. तो झट से अपना फोन कुरते की जेब में डाल कर अफशां बेबे से शीरमाल की रैसिपी पूछने लगी और रजिया ने दरवाजा खोल दिया.

बीकानेर में अपने घर में बैठे किशनचंद मेघवाल ने पोते से पूछा कि उन की बीरी को भारत लाने का प्रबंध कैसे किया जाएगा? संजय ने अपने दादू को हौसला देते हुए कहा कि वह जल्दी ही भारतीय विदेश मंत्रालय में इस बारे में पत्र लिखेगा और दादू को उन की बीरी से मिलवाने का प्रयत्न करेगा.

कुछ महीनों के प्रयास के बाद भारतीय विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तान के विदेश

मंत्रालय से बात कर के अमीरन उर्फ लक्ष्मी के भारत लौटने का प्रबंध करवा दिया और सरकारी हुक्म होने के कारण बेबे के बेटे उस के भारत जाने में कोई रुकावट नहीं डाल सके. मगर अपनी मां को धमकी जरूर दे दी कि अगर वह हिंदुस्तान गई तो बेटे वापस उस को अपने घर में कभी नहीं आने देंगे. अपने देश जाने की खुशी में बेबे ने बेटे की बात पर कोई ध्यान ही नहीं दिया और अपने टीन के बक्से में सफर पर ले जाने का सामान रखने लगी.

नियत दिन पर रजिया अपनी बेबे को ले कर अपना वादा पूरा करने के लिए चल पड़ी. उस के अब्बू ने तो साथ चलने से इनकार कर दिया, इसलिए अफशां ने अपने अब्बा से गुजारिश की तो अजीबुर्रहमान अमीरन और रजिया को ले कर कराची रेलवे स्टेशन पंहुच गए. वहां पहुंचने पर पता चला कि दूतावास की तरफ से भारत जाने का प्रबंध केवल लक्ष्मी के लिए किया गया है, इसलिए और कोई उस के साथ नहीं जा सकता है. रजिया ने बेबे की उम्र का हवाला देते हुए

तड़प अभी बाकी है

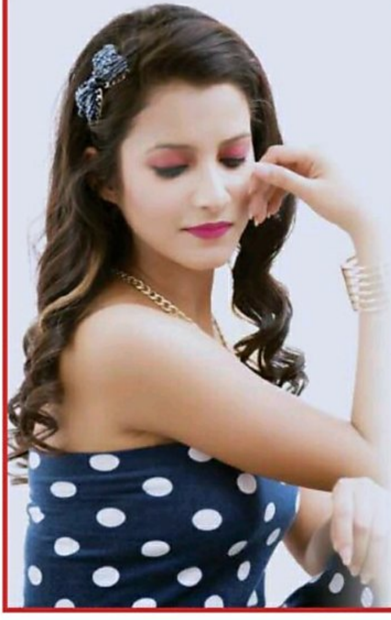

जुदा हुए इक अरसा हुआ
पर महक अभी बाकी है,
गोशा ए दिल में आई वो
चमक अभी तक बाकी है.

है गुजारिश इन आंखों से
मेरा साथ उम्र तक देना तुम,
उन्हें देखने की इस दिल में
ललक अभी तक बाकी है.

लाए थे जो कुमकुम, बिंदिया
माला, कंगन, टीका, नथ,
घुंघरू वाली झांझर की भी
खनक अभी तक बाकी है.

अभी अनकहे होंठों की भी
बात अधूरी है शायद,
इश्के हाला पीने की वो
तलब अभी तक बाकी है.

देख नूर से तेरे
मेरे दिल की दुनिया रोशन है,
उन्हें मोहब्बत थी कि नहीं पर
तड़प अभी तक बाकी है.

• कुसुम अग्रवाल

साथ जाने की इजाजत मांगी लेकिन पाकिस्तान सरकार ने अनुमति नहीं दी. निराश रजिया ने भीगी आंखों से अपनी बेबे को रुखसत किया और अफशां के अब्बा के साथ अपने गांव वापस आ गई. अफशां द्वारा बेबे के आने की सूचना मिलने पर संजय व उस के पापा अमृतसर के लिए रवाना हो गए.

इतना लंबा सफर अकेले तय करने में लक्ष्मी को बहुत घबराहट हो रही थी. तब उस के साथ सफर कर रही एक महिला ने उस से बातें करनी शुरू कीं और बेबे की कहानी सुनने के बाद उस ने रास्तेभर बेबे की पूरी देखभाल की और अमृतसर में लक्ष्मी के परिवार वालों को उसे सौंप कर ही वहां से गई.

अमृतसर स्टेशन पर कुछ रेलवे अधिकारियों के अलावा प्रैस के संवाददाता और संजय एवं उस के पिता बरसों से बिछुड़ी लक्ष्मी की प्रतीक्षा में फूलों के गुलदस्ते ले कर खड़े थे. संजय और उस के पिता ने आगे बढ़ कर लक्ष्मी के पैर छू कर जब अपना परिचय दिया तो लक्ष्मी ने आंखें मिचमिचाते हुए उन दोनों को पहचानने का प्रयास किया और फिर दोनों को कलेजे से लगा कर सिसकने लगी.

कुछ और घंटों की यात्रा पूरी करने के बाद लक्ष्मी जब अपने राजस्थान पहुंची तो इतने लंबे सफर से उस का तन तो थका हुआ था लेकिन अपनी धरती पर पांव रखने की खुशी ने उस थकान को मन पर हावी होने ही नहीं दिया और घर के दरवाजे पर अपनी प्रतीक्षा करते अपने किसना को देख कर तो उस के पैरों में जैसे पंख लग गए व उस ने अपने किसना को कलेजे से ऐसे चिपका लिया जैसे अब वह अपने भाई से कभी अलग नहीं होगी.

घर के अंदर पहुंचने पर संजय की मां ने भी अपनी बरसों से बिछुड़ी बूआ सास के पांव छुए और उस का सत्कार किया. चायनाश्ता करते हुए जब लक्ष्मी ने बंसी, सरजू और लाली के बारे में पूछा, तब किशनचंद ने बताया कि बंसी भैया का 2 वर्ष पहले कैंसर से देहांत हो गया और उन के बच्चे जयपुर में कारोबार करते हैं. सरजू भैया मोर गांव में ही रहते हैं और लाली अपने परिवार के साथ कोटा में रहती है.

मोर गांव का नाम सुनते ही लक्ष्मी ने गांव जाने की रट पकड़ ली. तब किशनचंद ने कुछ दिनों बाद गांव ले चलने का आश्वासन दे कर अपनी बीरी को शांत किया. लेकिन 15 दिन निकल गए और अपनीअपनी व्यस्तताओं के चलते किसी का भी गांव जाना न हो सका. लक्ष्मी के अंदर भी अब कभीकभी अमीरन अपना सिर उठाने लगती और उसे अपने बच्चों, विशेषरूप से रजिया की याद सताने लगती. मगर संकोचवश वह किसी को इस विषय में कुछ न बताती थी.

अचानक मार्च के महीने से दुनिया का माहौल एकदम बदल गया और हर तरफ कोरोना का डर व्याप्त हो गया. तब अमीरन ने लक्ष्मी को अपने टब्बर की तरफ से लापरवाह हो जाने के लिए फटकार लगाई और उस ने संजय से कहा कि वह उस की बात एक बार रजिया से करवा दे. संजय ने तुरंत फोन मिलाया तो अफशां ने अगले दिन बेबे के परिवार से बात करवाने का वादा किया.

अगले दिन अफशां ने रजिया के घर पहुंच कर बेबे से सब की बात करवानी चाही तो बेबे की बहू और पोताबहुएं तो काम के बहाने इधरउधर खिसक गईं और

रजिया के भाई खेतों पर थे. रजिया फोन अफशां के हाथ से ले कर अपनी बेबे से बात करने लगी तो बेबे भी खूब चटखारे ले कर अपने भाई व उस के परिवार के बारे में बताने लगी.

तभी रजिया का अब्बा अकरम वहां आ गया और जब उसे पता चला कि रजिया फोन पर बेबे से रूबरू है तो उस ने बेटी के हाथ से फोन छीन कर अपनी मां को दोबारा फोन न करने की हिदायत देते हुए कहा कि वह अब पाकिस्तान वापस आने के बारे में सोचे भी न, क्योंकि इस परिवार के लिए वह मर चुकी है. फिर अकरम ने फोन काटा और अफशां के हाथ में थमा कर वहां से चला गया.

रजिया अपने अब्बू के व्यवहार से दुखी हो कर रोने लगी तो अफशां ने उसे दिलासा देते हुए कहा कि उसे जब भी बेबे से बात करनी हो तो वह उस के घर आ कर आराम से बात कर सकती है.

अपने बेटे के जहरबुझे शब्दों से आहत लक्ष्मी फोन हाथ में पकड़े निश्छल बैठी रह गई. यह देख कर संजय ने उसे बड़े प्रेम से समझाते हुए कहा, 'काका अपनी मां के यहां आ जाने से दुखी हो कर ऐसे बोल रहे होंगे, असलियत में नाराज नहीं होंगे.' उस की बात सुन कर लक्ष्मी ने अपने आंसू तो पोंछ लिए लेकिन मन ही मन वह जानती थी कि अकरम ने जो भी कहा है, उस का एकएक शब्द सच्चा है. अब सीमापार लक्ष्मी का कोई टब्बर नहीं है. जीवन की यह कैसी विडंबना है कि जिस परिवार में जन्म लिया वह अब अपना हो कर भी अपना नहीं है और जो नाता जबरदस्ती जुड़ा था वह अधिक अपना था लेकिन उसे मानने से उस के अपने बेटे ने ही इनकार कर दिया.

मोर गांव का नाम सुनते ही लक्ष्मी ने गांव जाने की रट पकड़ ली. तब किशनचंद ने कुछ दिनों बाद गांव ले चलने का आश्वासन दे कर अपनी बीरी को शांत किया. लेकिन 15 दिन निकल गए और अपनीअपनी व्यस्तताओं के चलते किसी का भी गांव जाना न हो सका.

कहां जाए अब अमीरन का चेहरा ओढ़े यह लक्ष्मी. यह परिवार अब उस के भाई और बच्चों का है जिस पर उस का कोई अधिकार नहीं है और जिन पर अधिकार बनता है उन्होंने तो उस को जीतेजी ही मार दिया है. वह अब जाए तो कहां जाए? इस बंटवारे ने केवल जमीनें ही नहीं बांटी हैं बल्कि रिश्तों के भी टुकड़ेटुकड़े कर दिए हैं.

मन ही मन कुछ तय करने के बाद लक्ष्मी ने किशनचंद से बात की और कहा कि अब वह अपना बाकी जीवन अपने गांव में ही बिताना चाहती है, इसलिए उस को जल्द से जल्द गांव भेजने का प्रबंध करवा दिया जाए. बीरी की इच्छा पूरी करते हुए उसे (लक्ष्मी) को ले कर किशनचंद मोर गांव गए और वहां अपने पैतृक घर के एक हिस्से में लक्ष्मी के रहने का प्रबंध करवा कर लौट आए. और लक्ष्मी के गांव जाने के पूरे एक महीने बाद आज सुबहसुबह गांव से सरजू भैया का फोन आया कि बीरी सुबहसुबह परलोक सिधार गई.

आजीवन जो धरती उसे नसीब नहीं हुई, उस ने अंत में अपने अंक में उसे समेट लिया था. ●

सरिता, बीस साल पहले,फरवरी (द्वितीय) 2001

पहचान

• शोभा मेहरोत्रा

वसुंधरा ने ननद रूपाली की शादी में देने के लिए जो पैसा जमा किया था, वह बेटे के बीमार पड़ने पर खर्च हो गया. लेकिन फिर भी वसुंधरा ने रूपाली को ऐसा उपहार दिया जिस की कल्पना तक सुकांत नहीं कर सकता था.

बड़ी जेठानी ने माथे का पसीना पोंछा और धम्म से आंगन में बिछी दरी पर बैठ गईं. तभी 2 नौकरों ने फोम के 2 गद्दे ला कर तख्त पर एक के ऊपर एक कर के रख दिए. दालान में चावल पछोरती ननद काम छोड़ कर गद्दों को देखने लगी. छोटी चाची और अम्माजी भी आंगन की तरफ लपकीं. बड़ी जेठानी ने गर्वीले स्वर में बताया, “पूरे ढाई हजार रुपए के गद्दे हैं. चादर और तकिए मिला कर पूरे 3 हजार रुपए खर्च किए हैं.”

आसपास जुटी महिलाओं ने सहमति में सिर हिलाया. गद्दे वास्तव में सुंदर थे. बड़ी बूआ ने ताल मिलाया, “अब ननद की शादी में भाभियां नहीं करेंगी तो कौन करेगा?” ऐसे सुअवसर को खोने की मूर्खता भला मझली जेठानी

कैसे करती. उस ने तड़ से कहा, "मैं तो पहले ही डाइनिंग टेबल का औॅर्डर दे चुकी हूं. आजकल में बन कर आती ही होगी. पूरे 4 हजार रुपए की है."

घर में सब से छोटी बेटी का ब्याह था. दूरपास के सभी रिश्तेदार सप्ताहभर पहले ही आ गए थे. आजकल शादीब्याह में ही सब एकदूसरे से मिल पाते हैं. सभी रिश्तेदारों ने पहले ही अपनेअपने उपहारों की सूची बता दी थी, ताकि दोहरे सामान खरीदने से बचा जा सके शादी के घर में.

अकसर रोज ही उपहारों की किस्म और उन के मूल्य पर चर्चा होती. ऐसे में वसुंधरा का मुख उतर जाता और वह मन ही मन व्यथित होती.

वसुंधरा के तीनों जेठों का व्यापार था. उन की बरेली शहर में साड़ियों की प्रतिष्ठित दुकानें थीं. सभी अच्छा खाकमा रहे थे. उस घर में, बस, सुकांत ही नौकरी में था. वसुंधरा के मायके में भी सब नौकरी वाले थे, इसीलिए उसे सीमित वेतन में रहने का तरीका पता था. सो, जब

वह पति के साथ इलाहाबाद रहने गई तो उसे कोई कष्ट न हुआ.

छोटी ननद रूपाली का विवाह तय हुआ तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि रूपाली की ससुराल उसी शहर में थी जहां उस के बड़े भाई नियुक्त थे. वसुंधरा पुलकित थी कि भाई के घर जाने पर वह ननद से भी मिल लिया करेगी. वैसे भी रूपाली से उसे बड़ा स्नेह था. जब वह ब्याह कर आई थी तो रूपाली ने उसे सगी बहन सा अपनत्व दिया था. परिवार के तौरतरीकों से परिचित कराया और कदमकदम पर साथ दिया.

लेखकों से निवेदन

- प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में 15-20 सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्र व्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं.
- हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं.
- टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.
- रचनाएं आप डाक के अलावा **article.hindi@delhipress.in** वर्ड व पीडीएफ फाइल बना कर भी भेज सकते हैं. ईमेल से प्राप्त रचनाओं की अस्वीकृति की सूचना देना संभव नहीं है.
- रचना के पहले व अंतिम पृष्ठ पर अपना पूरा नाम, पता, मोबाइल नं. व ईमेल आईडी भी लिखें. रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें.
- यदि आप किसी अनूठे विषय पर लिखना चाहते हैं तो उस बारे में ऊपर के ईमेल के द्वारा पूर्व सलाह ले सकते हैं.

पता : सरिता दिल्ली प्रैस, ई-8,
रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

सरिता के वार्षिक ग्राहक बनने के लिए **Subscribtion@ delhipress.in** पर ईमेल करें. -संपादक

शादी तय होने की खबर पाते ही वह हर महीने 5 सौ रुपए घरखर्च से अलग निकाल कर रखने लगी. छोटी ननद के विवाह में कम से कम 5 हजार रुपए तो देने ही चाहिए और अधिक हो सका तो वह भी करेगी. वेतनभोगी परिवार किसी एक माह में ही 5 हजार रुपए अलग से व्यय कर नहीं सकता. सो, बड़ी सूझबूझ के साथ वसुंधरा हर महीने 5 सौ रुपए एक डब्बे में निकाल कर रखने लगी. 1-2 महीने तो सुकांत को कुछ पता न चला. फिर जानने पर उस ने लापरवाही से कहा, "वसुंधरा, तुम व्यर्थ ही परेशान हो रही हो. मेरे सभी भाई जानते हैं कि मेरा सीमित वेतन है. अम्मा और बाबूजी के पास भी काफी पैसा है. विवाह अच्छी तरह निबट जाएगा."

वसुंधरा ने तुनक कर कहा, "मैं कब कह रही हूं कि हमारे 5-10 हजार रुपए देने से ही रूपाली की डोली उठेगी. परंतु मैं उस की भाभी हूं. मुझे भी तो कुछ न कुछ उपहार देना चाहिए."

"जैसा तुम ठीक समझो," कह कर सुकांत तटस्थ हो गए.

वसुंधरा को पति पर क्रोध भी आया कि कैसे लापरवाह हैं. बहन की शादी है और इन्हें कोई फिक्र ही नहीं. इन का क्या? देखना तो सबकुछ मुझे ही है. ये जो उपहार देंगे उस से मेरा भी तो मान

बढ़ेगा और अगर उपहार नहीं दिया तो मैं भी अपमानित होऊंगी, वसुंधरा ने मन ही मन विचार किया और अपनी जमापूंजी को गिनगिन कर खुश रहने लगी.

जैसा सोचा था, वैसा ही हुआ. रूपाली के विवाह के एक माह पहले ही उस के पास 5 हजार रुपए जमा हो गए. उस का मन संतोष से भर उठा. उस ने सहर्ष सुकांत को अपनी बचत राशि दिखाई. दोनों बड़ी देर तक विवाह की योजना की कल्पना में खोए रहे.

विवाह में जाने से पहले बच्चे के कपड़ों का भी प्रबंध करना था. वसुंधरा पति के औफिस जाते ही नन्हे मुकुल के झालरदार झबले सिलने बैठ जाती. इधर कई दिनों से मुकुल दूध पीते ही उलटी कर देता. पहले तो वसुंधरा ने सोचा कि मौसम बदलने से बच्चा परेशान है. परंतु जब 3-4 दिन तक बुखार नहीं उतरा तो वह घबरा कर बच्चे को डाक्टर के पास ले गई. 2 दिन दवा देने पर भी जब बुखार नहीं उतरा तो डाक्टर ने खूनपेशाब की जांच कराने को कहा. जांच की रिपोर्ट आते ही सब के होश उड़ गए. बच्चा पीलिया से बुरी तरह पीड़ित था. बच्चे को तुरंत नर्सिंग होम में भरती करना पड़ा.

15 दिन में बच्चा तो ठीक हो कर घर आ गया परंतु तब तक सालभर में यत्न से बचाए गए 5 हजार रुपए खत्म हो चुके थे. बच्चे के ठीक होने का संतोष एक तरफ था तो दूसरी ओर अगले महीने छोटी ननद के विवाह का आयोजन सामने खड़ा था. वसुंधरा चिंता से पीली पड़ गई. एक दिन तो वह सुकांत के सामने फूटफूट कर रोने लगी. सुकांत ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा, "अपने परिवार को मैं जानता

इन्हें आजमाइए

✓ हर बार जब आप भूखे हों या आप खाना खाने जा रहे हों यानी लंच या डिनर से पहले पानी पीने की कोशिश करें. यह एक निश्चित सीमा तक भूख को तुरंत कम करने का सरल तरीका है. अधिक पानी भी मेटाबोलिक रेट को बढ़ाता है और पेट भरा हुआ लगता है.

✓ रात में आंखों पर आई क्रीम जरूर लगाएं. यह आंखों को रिलैक्स करेगी और साथ ही उन्हें हाइड्रेटेड रखेगी. अगर आंखों की पफीनैस की परेशानी है तो यह भी कम होगी.

✓ अगर मोबाइल की बैटरी बिलकुल खत्म होने वाली है तो मोबाइल को एरोप्लेन मोड में डाल दें. स्विच औन औफ करने से उस की बैटरी खत्म होगी.

✓ किसी भी प्रोडक्ट को खरीदने से पहले उस की रेटिंग में 3 स्टार वाली रेटिंग जरूर पढ़ें, क्योंकि वही सब से सही होगी.

✓ अपने व्यस्त जीवन में थोड़ा समय निकाल कर अपनी समस्त संपत्ति के लिए एक इच्छापत्र (विल) का निर्माण करें. यह आप के परिवार को आप की अनुपस्थिति में अनावश्यक समस्याओं से सुरक्षित रखेगा.

✓ 15 मिनट हंसने से सेहत को इतना ज्यादा फायदा मिलता है जितना 2 घंटे सोने से मिलता है. ●

हूं. अब बच्चा बीमार हो गया तो उस का इलाज तो करवाना ही था. पैसे इलाज में खर्च हो गए तो क्या हुआ? आज हमारे पास पैसा नहीं है तो शादी में नहीं देंगे. कल पैसा आने पर दे देंगे."

वसुंधरा ने माथा ठोक लिया, "लेकिन शादी तो फिर नहीं होगी. शादी में तो एक बार ही देना है. किसकिस को बताओगे कि तुम्हारे पास पैसा नहीं है. 10 साल से शहर में नौकरी कर रहे हो. बहन की शादी के समय पर हाथ झाड़ लोगे तो लोग क्या कहेंगे?"

बहस का कोई अंत न था. वसुंधरा की समझ में नहीं आ रहा था कि वह खाली हाथ ननद के विवाह में कैसे शामिल हो. सुकांत अपनी बात पर अड़ा था. आखिर विवाह के 10 दिन पहले सुकांत छुट्टी ले कर परिवार सहित अपने घर आ पहुंचा. पूरे घर में चहलपहल थी. सब ने वसुंधरा का स्वागत किया. 2 दिन बीतते ही जेठानियों ने टटोलना शुरू किया, "वसुंधरा, तुम रूपाली को क्या दे रही हो?"

वसुंधरा सहम गई मानो कोई जघन्य अपराध किया हो. बड़ी देर तक कोई बात नहीं सूझी, फिर धीरे से बोली, "अभी कुछ तय नहीं किया है."

'पता नहीं सुकांत ने अपने भाइयों को क्या बताया और अम्माजी से क्या कहा,' वसुंधरा मन ही मन इसी उलझन में फंसी रही. वह दिनभर रसोई में घुसी रहती. सब को दिनभर चायनाश्ता कराते, भोजन परोसते उसे पलभर का भी कोई अवकाश न था. परंतु अधिक व्यस्त रहने पर भी

वार्षिक ग्राहक बनें!
घर बैठे पाएं

भारत की सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली महिलाओं की हिंदी पत्रिका
I
₹1000म

गृहशोभा
बॉलीवुड
सैक्स लाइफ पर
इम्यूनिटी वाले 5 जूस
शाकाहारी नौनवेज
आकांक्षा सिंह

सरिता
कट्टर भीड़ और उदार जनता
2 लोकतंत्र

विश्वसनीय, निर्भीक, सुखद, सदा युवा पत्रिका
वार्षिक
₹ 999 में

अब निश्चित डिलीवरी रजिस्टर्ड डाक से कहीं भी

उसे कोई न कोई सुना जाता कि वह कितने रुपए का कौन सा उपहार दे रही है. वसुंधरा लज्जा से गड़ जाती. काश, उस के पास भी पैसे होते तो वह भी सब को अभिमानपूर्वक बताती कि वह क्या उपहार दे रही है.

वसुंधरा को सब से अधिक गुस्सा सुकांत पर आता जो इस घर में कदम रखते ही मानो पराया हो गया. पिछले एक सप्ताह से उस ने वसुंधरा से कोई बात नहीं की थी. वसुंधरा ने बारबार कोशिश भी की कि पति से कुछ समय के लिए एकांत में मिले तो उन्हें फिर समझाए कि कहीं से कुछ रुपए उधार ले कर ही कम से कम एक उपहार तो अवश्य ही दे दें. विवाह में आए 40-50 रिश्तेदारों के भरेपूरे परिवार में वसुंधरा खुद को अत्यंत अकेली और असहाय महसूस करती. क्या सभी रिश्ते पैसों के तराजू पर ही तोले जाते हैं. भाईभाभी का स्नेह, सौहार्द का कोई मूल्य नहीं. जब से वसुंधरा ने इस घर में कदम रखा है, कामकाज में कोल्हू के बैल की तरह जुटी रहती है. बीमारी से उठे बच्चे पर भी ध्यान नहीं देती. बच्चे को गोद में बैठा कर दुलारनेखिलाने पर भी उसे अपराधबोध होता. वह अपनी सेवा में पैसों की भरपाई कर लेना चाहती थी.

वसुंधरा मन ही मन सोचती, 'अम्माजी मेरा पक्ष लेंगी. जेठानियों के रोबदाब के समक्ष मेरी ढाल बन जाएंगी. रिश्तेदारों का क्या है. विवाह में आए हैं, विदा होते ही चले जाएंगे. उन की बात का क्या बुरा मानना.

दिल्ली प्रैस

आफर क्रमांक	पत्रिका	प्रतियों की संख्या	अंक	अवधि	प्रति मूल्य	वार्षिक मूल्य	सब्सक्रिप्शन आफर (रजिस्टर्ड डाक)	चिन्हित करें
1.	गृहशोभा	1	पाक्षिक	1 वर्ष	50.00	1200.00	1000.00	☐
2.	सरिता	1	पाक्षिक	1 वर्ष	50.00	1200.00	999.00	☐

यह फार्म अपने चैक/डी.डी. के साथ भेजे

नाम: जन्मतिथि: DD MM YY

पता:

पिन:

मोबाइल नं.: फोन नं.: ई-मेल:

चैक / डी.डी. नं.: तिथि:

DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.

क्रैडिट कार्ड ☐ अमेक्स ☐ वीसा ☐ मास्टर कार्ड अंतिम तिथि: MM YY

जारी करने वाले बैंक का नाम:

हस्ताक्षर तिथि

नियम व शर्तें : कृपया इस फार्म को चेक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें-
DELHI PRAKASHAN VITRAN PVT. LTD. ई-8, झण्डेवालान एस्टेट, ग्राउंड फ्लोर, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली - 110055 चेक/डीडी का भुगतान भारत में मान्य हो. यह विशेष योजना कुछ समय के लिए ही है. पत्रिका डिलीवरी के लिए कृपया 4-5 हफ्तों का समय दें. पत्रिका की प्रति आपको रजिस्टर डाक के द्वारा प्राप्त होगी. समस्त विवाद केवल दिल्ली न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र के अधीन है. अधिक जानकारी के लिए दिल्ली प्रैस के सब्सक्रिप्शन विभाग से संपर्क करें: फोन-टोल फ्री नंबर 1800 103 8880 फोन नंबर 41398888 (सभी लैंडलाइन और मोबाइल द्वारा मान्य, सोमवार से शनिवार सुबह 10:00 से शाम 6:00 तक) ईमेल : subscription@delhipress.in, आप ऑनलाइन http://www.delhipress.in/subscribe पर भी सब्सक्राइब कर सकते हैं.

शादीविवाह में हंसीमजाक, एकदूसरे की खिंचाई तो होती ही है. घरवालों के बीच अच्छी अंडरस्टैंडिंग रहे, यही जरूरी है.'

परंतु अम्माजी के हावभाव से किसी पक्षधरता का आभास न होता. एक नितांत तटस्थ भाव सभी के चेहरे पर दिखाई देता. इतना ही नहीं, किसी ने व्यग्र हो कर बच्चे की बीमारी के बारे में भी कुछ नहीं पूछा. वसुंधरा ने ही 1-2 बार बताने का प्रयास किया कि किस प्रकार बच्चे को अस्पताल में भरती कराया, कितना व्यय हुआ? पर हर बार उस की बात बीच में ही कट गई और साड़ी, फौल, ब्लाउज की डिजाइन में सब उलझ गए. वसुंधरा क्षुब्ध हो गई. उसे लगने लगा जैसे वह किसी और के घर विवाह में आई है, जहां किसी को उस के निजी सुखदुख से कोई लेनादेना नहीं है. उस की विवशता से किसी को सरोकार नहीं है.

15 दिनों में बच्चा तो ठीक हो कर घर आ गया परंतु तब तक सालभर में यत्न से बचाए गए 5 हजार रुपए खत्म हो चुके थे.

वसुंधरा को कुछ न दे पाने का मलाल दिनरात खाए जाता. जेठानियों के लाए उपहार और उन की कीमतों का वर्णन हृदय में फांस की तरह चुभता, पर वह किस से कहती अपने मन की व्यथा. दिनरात काम में जुटी रहने पर भी खुशी का एक भी बोल नहीं सुनाई पड़ता जो उस के घायल मन पर मरहम लगा पाता.

शारीरिक श्रम, भावनात्मक सौहार्द दोनों मिल कर भी धन की कमी की भरपाई में सहायक न हुए. भावशून्य सी वह काम में लगी रहती, पर दिल वेदना से तारतार होता रहता. विवाह धूमधाम से संपन्न हुआ.

सभी ने बढ़चढ़ कर इस अंतिम आयोजन में हिस्सा लिया. विदा के समय वसुंधरा ने सब की नजर बचा कर गले में पड़ा हार उतारा और गले लिपट कर बिलखबिलख कर रोती रूपाली के गले में पहना दिया.

रूपाली ससुराल में जा कर सब को बताएगी कि छोटी भाभी ने यह हार दिया है, हार 10 हजार रुपए से भला क्या कम होगा. पिताजी ने वसुंधरा की पसंद से ही यह हार खरीदा था. हार जाने से वसुंधरा को दुख तो अवश्य हुआ, पर अब उस के मन में अपराधबोध नहीं था. यद्यपि हार देने का बखान उस ने सास या जेठानी से नहीं किया, पर अब उस के मन पर कोई बोझ नहीं था. रूपाली मायके आने पर सब को स्वयं ही बताएगी. तब सभी उस का गुणगान करेंगे. वसुंधरा के मुख पर छाए चिंता के बादल छंट गए और संतोष का उजाला दमकने लगा.

रूपाली की विदाई के बाद से ही सब रिश्तेदार अपनेअपने घर लौटने लगे थे. 2 दिन रुक कर सुकांत भी वसुंधरा को ले कर इलाहाबाद लौट आए. कई बार वसुंधरा ने सुकांत को हार देने की बात बतानी चाही, पर हर बार वह यह सोच कर खामोश हो जाती कि उपहार दे कर ढिंढोरा पीटने से क्या लाभ? जब अपनी मरजी से दिया है, अपनी चीज दी है तो उस का बखान कर के पति को क्यों लज्जित करना. परंतु स्त्रीसुलभ स्वभाव के अनुसार वसुंधरा चाहती थी कि कम से कम पति तो उस की उदारता जाने. एक त्योहार पर वसुंधरा ने गहने पहने, पर उस का गला सूना रहा. सुकांत ने उस की

त्योहार पर वसुंधरा ने गहने पहने, पर गला सूना रहा. सुकांत ने उस की सजधज की प्रशंसा तो की पर सूने गले की ओर उस की नजर न गई.

सजधज की प्रशंसा तो की, पर सूने गले की ओर उस की नजर न गई.

वसुंधरा मन ही मन छटपटाती. एक बार भी पति पूछे कि हार क्यों नहीं पहना तो वह झट बता दे कि उस ने पति का मान किस प्रकार रखा. लेकिन सुकांत ने कभी हार का जिक्र नहीं छेड़ा.

एक शाम सुकांत अपने मित्र विनोद के साथ बैठे चाय पी रहे थे. विनोद उन के औफिस में ही लेखा विभाग में थे. विनोद ने कहा, "अगले महीने तुम्हारे जीपीएफ के लोन की अंतिम किस्त कट जाएगी."

सुकांत ने लंबी सांस ली, "हां, भाई, 5 साल हो गए. पूरे 15 हजार रुपए लिए थे." संयोग से बगल के कमरे में सफाई करती वसुंधरा ने पूरी बात सुन ली. वह असमंजस में थी. सोचा कि सुकांत ने जीपीएफ से तो कभी लोन नहीं लिया. लोन लिया होता तो मुझ को अवश्य पता होता. फिर 15 हजार रुपए कम नहीं होते. सुकांत में तो कोई गलत आदतें भी नहीं हैं, न वह जुआ खेलता है न शराब पीता है. फिर 15 हजार रुपए का क्या किया. अचानक वसुंधरा को याद आया कि 5 साल पहले ही तो रूपाली की शादी हुई थी.

वसुंधरा अपनी विवशता पर फूटफूट कर रोने लगी. काश, सुकांत ने उसे बताया होता. उस पर थोड़ा विश्वास किया होता. तब वह ननद की शादी में चोरों की तरह मुंह छिपाए न फिरती. हार जाने का गम उसे नहीं था. हार का क्या है, अपने लौकर में पड़ा रहे या ननद के पास, आखिर उस से रहा नहीं गया. उस ने सुकांत से पूछा तो उस ने बड़े निरीह स्वर में कहा, "मैं ने सोचा, मैं बताऊंगा तो तुम झगड़ा करोगी," फिर जब वसुंधरा ने हार देने की बात बताई तो सुकांत सकते में आ गया. फिर धीमे स्वर में बोला, "मुझे क्या पता था तुम अपना भी गहना दे डालोगी. मैं तो समझता था तुम बहन के विवाह में 15 हजार रुपए देने पर नाराज हो जाओगी," वसुंधरा के मौन पर लज्जित सुकांत ने फिर कहा, "वसुंधरा, मैं तुम्हें जानता तो वर्षों से हूं किंतु पहचान आज सका हूं."

वसुंधरा को अपने ऊपर फक्र हो रहा था, पति की नजरों में वह ऊपर जो उठ गई थी. ●

परख

• वीरेंद्र बहादुर सिंह

सौरभ से शादी के बाद ननद दीप्ति को ले कर सास का रवैया जरा भी दिव्या को पसंद नहीं आया. क्या दिव्या की सास के प्रति गलत धारणा दूर हो पाई?

दिव्या और सौरभ की दोस्ती अनुराग में बदलने लगी तो दिव्या के शुभचिंतकों ने उसे चेताया था, "दिव्या, सौरभ से दोस्ती तक तो ठीक है, लेकिन तुम उस की मां को नहीं जानतीं. वे बहुत ही सख्त व तुनकमिजाज हैं. उन के साथ तुम चार दिन भी नहीं टिक पाओगी."

दिव्या को मिले इस सुझाव में उस का हित कम ईर्ष्या ज्यादा दिखाई दे रही थी. सौरभ जैसे अच्छी नौकरी करने वाले सुंदर, सुशील और अच्छे चरित्र वाले लड़के को भला कौन अपना नहीं बनाना चाहेगा.

दिव्या उस से अपने रूप और गुण की समानता कर रही थी. वह चाहती थी कि उस की पसंद पर उस के मातापिता गर्व करें. उन्हें उस के भविष्य को ले कर जरा भी चिंता न हो. लोग उस की पसंद पर सहज ही ईर्ष्या करें. सौरभ को ले कर ऐसा साफ दिखाई दे रहा था.

लेकिन सौरभ की मां को ले कर लोगों के विचार दिव्या को थोड़ा परेशान जरूर कर रहे थे. उन के इस अभिप्राय में वजह भी थी. सौरभ हमेशा अपने परिवार से जुड़ा रहा. कभी किसी तरह की चर्चा या झंझट में नहीं पड़ता था. जरा भी चिंता किए बगैर सब के सामने सच कह देता था. किसी से ज्यादा मेलमुलाकात भी नहीं रखता था.

स्वभाव से सौरभ थोड़ा सख्त था, इसलिए लोग, खासकर लड़कियां, उसे अंतर्मुखी व घमंडी कहती थीं, पैसे वाला होने का ताना भी मारती थीं.

लोगों ने सौरभ की मम्मी के बारे में कितनी भी धारणाएं क्यों न पाली हों, पर दिव्या को ऐसा कुछ भी नहीं लगता था. लेकिन जब उन के बारे में इस तरह की बातें कुछ ज्यादा ही सुनने को मिलने लगीं तो दिव्या के मन में भी संदेह उपजने लगा.

तब एक दिन उस ने सौरभ से पूछ ही लिया, "सौरभ, मुझे मम्मी के बारे में जो भी बातें सुनने को मिल रही हैं, उन में कितनी सचाई है?"

पलभर तो सौरभ दिव्या को टकटकी लगाए निहारता रहा. वह दिव्या को चाहता था, इसलिए उस के ऐसा कहने में उस के लिए न कोई हैरानी की बात थी और न अनोखी. यह बुरी लगने वाली बात भी नहीं थी.

सौरभ ने कहा, "तुम मेरी मम्मी के बारे में जो जानना चाहती हो, उस के बारे में मैं जो भी बताऊंगा, उस पर तुम्हें शायद यकीन न हो. इसलिए तुम खुद ही चल कर उन से मिल लो, तो ज्यादा अच्छा रहेगा और उन्हें अच्छे से जानसमझ भी लोगी. इस तरह तुम्हारे मन में जो संदेह है, दूर हो जाएगा."

दिव्या असमंजस में पड़ गई. उस के सवाल पर असमंजस में तो सौरभ भी पड़ गया था. शायद इसीलिए वह ज्यादा कुछ कह नहीं सका था. लेकिन जब वह जाने लगा तो बोला, "दिव्या, मैं जब भी तुम्हें मम्मी से मिलने के लिए बुलाऊं, तुम पूरी तरह मानसिक रूप से तैयार हो कर आना."

इस के बाद दिव्या उलझन में रहने लगी थी. उसे सौरभ की मां से मिलने की बात पर घबराहट सी होने लगती थी, क्योंकि वह पहली बार सौरभ की मम्मी से मिलने वाली थी.

बेटे को वश में कर लेने वाली लड़की को वे जरूर परखना चाहेंगी. वैसे तो वे दिव्या की मां की परिचित थीं, लेकिन उस ने अपनी शुरुआती पढ़ाई गुरुकुल में की, उस के बाद फाइन आर्ट का कोर्स करने शांति निकेतन चली गई थी. इसलिए उन्होंने उसे कभी देखा नहीं था. शुभचिंतक उसे होशियार कर रहे थे कि असली कसौटी पर तो अब उसे जाना है. सौरभ की मम्मी यानी अपनी होने वाली सास की परीक्षा में उसे हर हाल में खरा उतरना है.

एक दिन सौरभ ने हंसीहंसी में कहा था, "दिव्या, मैं ने तो तुम्हें विशेष योग्यता वाले नंबर दे दिए हैं, लेकिन अगर मम्मी ने तुम्हें पास होने लायक नंबर भी दे दिए, तो समझो कि तुम टौप कर गई."

'रे मन आज परीक्षा तेरी, विनती करती मैं तुझ से, बात न बिगड़े मेरी' यह गाती हुई दिव्या दिल पर असहनीय बोझ लिए सौरभ के कहने पर उस के घर जा पहुंची. असहनीय बोझ इसलिए क्योंकि जब सौरभ ने दिव्या को फोन कर के आने के लिए कहा था, तो उस ने पूछा था, 'मुझे शादी तुम से करनी है या तुम्हारी मां से?'

सौरभ ने बिना किसी संकोच या झिझक के जवाब दिया था, 'तुम्हें मुझ से नहीं, मेरी मां के अरमानों से शादी करनी है.'

बस, इतना कह कर सौरभ ने फोन काट दिया था. एक बार तो दिव्या के मन में आया कि वह मना कर दे, क्योंकि वह 21वीं सदी में जीने वाली लड़की थी. उस का भी अपना अस्तित्व, महत्त्व, गौरव और इज्जत थी. शादी 2 जवां दिलों की व्यक्तिगत संपत्ति होती है. इस में किसी अन्य को दखल देने का क्या हक है.

लेकिन जिस संस्था से दिव्या पढ़ी थी और संस्कार ले कर आई थी, वह उस की मर्यादा नहीं भंग करना चाहती थी. दिल यही कह रहा था कि अब जिन के साथ रहना है, जिन के साथ जीवन व्यवहार की प्रीति बांधनी है, उन्हें खुश करना, उन की स्वीकृति लेना, भारतीय वैवाहिक जीवन में नववधू के लिए जरूरी है. यह हिंदुस्तान है, यूरोप या अमेरिका नहीं. यहां स्त्री मात्र एक पुरुष से नहीं, उस के परिवार, मित्रों, सगेसंबंधियों से संबंध जोड़ती है. शादी मात्र 2 दिलों के बीच के स्नेह की गांठ नहीं, पारिवारिक और सामाजिक स्नेह संवादिता की बहती धारा का स्रोत है. शिक्षा दिए जाने वाले आदर्श नहीं, बल्कि उस में विचारों और परंपराओं के निष्कर्ष हैं.

इसीलिए सौरभ के फोन काट देने के बाद भी उस की मम्मी का दिल जीत लेने की धुन दिव्या पर सवार हो गई थी. उसे अपने गुण, रूप और संस्कारों पर पूरा भरोसा था. उसे स्वयं पर विश्वास था, इसलिए किसी भी तरह की कसौटी पर खरा उतरने के संकल्प के साथ दिव्या जब सौरभ के घर पहुंची तो आनंद और आश्चर्य का पारावार न रहा.

अकसर लोगों के मन में यही धारणा होती है कि प्यार के प्रपंच में पड़ने वाली लड़कियां नखरे वाली, आलसी और बेकार होती हैं. इस पूर्वाग्रह से ग्रसित होने की वजह से जब लड़की प्रेमी के घर वालों से मिलने जाती है, तो प्रेमी के घर वाले, खासकर मांएं, कठोर मुखमुद्रा बना कर आरपार बेधने वाली नजरों से घूरती हैं. उन के चेहरे की विद्रूपता से ही उन के मन की बात का पता चल जाता है. लेकिन यहां तो एकदम उलटा था. दिल से सच्ची परख करने वाली सौरभ की मां की नजरों में ऐसा कुछ भी नहीं झलक रहा था कि दिव्या को किसी तरह की कठिनाई या भय का सामना करना पड़ता.

दिव्या असमंजस में पड़ गई. उस के सवाल पर असमंजस में तो सौरभ भी पड़ गया था. शायद इसीलिए वह ज्यादा कुछ कह नहीं सका था.

धीरगंभीर चेहरा, किसी को भी आकर्षित कर लेने वाले व्यक्तित्व की धनी वह महिला, पहली ही नजर में किसी का भी मन अपने प्रभाव से जीत ले, ऐसी सौरभ की मां को देख कर दिव्या पलभर के लिए अपने अस्तित्व को भूल गई.

सुनीसुनाई बातों की वजह से दिव्या के मन में सौरभ की मां के प्रति जो धारणा बनी थी, यहां उस का एकदम उलटा पा कर उस के चेहरे पर छाए क्षोभ के बादलों ने उस की सुंदरता और व्यक्तित्व को ढक लिया. पश्चात्ताप और दुख से आंखें भर आईं. अनायास ही उस के दिल से मम्मी के बजाय 'मां' का उद्‌गार फूट पड़ा.

उस समय दिव्या को भान ही नहीं रहा कि कब चरणस्पर्श के लिए झुकी उस की देह सौरभ की मां की स्नेहिल बांहों में आबद्ध हो गई. जब उस के आंसुओं से उन के वक्ष भीगने लगे, तो झटके से दिव्या के दोनों कंधे पकड़ कर अलग किया और आंखों में आंखें डाल कर बोलीं, "अरे, तू तो सचमुच रो रही है. पगली, यह भी कोई रोने का समय है."

"आप के लिए मेरे मन में जो धारणा थी, विचार थे, यह उसी का परिणाम है. ये पश्चात्ताप के आंसू हैं."

"पहली मुलाकात और एक ही नजर में तुम ने मुझे परख लिया?"

"हां मां, देखने वाली आंखें हों, तो दिल से कुछ भी अनजान नहीं रहता."

एक बार फिर उन्होंने दिव्या को सीने से लगा लिया. उस के बाद दिव्या का चेहरा दोनों हाथों की हथेलियों के बीच ले कर माथे पर एक प्रगाढ़ चुंबन जड़ते हुए आहिस्ता से बोलीं, "बेटा, तुम ने मुझे 3 बार 'मां' कहा है न, हमारी इस मुलाकात के दृश्य को मुसकराते हुए दिल में बसा लेने वाला यह मेरा बेटा सौरभ जब तक स्कूल जाता रहा, इस ने कभी मुझे मां नहीं कहा. जब यह कालेज जाने लगा, तब मैं इस के लिए आदरवाचक 'मां' उद्‌गार की पात्र बनी."

इस के बाद सौरभ की मां ने अपनी

बाईं ओर इशारा कर के कहा, "इधर देखो, तूफानी आंखों वाली यह लड़की तुम्हारी ननद दीप्ति है. यह सिर्फ कहने को दीप्ति है, बाकी यह अदीप्ति है. जैसे ही इसे पता चला कि तुम आने वाली हो, दामाद को ले कर मेरे यहां आ पहुंची कि तुम्हारे स्वागत में कोई कमी न रह जाए. मुझे यह मम्मी कहती है. मुझे तो यही लग रहा था कि तुम बाहर से पढ़ कर आई हो, इसलिए अब जो हमारे यहां चलने लगा है 'मौम' कह कर बुलाओगी.

"लेकिन आज तुम ने जैसा कहा, मैं तुम्हारी 'मां' हूं. दीप्ति ने मेरी देखरेख में इस घर में राज किया है. अब मुझे तुम्हारी ताजपोशी करनी है. बोलो, कब आ रही हो मेरे घर?"

शिष्टशालीन भाषा, जरा भी कृतज्ञता या दिखावा नहीं. जो शब्द मुंह से निकल रहे थे, वे पूरी तरह से स्वाभाविक थे, उन का यह रूप और व्यवहार देख कर दिव्या इतनी खुश हुई कि उन के हर सवाल का जवाब दे कर उन का दिल जीत लिया.

सास से छुटकारा मिला तो दिव्या को उस की होने वाली ननद दीप्ति ने पकड़ लिया, "भाभी, आप ने तो पहली ही मुलाकात में मम्मी का दिल जीत लिया. अभी तक वे जो थोड़ाबहुत मेरी थीं, आज से पूरी की पूरी आप की हो गईं."

एक तरह से दीप्ति का यह बहुत बढ़िया कौंप्लिमैंट था. उस के इस भाव ने दिव्या का मन मोह लिया था. उस ने मुसकराते हुए कहा, "जी, आप ने ससुराल जाने में थोड़ी जल्दी कर दी, जिस से आप ने मेरा हलदी चढ़ाने और मेहंदी लगाने का हक तो मार ही लिया, एकाध साल साथ रहने का मौका भी गंवा दिया."

बस, इसी मुलाकात के बाद सौरभ की अपेक्षा उस की मां के सान्निध्य में रहने के लिए दिव्या का मन छटपटाने लगा. अब उस की शादी के लिए भाई के आने का इंतजार था. अमेरिका से उस के भाई के आते ही खूब आनंदोल्लास के साथ दिव्या का विवाह सौरभ के साथ हो गया.

जहां जिंदगी को स्वर्ण युग मिला हो, उस मांबाप के घर और उन की ममता को छोड़ कर एक अनजान परिवेश में जाते समय जब लड़कियां फफकफफक कर रोती हैं तो वह दृश्य बड़ा ही भावनात्मक होता है.

दिव्या की विदाई हो रही थी तो धीरगंभीर उस के पिता जैसे जीवन की बहुत बड़ी निधि खो बैठे हों, इस तरह भारी दिल से बरामदे में खड़े रो रहे थे. लगभग अमेरिकी बन चुके उस के भैयाभाभी भी उस समय देहाती बन गए थे. भाई की आंखों से आंसू धारा की तरह बह रहे थे. उन्हें धीरज बंधाते हुए भाभी की आवाज कांप रही थी. मम्मी की तो बात ही अलग थी. उन का हाल बेहाल था. उन के आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे. दूसरी ओर दिव्या की आंखों से आंसू जरूर बह रहे थे, लेकिन जहां तक रोने की बात थी, वह सच्चे मन से बिलकुल नहीं रो रही थी. दिव्या को लग रहा था, वह ऐसे घर में जा रही थी, जहां जा कर उस के मातृघर का संबंध और प्रगाढ़ होगा. तभी उस की सहेलियों में से एक सहेली ने कहा था, "प्रेम विवाह कर रही है न, ऊपर से सदगुणी वर पाया है, इसीलिए लाडो मन से रो नहीं रही है. लेकिन जरा सास के चक्कर में तो पड़ने दो, तब पता चलेगा."

दिव्या का शंकालु मन पलभर के लिए बेचैन हो गया. लेकिन अगले ही पल उस

के अनुभवी दिल ने उसे संतोष दिलाया कि परेशान होने की जरूरत नहीं है. फिर भी अभी उसे सास की सच्ची परख बाकी थी.

दिव्या की शादी हुए 15 दिन हो चुके थे. सौरभ एसबीआई बैंक में मैनेजर था. एक तो मार्च का महीना था, दूसरे, सौरभ को खास रुचि भी नहीं थी, इसलिए दिव्या ने हनीमून के लिए कहीं बाहर जाने के बारे में सोचा ही नहीं. वैवाहिक जीवन के रोमांचकारी सुख देने वाले उस के शुरुआती रोमांचकारी दिन बड़े मजे से उत्साह के साथ बीत रहे थे.

सुबह का समय था. दिव्या की आंखें नींद के बोझ से दबी होने के चलते खुल भी नहीं पाई थीं कि सास की आवाज उस के कानों में पड़ी. वे कह रही थीं, "दीप्ति, अब उठ भी जा. पानी आ गया है. आज धोने के लिए बहुत कपड़े हैं. पानी चला गया तो रह जाएंगे. धोबी गांव गया है. कामवाली भी महीनेभर की छुट्टी ले कर बेटे की शादी करने गई है."

भाई की शादी के लिए दीप्ति ससुराल वालों से लड़ाईझगड़ा कर के शादी से 20–21 दिन पहले ही मायके आ गई थी, जबकि उस की खुद की ननद की शादी थी. सौरभ की शादी की वजह से दीप्ति की ससुराल वालों ने तारीख बढ़ा दी थी. इस के बावजूद दीप्ति को ननद की शादी की जरा भी चिंता नहीं थी. अपनी बेटी को लिए वह मायके में पड़ी थी.

सास की आवाज कान में पड़ते ही दिव्या उठ कर बैठ गई, जबकि सौरभ मजे से सो रहा था. उस समय दिव्या का मन उठने का बिलकुल नहीं हो रहा था. लेकिन सास की बातें आदेशात्मक थीं, इसलिए दिव्या को उठना ही पड़ा.

विवाह बंधन में बंधने जा रही दिव्या को लग रहा था कि वह ऐसे घर में जा रही है जहां जा कर उस के मातृघर का संबंध और प्रगाढ़ होगा.

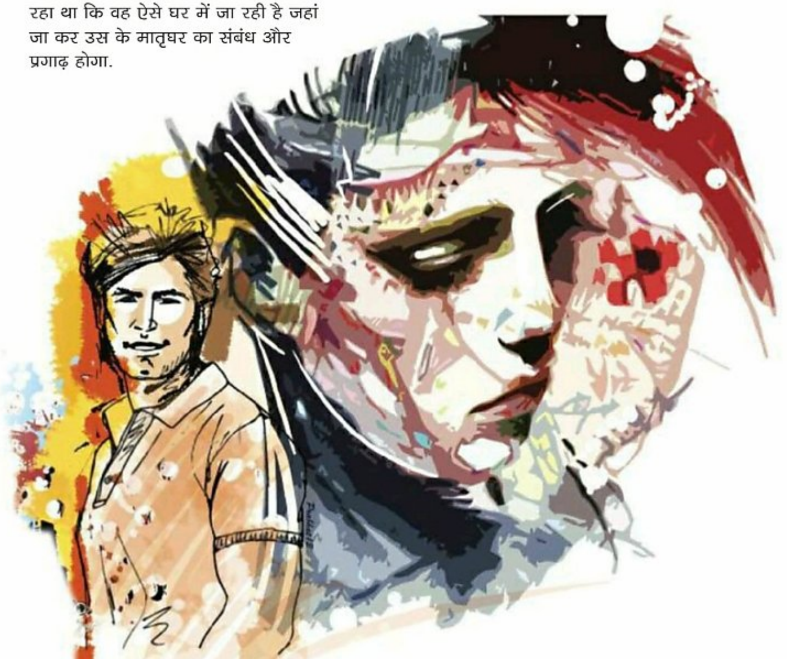

जैसे ही दिव्या ने दरवाजा खोला, उस की सास सामने आ कर खड़ी हो गईं. उन्होंने धीमे से पर आदेशात्मक लहजे में कहा, "दिव्या, तुम वापस जाओ, भले ही तुम्हें नींद न आए, पर जब तक मैं न कहूं, तुम कमरे से बाहर मत आना."

दिव्या ने सहज प्रतिवाद किया, "पूर्वी ने दीप्ति को वैसे ही देररात तक सोने नहीं दिया, इसलिए आप उन्हें थोड़ी देर सो लेने दीजिए, जो भी काम हो, आप मुझे बताइए. वे अकेली करतेकरते थक जाएंगी."

दिव्या की बात पर सहानुभूति प्रकट करने के बजाय उस की सास ने नाराज हो कर लगभग डांटते हुए कहा, "तुम अपने कमरे में जाओ, मैं जैसा कह रही हूं, वैसा ही करो. अभी तुम्हारी समझ में यह सब नहीं आएगा. दीप्ति जो काम कर रही है, उसे ही करने दो."

इस के बाद वे दनदनाती हुई दीप्ति के पास पहुंचीं और उस की चादर खींच कर बोलीं, "कब से चिल्ला रही हूं, तुम्हें सुनाई नहीं देता. पानी चला गया तो पूरा घर कूड़े का ढेर बना रहेगा."

अच्छीखासी नाराजगी और गुस्सा दिखाते हुए दीप्ति उठी. दिव्या अपने कमरे में बैठी इस बात का अनुभव कर रही थी. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब हो क्या रहा है, क्योंकि उस ने अब तक जो देखा था, उस के अनुसार मायके में आई बेटी को मांएं जान की तरह संभाल कर रखती हैं और उस की हर इच्छा पूरी करती हैं. बहू कितना भी परेशान हो, मांएं बेटी को घास का तिनका तक उठाने को नहीं कहतीं. मांओं का सोचना होता है कि 'बेटी को ससुराल में तो खटना ही है, जितने दिन के लिए मायके आई है, उतने दिन तो आराम कर ले.'

यही लगभग हर मां का सोचना होता है. लेकिन दिव्या की सास की सोच और व्यवहार सब से एकदम अलग था. 9 बजे तक दिव्या नहाधो कर तैयार हो जाती, तो उस की सास उसे साथ ले कर अपने किसी रिश्तेदार या नजदीकी जानपहचान वाले के यहां मिलनेमिलाने चली जातीं. जातेजाते वे दीप्ति को इतने काम सौंप जातीं कि उसे पलभर आराम करने का समय न मिलता.

घर के सारे काम दीप्ति के ही जिम्मे थे. अगर दीप्ति कुछ कहती तो उसे दुलारते हुए कहतीं, "बहू नईनई है न, अभी उसे हमारे घर के बारे में ठीक से पता नहीं है. इसलिए जब तक तुम यहां हो, सारे काम कर के दिखा दो कि हमारे यहां किस तरह काम किए जाते हैं. तुम्हारे हाथों का खाना खा कर दिव्या को पता चल जाएगा कि हम लोग कैसा खाना खाते हैं."

दीप्ति कोई जवाब न दे पाती. उस के चेहरे पर नागवारी के भाव साफ झलकते थे. अपना गुस्सा वह मां से व्यक्त नहीं कर सकती थी, इसलिए अपना गुस्सा कभी बरतनों पर उतारती तो कभी पूर्वी पर. मां यह सब देखते हुए आंखें बंद किए रहतीं.

शुरूशुरू में तो दिव्या को यही लगा था कि 2-4 दिन बाद घर की सारी जिम्मेदारी उस पर डाल दी जाएगी लेकिन 15 दिन बीत जाने के बाद भी उस से कोई काम छूने को नहीं कहा जा रहा था. उस रोज भी घर पर कुछ मेहमान आने वाले थे. उन का भी खाना बनना था. दिव्या जाना नहीं चाहती थी, लेकिन सास आग्रह कर के उसे मार्केट ले गईं. हां, पूर्वी को जरूर साथ ले लिया था.

दिव्या ननद दीप्ति की मदद के लिए रुकना चाहती थी, पर सास ने उसे रुकने नहीं दिया. रास्ते में दिव्या ने कहा था, "आज तो दीप्ति दीदी को बहुत काम पड़ जाएगा. मुझे घर में छोड़ दिया होता तो थोड़ी उन्हें मदद मिल जाती. सौरभ ने मुझ से कहा था."

"क्या करना है, क्या नहीं करना है, मुझे अच्छी तरह पता है. मैं जो कहूं, तुम्हें सिर्फ वही करना है. उस से ज्यादा न तुम्हें कुछ करना है और न सोचना है," दिव्या की सास ने कहा.

उस दिन दीप्ति ने जानबूझ कर सब्जी खराब कर दी थी. मार्केट से लौट कर दिव्या की सास ने खुद सब्जी बनाई. साथ ही, कुछ बनीबनाई सब्जी बाजार से मंगा कर काम चलाया. लेकिन मेहमानों के जाने के बाद वे दीप्ति पर इस तरह बरस पड़ीं, जैसे वे उन की सगी मां न हो कर सौतेली मां हों.

उन्होंने कहा, "तुम्हें पता था कि मेहमान आने वाले हैं, फिर भी इस तरह का खाना बनाया. एक जून का खाना भी ढंग से नहीं बना सकती. जिस तरह का खाना बनाया था, उसी तरह का खाना बनाना मैं ने तुम्हें सिखाया था."

"पर मम्मी," दीप्ति रोंआसी हो कर बोली, "कामवाली भी नहीं है, कोई मदद नहीं करता, सारे काम मुझे अकेले ही करने पड़ते हैं."

दीप्ति की बात पर ध्यान दिए बगैर मां ने कहा, "बस, अब चुप रहना. मैं ने तुम्हें इतना तो सिखाया ही है कि 2-4 तो क्या, 20-25 आदमियों का खाना अकेले बना सकती हो."

उस के अगले दिन दिव्या और सौरभ का सिनेमा देखने जाने का प्रोग्राम था.

मित्रता

मित्रता करने में धीमे रहिए, पर जब कर लीजिए तो उसे मजबूती से निभाइए और उस पर स्थिर रहिए. —*सुकरात*

सरिता

दीप्ति भी साथ जाना चाहती थी, लेकिन मां उसे शाम का खाना बनाने की जिम्मेदारी सौंप कर किसी रिश्तेदार के यहां मिलने चली गईं.

दिव्या और सौरभ घर से निकले तो रास्ते में उन्हें उन की कामवाली मिल गई. घर में काम को ले कर होने वाली किचकिच के बारे में थोड़ाबहुत सौरभ को भी मालूम था. इसलिए कामवाली से उन्होंने कहा, "अरे, तुम काफी दिनों से काम पर नहीं आ रही हो? अभी तुम्हारे बेटे की शादी नहीं निबटी क्या?"

कामवाली हंस कर बोली, "साहब, कैसा बेटा और कैसी शादी... मेरा बेटा तो अभी 10 साल का है. मुझे तो मांजी ने काम पर आने से मना किया था. उन्होंने कहा था कि जब तक वे न बुलाएं, काम करने न आऊं, जबकि उन्होंने मेरे पैसे भी दे दिए थे."

दिव्या ने हैरानी से सौरभ को देखा. वह भी भौचक था. दिव्या के मन में एक बार फिर संदेह पैदा हुआ. पिछले 15 दिनों से वह देख रही थी कि उस की सास पेट की जनी बेटी से कैसा सख्त बर्ताव कर रही थीं. उन की यह बात तो सही थी कि दिव्या ने अभी नयानया वैवाहिक जीवन शुरू किया था, इसलिए उस के घूमनेफिरने के दिन थे लेकिन दीप्ति तो अब उन की मेहमान की तरह थी. उस घर की बेटी थी, युवा थी, इस के बावजूद मां उस के साथ नौकरानी से भी बुरा व्यवहार कर रही थीं.

दिव्या को लगा, सास का यह व्यवहार उस के लिए एक तरह से सीख है. जो मां अपनी सगी बेटी से ऐसा व्यवहार कर सकती है, बहू के साथ कैसा व्यवहार करेगी, इस की कल्पना नहीं की जा सकती.

दीप्ति के जाने के बाद घर के सारे काम का बोझ उसी पर आ पड़ेगा. जरा भी हीलाहवाली करने पर उस की सास कह भी सकती थीं, 'जब बेटी घर के सारे काम कर सकती है, तो तुम कहां से बनठन कर आई हो.' दिव्या ने सोचा, इस का मतलब उस के शुभचिंतकों ने सौरभ की मां के बारे में जो बताया था, सही था कि जब पाला पड़ेगा तब पता चलेगा.

यह सब सोच कर दिव्या सन्न रह गई. जब सौरभ ने पूछा, 'उसे क्या हुआ,' तो वह सोच से बाहर आई.

उस दिन सौरभ ने अचानक ही फिल्म देखने का प्रोग्राम बनाया था, इसलिए एडवांस बुकिंग नहीं कराई थी. उन के सिनेमाहाल तक पहुंचतेपहुंचते सारे टिकट बिक चुके थे. अब तो पहले की तरह ब्लैक की भी व्यवस्था नहीं थी, इसलिए उन्हें वापस आना पड़ा.

दिव्या ने जब से कामवाली की बातें सुनी थीं, उस का मन काफी बेचैन था. दिव्या को बनावट जरा भी पसंद नहीं थी. सास उसे घर का कोई काम नहीं करने दे रही थीं. यह उसे जरा भी अच्छा नहीं लग रहा था. दिव्या और सौरभ जैसे ही कालोनी के गेट पर पहुंचे, सौरभ का एक दोस्त मिल गया. सौरभ उस से बातें करने लगा तो दिव्या अकेली ही घर की ओर चल पड़ी. दरअसल

MPAK
DELHI PRESS

चंपक पढ़ें →→→ आगे बढ़ें

चंपक की कहानियों के छपे **सुंदर चित्र,** जानकारी, रोचक **कहानियों** से याद रखने की आदत बनेगी.

स्क्रीनों की तसवीरें मन में टिकती नहीं हैं.

छपे चित्रों को काट कर सजा लें, खुद ही इन में सुंदर रंग भर लें. अपटूडेट रहें.

हवाई जहाज में हों, बस में हों या रेल में, हर समय **चंपक सच्ची दोस्त.**

चंपक पढ़ें, आगे बढ़ें.

ग्राहक बनने के लिए
Subscription@delhipress.in

वह दीप्ति से अकेले में कुछ बातें करना चाहती थी.

दिव्या घर पहुंची तो मुख्य दरवाजा थोड़ा सा खुला था, इसलिए दरवाजे की घंटी बजाए बगैर ही वह धीरे से अंदर आ गई. अंदर आने पर उस ने देखा, दीप्ति किसी से फोन पर बात कर रही थी. एक तो दरवाजे की ओर उस की पीठ थी, दूसरे, वह बातों में इस तरह मगन थी कि दिव्या के आने का उसे पता ही नहीं चला. दिव्या उस के करीब आ कर खड़ी हो गई तो दीप्ति की बातें उस के कानों में पड़ीं.

दीप्ति कह रही थी, “प्लीज निखिल, अभी आओ और मुझे ले चलो. मम्मी मेरे साथ इस तरह का व्यवहार कर सकती हैं, मैं ने सपने में भी नहीं सोचा था. अपनी ही बेटी के साथ ऐसा व्यवहार... निखिल, अब मुझ से सहन नहीं हो रहा है.

“सच ही कहा गया है, शादी के बाद ससुराल ही बेटी का घर होता है. मायके का सहारा नहीं लेना चाहिए. ननद की शादी से ज्यादा भाई की शादी को महत्त्व दिया. भाई की शादी के लिए मम्मी को भी उलटासीधा बोल दिया, नाराज हो कर चली आई. उसी का सिला मुझे मिल रहा है,” इतना कहतेकहते दीप्ति की आवाज भर्रा गई थी.

यह सुन कर दिव्या को उचित नहीं लगा. इसलिए वह जिस तरह दबेपैर अंदर आई थी, उसी तरह बाहर निकल गई. जब उसे लगा कि दीप्ति ने फोन रख दिया है, तब दिव्या ने घंटी बजाई.

दीप्ति ने दरवाजा खोला, तो उस के चेहरे पर ग्लानि साफ झलक रही थी, आंखों की पुतलियां भारी थीं. दिव्या को देख कर दीप्ति ने पूछा, “क्या हुआ भाभी, वापस क्यों आ गईं?”

“टिकट नहीं मिले,” दिव्या बोली.

दिव्या ने अंदर आ कर देखा, दीप्ति अपने और पूर्वी के कपड़े मोड़ कर बैग में रख रही थी. अभी तक उस ने शाम के खाने के लिए कुछ तैयारी नहीं की थी. दुखी हो कर वह मां के घर से जा रही थी. उस के जाने के बाद घर की सारी जिम्मेदारी दिव्या पर पड़ने वाली थी, इसलिए उस ने सोचा, क्यों न वह इस की शुरुआत अभी से कर दे. उस ने कहा, “दीप्ति, तुम कहो तो मैं खाना बनाऊं. बताओ, क्या बनाना है?”

“सब्जी काट दी है, अभी बना लूंगी. रोटी का आटा गूंदना पड़ेगा. पर तुम रहने दो, वह भी कर लूंगी.”

दिव्या दीप्ति से बातें कर रही थी कि उस की सास आ गईं. रसोई में कुछ न होते देख वे कुछ नहीं बोलीं. सहज नजरों से दीप्ति को घूरते हुए बोलीं, “दिव्या, आज तुम्हारे हाथों से रसोई का शगुन होना है, इसलिए तुम तैयार हो जाओ.”

उन की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि घंटी बजी. दिव्या ने दरवाजा खोला, तो सामने उस के ननदोई निखिल खड़े थे. उन्हें देख कर उस की सास ने हैरानी से कहा, “अरे निखिल, तुम? फोन भी नहीं किया और अचानक...”

“हां मम्मी, अगर दीप्ति चलना चाहे तो मैं इसे अभी ले जाऊं. घर में बहुत काम है. शादी के अब सिर्फ 10 दिन ही रह गए हैं. मम्मी कहती हैं कि दीप्ति और पूर्वी के बिना घर सूनासूना सा लगता है.”

पूर्वी अपने पापा को देख कर खुश हो गई थी. दीप्ति की आंखों में भी स्वाभिमान की चमक आ गई थी. खुशीखुशी उस ने गाजर का हलवा

बनाया, बाकी का खाना दिव्या की सास ने बनाया और दामाद को प्रेम से खिलाया.

दीप्ति एकदम शांत थी. वह विदा होने लगी तो दिव्या के पास जो सब से अच्छी साड़ी थी और दीप्ति को पसंद भी थी, उसे देने लगी तो उस की आंखें भीग गईं. लेकिन उस की सास यानी दीप्ति की मां अटल थीं.

दीप्ति चली गई तो दिव्या, उस की सास और सौरभ आ कर बैठक में बैठ गए. दिव्या की सास ने एक बार उस की ओर देखा और जोरजोर से रोने लगीं. दिव्या और सौरभ अवाक रह गए. उन की समझ में नहीं आया कि आखिर ऐसा क्या हुआ कि मम्मी इस तरह रोने लगीं. इस तरह तो वे तब भी नहीं रोई थीं, जब दीप्ति पहली बार विदा हुई थी.

दिव्या गिलास में पानी ले आई, तो दो घूंट पानी पी कर स्वस्थ होने के बाद वे बोलीं, "दिव्या, यह दीप्ति मुझे सौरभ से भी ज्यादा प्यारी है. अधिक लाड़प्यार की वजह से थोड़ा जिद्दी हो गई है. इस की सास मेरी सहेली है. वह मुझ से भी ज्यादा सीधी और सरल है, लेकिन यह लड़की ससुराल में किसी को भाव नहीं देती."

दिव्या की सास पलभर के लिए रुकीं. इस बीच उन्होंने आंचल से आंसू पोंछे. लंबी सांस खींच कर नाक साफ की. उस के बाद वे बोलीं, "इस की ननद की शादी है, फिर भी सास से लड़ाईझगड़ा कर के हमारे यहां शादी से 20 दिन पहले आ गई. शादी हो गई, इस के बावजूद वह ससुराल जाने का नाम नहीं ले रही थी. मेरा दामाद बहुत भला और समझदार है, इसलिए हम तीनों ने सलाह कर के दीप्ति को सही रास्ते पर लाने की योजना बनाई.

सास और बहू के बीच रिश्ता सामान्य कैसे बने?
इस तरह के सवालों के सही उत्तर पाने के लिए सरिता नियमित पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए. रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी.
Subscription.mag@delhipress.in पर ईमेल भेजिए या 08588843408 पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें.

"मैं ने नौकरानी को वेतन दे कर इस महीने काम पर आने से मना कर दिया. तुम्हें भी कुछ नहीं करने दिया. इस तरह घर के सारे काम का बोझ उस के ऊपर डाल दिया. बचपन से आलसी रही दीप्ति से मैं छाती पर पत्थर रख कर घर के सारे काम उस से अकेले कराती रही. ऊपर से चार उलटीसीधी बातें भी सुनाती रही."

इतना कहतेकहते दिव्या की सास एक बार फिर सुबक पड़ीं. हथेलियों से आंसू पोंछ कर उन्होंने कहा, "आज सुबह वह मुझ से बहस करना चाहती थी, पर मैं ने उसे यह कह कर चुप करा दिया कि ज्ञान और गुमान अपने घर में ही अच्छा लगता है. इस के बाद मैं ने दामाद को फोन कर कहा कि अगर दीप्ति उसे फोन करती है तो वह तुरंत आ जाए.

"मेरा दामाद निखिल बहुत प्यारा है. दीप्ति का ऐसा स्वभाव था कि कोई दूसरा उसे पूछता न. मुझे लगता है कि उसे सिखाने और समझाने में कुछ कसर रह गई थी, जो इस बार पूरी हो गई."

एक बार फिर दिव्या ने अपनी सास को परखा. वह आंसूभरी आंखों से उन के सीने से लग कर बोली, "मांजी, मुझे माफ करना. एक बार फिर मेरे मन में आप के लिए गलत धारणा आने का अपराध हुआ है." ●

हमारी बेड़ियां

हमारे परिवार में परंपरा है कि जब परिवार के किसी सदस्य का देहांत हो जाता है तो उस परिवार की सभी महिलाएं मुलतानी मिट्टी से स्नान करती हैं.

जब मेरी मौसी की जेठानी का देहांत हुआ तो उस समय दिसंबर का महीना था और दिल्ली में कड़ाके की ठंड पड़ रही थी. जब मौसीजी की जेठानी का अंतिम संस्कार हो गया तो परंपरा के अनुसार सभी को मुलतानी मिट्टी लगा कर सीधा नल या हैंडपंप के पानी से नहाना था.

मौसी की सास लगभग 70 वर्ष की थी. उन्होंने भी सब के मना करने के बावजूद मुलतानी मिट्टी लगा कर हैंडपंप के पानी से स्नान कर लिया. उन को ठंड लगने के कारण निमोनिया हो गया. लगभग 20 दिनों के इलाज के पश्चात उन्होंने सदा के लिए आंखें मूंद लीं. इस तरह एक बुजुर्ग महिला पुरानी परंपरा के नाम पर बलि चढ़ गई.

पूजा अशोक (सर्वश्रेष्ठ)

कोरोना आने से हमारी जिंदगी इतनी बदल गई जितना हम लोगों ने कभी सोचा भी न था. पूजापाठ, रहनसहन सबकुछ अलग हो गया लेकिन हमारे आसपास अभी भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस दौर की चुनौती को समझने को तैयार नहीं हैं. अभी अप्रैल में जैसे ही नवरात्रे आए रुड़की में हमारे घर के आसपास सभी लोगों ने पूरे 9 दिन के उपवास रखे. लोगों में धार्मिक आस्था कूटकूट कर भरी है. वक्त की नजाकत कुछ नहीं समझते, बस सदियों से चली आ रही मान्यताएं, व्रत, उपवास पूरे करना उन का प्रमुख ध्येय होता है.

हर साल यहां के अधिकतर लोगों का यही क्रम रहता है. पहले व्रत वाले दिन लोगों ने हमेशा की तरह व्रत खोला और कुट्टू के आटे के पकवान खाए. इस बार कुछ दुकानों पर मिलावटी आटे के आने की शिकायत आई.

हमारे एक पड़ोसी भी वही आटा ले कर आए इस से उन की तबीयत रात के समय बहुत अधिक खराब हो गई. रात में दोनों पतिपत्नी को अस्पताल ले कर जाना पड़ा. डाक्टर ने उन्हें कहा कि कोई व्रत का खाना नहीं खाना. सादा भोजन करो और दालचावल खाना. लेकिन भाईसाहब ठहरे धार्मिक प्रवृत्ति के, अपनी जिद पूरी की.

हालत इतनी खराब होने के बावजूद हमारे पड़ोसी भाईसाहब ने अपने व्रत नहीं तोड़े. ऐसे पूजापाठ का क्या फायदा जिस से अपनी जान पर ही बन पड़े.

अंकिता प्रकाश ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/ऑडियो** भी कर सकते हैं.*

08527666772

भाग-2

रिश्ते बड़े नाजुक होते हैं, उन्हें संभालना पड़ता है. प्रशोभा ससुराल में बहू बन कर आई थी. उसे पति के साथसाथ दूसरे सभी रिश्तों को बिना उलझाए एक तार में पिरोना था.

अभी तक आप ने पढ़ा प्रशोभा अपने पति राघव के साथ देवर माधव की शादी के लिए ससुराल पहुंचती है. ससुराल में शादी की तैयारियां चल रही होती हैं. प्रशोभा ने गौर किया कि उस के जेठ ऊधव उस का कुछ खास ही खयाल रख रहे हैं और उस के नजदीक रहना पसंद करते हैं.

प्रशोभा को अपनी ननद किरण से पता चलता है कि जेठ ऊधव कंचन नाम की लड़की से प्रेम करते थे लेकिन पिता के मना करने पर उन्होंने कभी भी शादी न करने का प्रण ले लिया था.

एकदो ऐसी घटनाएं हुईं कि प्रशोभा को लगा कि जेठ ऊधव उस के प्रति आकर्षित हैं. क्या प्रशोभा अपने जेठ ऊधव की मनोस्थिति समझ रही थी? पढ़िए आगे...

जेठ जीजाजी

• जीतेंद्र मोहन भटनागर

मैं उन की आंखों में उभरते उन्माद को लगातार परख रही थी. फिर जब दूरी एक मीटर के आसपास की रह गई तो मेरी आंखों की स्थिरता व चेहरे की दृढ़ता देख कर वे वहीं रुक कर बोले, "तुम्हें मुझ से डरने की जरूरत नहीं है. तुम मेरे कमरे में बेहिचक चली आया करो. देखो, मैं ने अपने कमरे को आधुनिक रूप से बनवा लिया है. यहां अटैच्ड लैट्रीनबाथरूम में मैं ने गीजर, शौवर और सारी लैटेस्ट फिटिंग्स के साथ कमरे में एसी भी लगवा रखा है."

तभी नीचे से राघव की आवाज आई, "अरे प्रशोभा, कहां रह गईं, एक साड़ी लाने में इतनी देर?"

राघव की आवाज सुन कर मैं ने तुरंत जवाब दिया, "बस, 2 मिनट में आ रही हूं."

फिर धीरे से जेठजी से बोली, "भाईसाहब, अभी साड़ी आप अपने पास ही रखिए. मुझे जिस दिन पहननी होगी, आप से मांग लूंगी," इतना कह कर मैं तुरंत वहां से हट गई और पास के उस कमरे में तेजी से घुस गई जहां मेरा सामान रखा हुआ था.

अंदर से दरवाजा बंद कर के पहले बाथरूम में घुसी. यह बाथरूम भी अटैच्ड और साफसुथरा था लेकिन जैसी व्याख्या भाईसाहब ने अपने बाथरूम की की थी वैसा नहीं था और एसी की जगह कमरे में कूलर लगा था.

फ्रैश हो कर मैं ने जल्दी से अटैची खोल कर अपनी होने वाली देवरानी को देने वाली इलाहाबाद से खरीदी हुई साड़ी व चांदी की करधनी निकाली तथा फिर से अटैची बंद कर के दरवाजा खोल कर भाईसाहब के कमरे के सामने से तेजी से गुजरती हुई सीढ़ियों से नीचे उतर गई.

मैं ने महसूस कर लिया था कि भाईसाहब मुझे रोकने या मुझ से कुछ कहने के इरादे से अपने कमरे के दरवाजे पर ही खड़े हैं. पर इस बात से अनजान होने का नाटक करते हुए मैं फटाफट सीढ़ियां उतर कर मां वाले कमरे में पहुंची.

बड़ी देर तक मैं और राघव मां के साथ बैठ कर शादी की तैयारियां करते रहे. फिर कल पूरे दिन की योजना बना कर सीढ़ियां चढ़ कर अपने कमरे में आ गए.

भाईसाहब ने एसी चला कर अपना कमरा बंद कर लिया था और पता नहीं सो रहे थे या जग रहे थे. कूलर आवाज बहुत कर रहा था. मैं अपना नाइट गाउन पहन कर राघव के पास आ कर लेटी ही थी और अभी कुछ देर पहले का जेठजी वाला किस्सा बताने जा ही रही थी कि ऐसा लगा कि बाहरी दरवाजे पर कोई दस्तक दे रहा है.

राघव बोला, "लग रहा है कोई दरवाजा खटखटा रहा है. देखता हूं उठ कर."

राघव दरवाजे की ओर बढ़ने लगा तो मैं ने कहा, "अगर भाईसाहब हों तो तुम उन को कमरे के अंदर लिए न चले आना. मैं गाउन पहन चुकी हूं. ज्यादा देर तक बात करनी हो तो उन्हीं के कमरे में चले जाना. मुझे पूछें तो कह देना सो गई है."

इतना कह कर मैं चादर के भीतर घुस गई और मुंह ढक कर लेट गई. राघव ने दरवाजा खोला, जेठजी ही थे. राघव को देखते ही बोले, "प्रशोभा सो गई क्या?"

शायद राघव ने हां कहा होगा क्योंकि कूलर की आवाज में शब्द स्पष्ट नहीं सुनाई दे रहे थे. फिर भी जो मेरे कानों में पड़ा उस से मैं ने अनुमान लगाया कि वे कह रहे थे, "बड़ी जल्दी सो गई. मैं तो तुम दोनों को अपने कमरे में सोने के लिए बुलाने आया था. चलो, कोई बात नहीं. अब तुम भी सो जाओ, कल सवेरे बातें करेंगे."

मैं ने कमरे का दरवाजा बंद होने की आवाज सुनी तो अपने मुंह पर ढकी चादर हटाते हुए राघव को देखा, फिर उसे कमरे की लाइट बंद करने का इशारा किया.

जब वह मेरे पास आ कर उसी चादर में घुस गया तो मैं उस से चिपट कर लेट गई.

मेरे अनुमान से रात को एक तो बज ही गया होगा, इसलिए मैं भाईसाहब से हुई अपनी बातचीत राघव को इस समय भी न बता पाई. बस, उस की बांहों में सिमट कर सो गई.

सवेरे दरवाजा खटकने की आवाज से मेरी और राघव की एकसाथ ही आंख खुल गई. राघव तो कूलर बंद कर के दरवाजा खोलने बढ़ गया और मैं इस आशंका से कि कहीं जेठजी न हों, उठ कर सीधी बाथरूम में घुस गई.

जेठजी ही थे क्योंकि उन की आवाज मेरे कानों में स्पष्ट आ रही थी, "कितना सोते हो तुम लोग, 8 बजने वाले हैं, मैं बैड टी पीने के बाद कब से तुम दोनों का इंतजार कर रहा हूं. चलो, नीचे चल कर चाय पीते हैं."

"भाईसाहब, आप चलो, हम फ्रैश होने के बाद ब्रश कर के अभी आते हैं," राघव की आवाज थी.

"मैं तुम दोनों के साथ ही नीचे उतरूंगा."

"लेकिन भाईसाहब, अभी तो प्रशोभा बाथरूम में घुसी है. नहा कर ही निकलेगी. वह निकलेगी, तभी मैं नहाने के बाद तैयार हो कर ही नीचे उतरूंगा. आज माधव के साथ जा कर बहुत से काम करने हैं. आप चलो भाईसाहब, हम पहुंचते हैं."

"मुझे पता है कि तुम नहाने में कितना समय लगाते हो. तुम ऐसा करो कि अपना तौलिया वगैरह ले लो और चल कर मेरे बाथरूम में नहा लो. आओ चलो."

"ठीक है भाईसाहब, ऐसा ही करते हैं." इस के बाद एकदम से चुप्पी छा गई. मैं ने पदचाप से अनुमान लगाया कि राघव ने कमरे में आ कर बैग से अपना टूथब्रश और तौलिया आदि लिया और भाईसाहब के साथ उन के कमरे में फ्रैश होने चला गया.

बाहर कमरे की शांति से निश्चिंत हो कर मैं धीरे से बाथरूम से बाहर निकली, अटैची में से जल्दी से अपनी ब्रा, पेटीकोट, ब्लाउज और तौलिया ले कर गुसलखाने में घुस गई. साड़ी निकाल कर पलंग पर यह सोच कर रख दी कि नहाने के बाद बाहर निकल कर ढंग से पहनूंगी.

नहाधो कर मैं तौलिए से सिर के बाल पोंछती हुई पेटीकोट व ब्लाउज पहने जब बाहर निकली तो ड्रैसिंग टेबल के पास से आवाज आई, "प्रशोभा, वास्तव में तुम बहुत सुंदर हो. देखो, मैं तुम्हारे लिए बहुत अच्छी खुशबू वाला सैंट कन्नौज से लाया था जब दिव्या को देखने गया था. नहाने के बाद बदन पर स्प्रे करने से दिनभर मन प्रसन्न रहता है," कह कर वे मुझे इत्र देने के बहाने बढ़े तो मैं एकदम से घबरा गई.

बड़ी देर तक मैं और राघव मां के साथ बैठ कर शादी की तैयारियां करते रहे. फिर कल पूरे दिन की योजना बना कर सीढ़ियां चढ़ कर अपने कमरे में आ गए.

मेरा इधर तो ध्यान ही नहीं था कि राघव को अपने बाथरूम में नहाने के लिए भेज कर जेठजी इस कमरे में आ कर मुझे इस रूप में देखने के इरादे से आ कर बैठ सकते हैं. मैं यह भी जानती थी कि राघव इतनी जल्दी नहा कर निकलने वाला नहीं है.

इसलिए मेरे पास एक ही विकल्प बचा था कि मैं उन की कुदृष्टि से अपने को बचाने के लिए फिर बाथरूम में घुस जाऊं, इसलिए मैं तेजी से पलटी और बाथरूम में घुस गई.

पीछे से मैं ने भाईसाहब की आवाज सुनी, "प्रशोभा, पता नहीं तुम मुझ से इतना क्यों घबराती हो. मुझ से डरने की क्या जरूरत है. अरे, मैं राघव का बड़ा भाई हूं, कोई भूतप्रेत नहीं. लो, मैं जा रहा हूं. सैंट की शीशी साड़ी के पास रखे जा रहा हूं."

गरमी के दिनों में नहाने के बाद गुसलखाने में फिर यों घुस जाने के कारण मेरा बदन पसीने से भीगने लगा था और मैं अपनी गलती पर पछताने लगी कि जब अटैची से कपड़े निकालने आई थी तो बढ़ कर कमरे का दरवाजा भी बंद कर लेना चाहिए था.

तभी मुझे बाथरूम के बाहर कमरे के अंदर से माधव की आवाज सुनाई दी. वह आवाज लगा रहा था, "भैया, भाभी, आप दोनों को नीचे दीदी, मांजी और बाबूजी पूछ रहे हैं. बड़े भैया भी नीचे पहुंच गए हैं. मैं आप दोनों को बुलाने आया हूं."

माधव की आवाज सुन कर मुझे राहत मिली और मैं अंदर से चिल्लाई, "माधव भैया, वहां पलंग पर पड़ी मेरी साड़ी मुझे पकड़ा दो. और भाईसाहब के कमरे में जा कर उन के बाथरूम का दरवाजा खटखटा दो वरना तुम्हारे राघव भैया दिनभर नहाते ही रहेंगे."

मुझे साड़ी पकड़ा कर माधव यह कहते हुए चला गया, "भाभी, जितनी

जल्दी हो सके, तैयार हो कर नीचे आ जाओ. मैं भैया को भी उस बाथरूम से निकालता हूं."

उस के जाते ही मैं बाथरूम से निकली. कमरे का कूलर चलाया और जल्दी से तैयार हो गई. पलंग पर पड़ी सैंट की शीशी को उठाया और कूलर की तरफ कर के कई बार हवा में स्प्रे कर दिया. अपने कपड़ों पर छिड़कने की इच्छा ही नहीं हुई. तभी राघव भी फ्रैश हो कर आ गया. कमरे में फैली सुगंध को सांसों में भरता हुआ बोला, "अरे वाह, बड़ी मस्त खुशबू है. यह स्प्रे तुम ने कब खरीदा?"

मैं ने नहीं खरीदा, इसी कमरे में रखा था. शादी के घर में कोई नया उपद्रव न खड़ा हो जाए, इसलिए मैं असली बात छिपा गई और बोली, "तुम जल्दी से तैयार हो जाओ, नीचे सब लोग नाश्ते पर हमारा इंतजार कर रहे हैं."

नाश्ते की मेज पर इस समय आठों कुरसियां भरी थीं. मांपिताजी, जेठजी, दीदी, नितिन और माधव के साथसाथ जब मैं और राघव भी बैठ गए तो हमारा ज्यादा इंतजार न करते हुए मांजी, पिताजी, दीदी और नितिन ने तो नाश्ता शुरू कर दिया था और लगभग खत्म पर था.

माधव ने भी स्लाइस बटर का पीस उठा कर खाना शुरू कर दिया था. पर जेठजी अपनी प्लेट में नाश्ता परोसे बैठे थे. मैं ने जानबूझ कर उन की तरफ नहीं देखा. लेकिन मुझे आभास था कि वे मेरे चेहरे के भाव पढ़ने का प्रयास कर रहे थे. तभी पिताजी ने माधव से पूछा, "बेटे, आज का क्या प्रोग्राम बनाया? अब हमारे पास 2 दिन ही बचे हैं. हमें रिश्तेदारों के आने से पहले सारे जरूरी सामान के साथ कानपुर पहुंच कर होटल में शिफ्ट हो जाना है."

"हां पिताजी, मैं और राघव भैया नाश्ता कर के निकल रहे हैं. बड़े भैया को कैटरर से मिल कर मैरिज वाले दिन का पूरा मीनू सैट करना है."

माधव ने जैसे ही अपनी बात खत्म की, जेठजी बोल पड़े, "मैं ने फोन पर कैटरर को सारे मीनू डिक्टेट कर दिए हैं. तुम लोगों को परेशान होने की जरूरत नहीं है."

भाईसाहब ने अपनी बात खत्म की ही थी कि दीदी बोल पड़ीं, "फिर भी ऊधव, एक बार कैटरर से मिल लेने में कोई बुराई तो नहीं है. आखिर घर में बैठे रहने से तो अच्छा है कि शादी की सारी तैयारियां पुख्ता कर ली जाएं. अब दिन ही कितने रह गए हैं."

जेठजी को पता नहीं दीदी के द्वारा कही हुई हर बात से इतनी चिढ़ क्यों थी, तपाक से बोल पड़े, "तुम्हें तो मेरे हर काम में, हर चौइस में खोट ही दिखता है."

"इस में खोट की क्या बात है. लड़की वालों ने जब सारी जिम्मेदारी हम को दे दी है और सारी व्यवस्थाओं के लिए रुपए भी पकड़ा गए हैं तो हमारा कर्तव्य भी कुछ बनता है."

"किरण, तुम मुझे कर्तव्य न समझाओ," जेठजी गुस्से में आ गए. शायद मेरी उपस्थिति के कारण वे दबना नहीं चाहते थे. दीदी और उन की उम्र में कोई डेढ़ साल का अंतर था जबकि उन दोनों के बाद राघव 5 साल और राघव के 2 साल बाद माधव हुआ था. इसलिए किरण दीदी को बचपन से ही वे बराबर का सा समझते थे.

बात बढ़ती देख माताजी ने दोनों को डांट कर चुप कराया, फिर बेटी को

''भाईसाहब हमें छोड़ते हुए अपने औफिस जाने को तैयार हैं,'' प्रशोभा किरण दीदी से शरारतभरी मुसकान चेहरे पर लाते हुए बोली.

समझाते हुए बोलीं, "किरण, तू चुप रहा कर. जानती है न कि यह बातों में तुझ से दबने वाला नहीं है."

राघव और माधव उन से काफी छोटे होने के कारण चुपचाप नाश्ता करते रहे और पिताजी ने वहां से उठ जाना उचित समझा.

उन्होंने उठ कर ड्राइंगरूम की तरफ कदम बढ़ाते हुए राघव और माधव से कहा, "तुम दोनों नाश्ता कर के मुझ से मिलते हुए जाना."

पिताजी के उठते ही जेठजी भी उठ खड़े हुए, फिर मांजी से बोले, "मां, इस को समझा दो, यह मुझे राय न दिया करे. सारा मूड खराब कर देती है," थोड़ा रुक कर वे मांजी से फिर बोले, "अब मैं कुछ देर के लिए औफिस जाऊंगा, तभी मूड ठीक होगा."

"लेकिन तू ने तो पूरे 10 दिन की छुट्टी ले रखी है?"

"घर में बैठ कर भी क्या करूंगा, कौन है जो यहां मेरी कद्र कर रहा है?"

मैं ने इतनी देर में एक बार भी उन की तरफ देखने का प्रयास नहीं किया था. जैसे ही उन के मुंह से ये शब्द निकले, मैं ने उन की तरफ देखा. उन्होंने दीदी के साथसाथ मुझ पर भी व्यंग्य कसा था. मैं कसमसा कर रह गई. मन तो हुआ कि बोल दूं कि भाईसाहब, कद्र तो इंसान के व्यवहार और आचरण से होती है. पर शादी के घर में मेरी बात कोई बुरा असर न डाल दे, इसलिए चुप रह गई.

राघव और माधव भी नाश्ता कर के उठ खड़े हुए. जेठजी, पहले किरण को, फिर मुझे घूरते हुए सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर चले गए.

उन के जाते ही दीदी ने मां से कहा, "ऊधव के व्यवहार के कारण ही मेरा मायके आने का मन ही नहीं करता है. पता नहीं क्यों अब तक वह अपने कुंआरे रहने का कारण मुझे ही समझता है."

"छोड़ इन बातों को, उस का स्वभाव ही ऐसा है. तू, बस, यह शादी निबट जाने दे, फिर मैं निश्चिंत हो जाऊं. यह तो शादी करने से रहा."

"कितनी उम्र हो गई होगी भाईसाहब की?" मैं ने मांजी से पूछा.

"किरण से डेढ़ साल ही तो छोटा है. किरण 33 साल की हुई है तो यह 31 तो पूरे कर ही चुका है. पढ़ने में भी तेज था. पर कंचन के चक्कर में अपना जीवन बरबाद कर के बैठ गया," कहते हुए मांजी भी उठ खड़ी हुईं और अपने कमरे की तरफ बढ़ती हुई बोलीं, "प्रशोभा,

आज तुझे दिव्या का शृंगार बक्सा तैयार करना है."

"हां मां, आप निश्चिंत रहो," मैं ने उन्हें तसल्ली दी.

वह दिन अभी आधा ही गुजरा था. जेठजी करीब 2 घंटे बाद ऊपर से बाहर जाने के लिए तैयार हो कर उतरे. हो सकता है उन्होंने मेरा इंतजार किया हो कि शायद मैं किसी काम से ऊपर अपने कमरे में आऊं. लेकिन पता नहीं क्यों, भाईसाहब के अकेला होने तथा एक अज्ञात सी आशंका के कारण मैं नहीं गई.

जाने से पहले जेठजी सासुमां के कमरे में आए, मुझे घूरा और जब मैं ने नजरें उठा कर उन्हें देखा तो वे बोले, "प्रशोभा, तुम्हें बाजार से तो कुछ नहीं मंगाना है?"

"नहीं भाईसाहब, परसों तो हमें कानपुर शिफ्ट होना ही है और राघव बता रहे थे कि जहां हमारा होटल बुक है वहीं पास में मार्केट है. मुझे जो भी लेना होगा वहीं राघव के साथ जा कर ले आऊंगी."

जेठजी लगातार मुझे देखे जा रहे थे. मैं ने मुसकराते हुए अपनी बात जारी रखी, "भाईसाहब, आप परेशान न हों और औफिस जाएं. वैसे, अगर समय हो तो दीदी और मुझे यहां के ब्यूटीपार्लर में छोड़ दें. दीदी कह रही थीं कि भोगनीपुर में जो लेडीज ब्यूटीपार्लर है वहां कानपुर ब्यूटीपार्लर के मुकाबले बहुत बढ़िया व सस्ता काम हो जाता है."

असल में अभी कुछ देर पहले ही जब दीदी यहां नाश्ते के बाद मेरे और मांजी के पास आ कर बैठी थीं तभी हम ने तय कर लिया था कि कल तो लेडीज संगीत है और परसों यहां से कानपुर शिफ्ट होने में हमारा समय निकल जाएगा. फिर वहां अगले 2 दिन में ही सारे फंक्शन, जैसे मेहंदी, मढ़ा, हल्दीतेल, कंगन बंधाई, भात, रिसैप्शन, फेरेबिदाई आदि होंगे तो पता नहीं समय मिले न मिले. फेशियल, थ्रैडिंग, वैक्सिंग आदि का काम आज ही निबटा लिया जाए. इसलिए दीदी तैयार होने के लिए उठ कर अपने कमरे चली गई थीं.

फिर जब मां ने धीरे से दीदी से कहा, 'प्रशोभा तो नहाधो कर तैयार है, तू जल्दी से तैयार हो जा, तो मैं ऊधव से कह दूंगी वह जाते हुए अपनी कार से तुम दोनों को छोड़ देगा, वरना धूप में औटो ढूंढ़ती फिरोगी.' इसलिए मैं ने जब जेठजी से ऐसा बोला तो एक क्षण को उन के चेहरे पर इस बात से प्रसन्नता छा गई कि मैं उन की कार में बैठूंगी लेकिन किरण दीदी भी साथ होंगी, इस विचार से उन के चेहरे पर आई चमक लुप्त हो गई.

तभी दीदी भी तैयार हो कर एक हाथ में पर्स लटकाए हुए आ गईं, नितिन को मांजी के पास छोड़ा और बोलीं, "चलो प्रशोभा."

मैं ने उठते हुए दीदी को शरारतभरी मुसकान चेहरे पर लाते हुए बताया, "भाईसाहब हमें छोड़ते हुए अपने औफिस जाने को तैयार हैं," यह कह कर मैं सीढ़ियों की तरफ बढ़ते हुए बोली, "दीदी, मैं अपना पर्स ले कर 2 मिनट में आई."

यह सुन कर भाईसाहब बोल पड़े, "जब किरण जा रही है तो तुम्हें पैसे खर्च करने की जरूरत क्या है?" और यह कहने के बाद भाईसाइब किरण को देख कर इस तरह खिलखिलाए जैसे उन्होंने मेरे सामने अपनी बहन के रुपए खर्च करने को मजबूर कर के कोई किला फतेह कर लिया हो. अच्छा यह हुआ कि दीदी कुछ बोलीं नहीं, भाईसाहब की ओर शांत भाव से देख कर रह गईं.

-क्रमशः

मेरे पापा

मेरे पिताजी शिक्षा विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे. सादगी, ईमानदारी एवं अनुशासन, ये 3 उन के जीवन के मूल मंत्र रहे जो उन्होंने हम सभी भाईबहनों को विरासत में दिए. उन का पूरा जीवन अनुशासित था. अनुशासन को वे बहुत महत्त्व देते थे. सादा जीवन जीते थे और हमें भी समझाते थे कि दिखावा कुछ दिन कर सकते हो लेकिन असल में तुम जो हो, उसे दर्शाने में तुम्हें कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती. तुम्हारा प्रतिबिंब तुम्हारे आचारव्यवहार से परिलक्षित हो जाता है और ईमानदारी वह चीज है जो तुम्हारा चरित्र ऊपर ऊंचा उठा देती है.

ईमानदारी के साथ व्यक्ति निर्भीक जीवन जीता है. अपनी एक ही बात पर कायम रहता है. उसे सोचना नहीं पड़ता कि पहले उस ने अपनी बात क्या कही थी क्योंकि उस की बात में सचाई होती है और सच कभी बदलता नहीं.

हम सभी भाईबहनों की पढ़ाई पर उन का विशेष ध्यान था. जब भी हम में से कोई कक्षा में अच्छे अंक लाता या कोई प्रतियोगिता जीतता तो उसे विशेष पुरस्कार दे कर उसे प्रोत्साहित करना वे नहीं भूलते. पिताजी ने हमें अध्ययन संबंधी एक गुरुमंत्र दिया जो मैं कभी नहीं भूली.

अध्यापन क्षेत्र में होने के कारण मैं यह गुरुमंत्र अपने सभी छात्रों को देती हूं. उन के अनुसार अध्ययन के 3 भाग हैं. प्रथम, अगले दिन विद्यालय में जो पढ़ाया जाना है, उस को एक बार ध्यान से पढ़ लो. और कठिन हिस्सों को चिह्नित कर लो.

द्वितीय, जब दूसरे दिन विद्यालय में वह पाठ पढ़ाया जाए तो ध्यान से समझो और चिह्नित हिस्सों पर विशेष ध्यान दो, यदि समझ न आए तो उसी समय अपने गुरुजन से पूछो और समझो.

तृतीय, घर आ कर उस दिन पढ़ाए हुए पाठ को पूरे मनोयोग से दोहराओ. बस, अब यह पाठ कभी नहीं भूलोगे. सीधे परीक्षा के समय पढ़ोगे तब भी याद रहेगा.

आज हमारे पिताजी हमारे बीच नहीं हैं पर उन का यह गुरुमंत्र उन की शिक्षाएं, उन के आदर्श आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं.

जब भी मन में कोई दुविधा या दुख होता है, पापा बहुत याद आते हैं. जीवनमार्ग पर जब भी ठोकर लगती है, आज भी पापा का हाथ संबल बन कर मानो मुझे सहलाता महसूस होता है.

शशि प्रधान (श्रेष्ठ) ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव **नाम व पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/ ऑडियो** भी कर सकते हैं.*

08527666772

व्यंग्य

एयरपोर्ट के भीतर

• अनिल हासन

एयरपोर्ट का वातावरण ही कुछ ऐसा होता है कि व्यक्ति शालीनता का आवरण ओढ़ लेता है. अब आप पान की दुकान पर तो खड़े नहीं हैं कि किसी भी आतेजाते से बतियाने लग जाओगे.

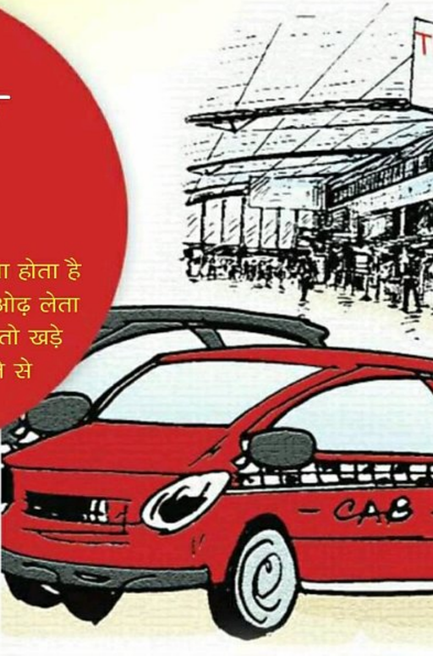

दुनिया मे 2 तरह के लोग होते हैं. एक जो हमेशा ही शालीनता से पेश आते हैं और दूसरे जो एयरपोर्ट पर जा कर शालीन बन जाते हैं. एयरपोर्ट का वातावरण ही कुछ ऐसा होता है कि आप न चाह कर भी सभ्य बन जाते हैं. वहां हम अपने स्वाभाविक व्यवहार पर अतिरिक्त विनम्रता का आवरण ओढ़ लेते हैं.

एक मातापिता अपने बच्चे को एयरपोर्ट पर खुल कर डांट नहीं सकते. घर पर वही बच्चा शरारत करने पर पिताजी के मुख से जो अमृत वचन सुनता है वह ही कमबख्त एयरपोर्ट पर बदमाशी कर के साफ बच निकलता है. बहुत हुआ तो पिताजी धीरे से इंग्लिश में 'नो नो' ही बोल पाएंगे पर घर में देसी भाषा में तूतड़ाक सुनने वाले बच्चे को भला इस से क्या फर्क पड़ने वाला है. बच्चा अपनी मस्ती में मशगूल है.

ऐसे ही अकसर गुस्से में रहने वाले एक सज्जन एयरपोर्ट पंहुचे. कैब से उतरते ही ड्राइवर से भिड़ गए. गाड़ी में बैठने से पहले जितना उन का अनुमानित बिल बता रहा था, एयरपोर्ट आने पर वह 10 रुपए बढ़ गया. बात 10 रुपए की भी नही, उसूलों की थी. इसलिए साहब ने ड्राइवर को खूब खरीखोटी सुना कर बिल का भुगतान किया. एयरपोर्ट पर घुसने से पहले उन्होंने अपना मूड ठीक किया और भीतर जाते ही सब से मुसकरा कर बातें करने लगे. कोई कह ही नहीं सकता था कि ये वही सज्जन हैं जो अभी 5 मिनट पहले कैब ड्राइवर के पूरे खानदान को भलाबुरा बोल रहे थे. व्यवहार में इस प्रकार के क्रांतिकारी बदलाव एयरपोर्ट पर एक सामान्य घटना है.

एयरपोर्ट पर आप अन्य यात्रियों से यों ही किसी भी विषय पर मुंह उठा कर चर्चा नहीं कर सकते. पान की दुकान की तरह यहां मौसम का हाल बता कर भी वार्त्तालाप प्रारंभ नहीं होता. यहां पर आप सिर्फ बुद्धिजीवियों वाले विषयों पर ही बातें कर

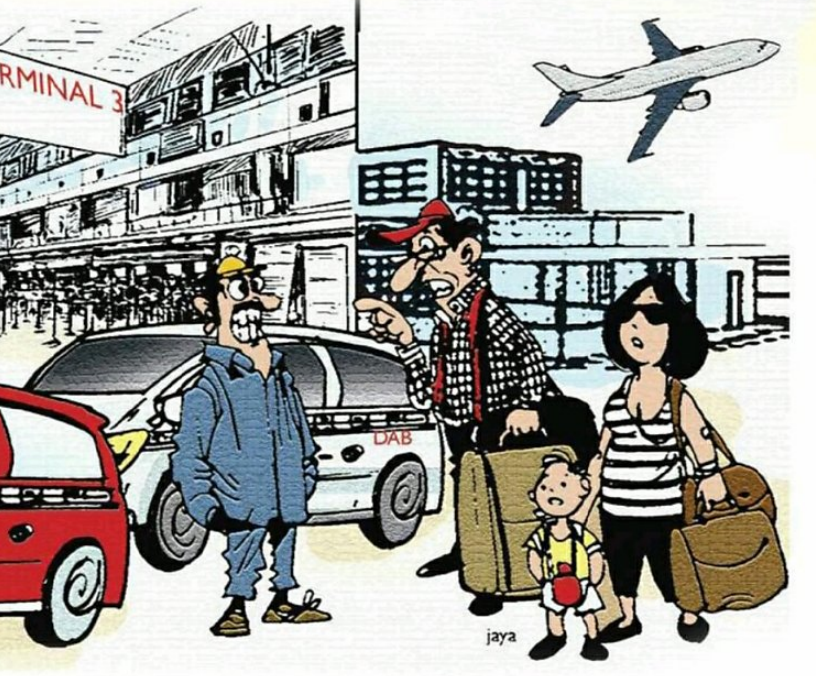

सकते हैं. मसलन, यदि आप घरेलू विमान के यात्री हैं तो भारत की आर्थिक चुनौतियों पर चर्चा कर सकते हैं. वहीं, यदि आप अंतर्राष्ट्रीय यात्रा कर रहे हैं तो वैश्विक चुनौतियों पर आंसू बहा सकते हैं.

यह शोध का विषय हो सकता है कि एयरपोर्ट पर खानेपीने की सामग्री के भाव इतने बड़े हुए क्यों होते हैं. खाद्य पदार्थों के दाम सुन कर आप खुद को गरीबीरेखा के नीचे महसूस करते हैं. यदि आप एयरपोर्ट पर खाद्य पदार्थ खरीद पा रहे हैं अथवा चाय भी पी रहे हैं तो आप को नैतिकता के आधार पर निश्चित ही एलपीजी सब्सिडी छोड़ देनी चाहिए. वास्तव में एयरपोर्ट ही एक ऐसी जगह है जहां एक मिडिल क्लास वाला भी गरीबी का अनुभव कर सकता है.

एयरपोर्ट और विमान यात्रा के दौरान केवल एक समय ऐसा आता है जब हम सारा दिखावटी आवरण त्याग कर अपने स्वाभाविक व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं. जब विमान रनवे पर उतरता है और सीट बैल्ट खोलने का संकेत होता है, सभी यात्री अपनेअपने बैग उठा कर पोजीशन ले लेते हैं. सब जानते हैं कि अभी विमान के द्वार खुलने में वक्त है, पर फिर भी कोई भी विमान के भीतर अपने 2 मिनट भी खराब नहीं करना चाहता, भले ही बाहर निकल कर बैगेज के लिए 10 मिनट रुकना पड़े. विमान से निकलने की यही अधीरता हमारी अनेकता में एकता को दर्शाती है. यह नजारा कुछ ऐसा होता है कि हमारा शरीर भले ही विमान में हो पर दिल हमारा अब भी राज्य परिवहन निगम की बस में होता है. ●

पाठकों की समस्याएं

मैं 42 वर्षीय पुरुष हूं. अचानक से जिंदगी में एक के बाद एक ऐसी घटनाएं घट रही हैं कि हरदम तनाव में रहता हूं. लगता है हंसी आए बरसों हो गए. पत्नी से तलाक हो गया है. पिता की अचानक मृत्यु हो गई. नौकरी कभी भी छूट सकती है. कंपनी घाटे में चल रही है, इसलिए पिछले 3 महीने से तनख्वाह नहीं मिली. बच्चे बहुत छोटे हैं जिन की जिम्मेदारी मेरी है. मम्मी का साथ है, लेकिन उन की भी उम्र हो गई है. कब तक मेरा साथ देंगी वे. उन से जितना बनता है, करती हैं. वे घर देखती हैं, मेरे बच्चों को संभालती हैं. इन सब हालात ने मेरी मानसिक स्थिति को डांवांडोल कर दिया है. मैं बहुत स्ट्रैस में हूं. क्या करूं?

कभीकभी जिंदगी में ऐसा फेज आता है लगता है चारों तरफ से मुसीबतें एक के बाद एक आ रही हैं. लेकिन सामना तो करना ही पड़ेगा. पिता की मौत का आप को गहरा सदमा लगा है, लेकिन आप को दिल मजबूत कर सोच को सकारात्मक रखना होगा. दूसरी नौकरी के लिए कोशिश कीजिए. आप में यदि काबिलीयत है तो दूसरी नौकरी मिलेगी. बस, कोशिश करना मत छोड़िए. आर्थिक तंगी हो रही होगी, लेकिन किसी तरह उसे मैनेज कीजिए. थोड़े दिन कोई पार्टटाइम जौब कर लीजिए. कुछ ऐसा काम करें जो घर बैठ कर हो सके. इस से आप बच्चे संभालने में मम्मी की मदद कर सकते हैं.

नौकरी मिल जाए और पैसों की ज्यादा दिक्कत न हो तो कोई नैनी रख लें जिस से बच्चों की देखभाल हो सके. दूसरी शादी एक विकल्प हो सकता है लेकिन बच्चों के साथ दूसरी पत्नी कितना एडजस्ट करती है, कुछ कह नहीं सकते.

ज्यादा स्ट्रैस मत लीजिए. स्ट्रैस का सीधा असर दिमाग पर पड़ता है. जिस की वजह से और परेशानियां बढ़ सकती हैं.

चिंता मत कीजिए, वक्त के साथसाथ सब समस्याएं दूर होंगी. बस, नैगेटिविटी को अपने ऊपर हावी न होने दें. स्ट्रैस से दूर रहने के लिए सकारात्मक सोच रखें. अपनी कमजोरियों को स्वीकार करें. रोज सुबह ऐक्सरसाइज करें. अपने खानेपीने का ध्यान रखें. दोस्तों से मेलजोल बनाएं. बच्चों के साथ समय बिताएं. अपने उत्साहजनक व्यवहार से घर में अच्छा माहौल बना कर रखने की कोशिश करें. घर का खुशनुमा माहौल व्यक्ति में उत्साह भर देता है और अभी आप की उम्र ही क्या है. अपने में नया जोश भरिए और हर मुसीबत का डट का सामना कीजिए.

*

मेरी उम्र 22 साल है, सेहतमंद हूं और खानापीना भी अच्छा है. लेकिन मुझे कब्ज, गैस की शिकायत रहती है. मुझे घरेलू नुस्खे बताएं क्योंकि मैं इस के लिए दवाइयों का सेवन नहीं करना चाहता.

पेट में गैस, कब्ज के लिए घरेलू नुस्खे सदियों से अपनाए जा रहे हैं और वे कारगर भी साबित हुए हैं. जैसे, गैस की

समस्या से बचने के लिए भोजन के बाद गुनगुना पानी पिएं. गैस की दिक्कत बारबार होती है तो पानी के साथ थोड़ी सी अजवाइन निगल लें. गैस होने पर पेटदर्द और कई बार जी मचलाने लगता है, ऐसे में अदरक के रस को हलके गरम पानी में थोड़ी चीनी मिलाएं और पिएं.

खाना खाने के बाद सौंफ खाने से पेट की परेशानियों से नजात मिलती है. कब्ज की शिकायत होने पर आधा चम्मच अजवाइन थोड़े से नमक के साथ गरम पानी के साथ खाएं. ध्यान रखें, गलत खानपान की वजह से पेट की परेशानियां बढ़ जाती हैं, इसलिए उलटासीधा खाना खाने से बचें.

*

मैं 38 वर्षीय पुरुष हूं. सरकारी जौब में हूं. 35 वर्षीया पत्नी सरकारी स्कूल में वाइस प्रिंसिपल है. 2 बेटियां 7 और 5 साल की हैं. पत्नी घर और जौब को ले कर बहुत बिजी रहती है. सुबह जल्दी उठती है और रात में बैड पर आते ही सो जाती है. मेरा सैक्स के लिए बहुत मन करता है, लेकिन मैं जानता हूं कि वह बहुत थकी है, इसलिए अपना मन मार कर मैं भी सो जाता हूं. मुझे सैक्स करना बहुत अच्छा लगता है. समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं कि पत्नी भी सैक्स करने के लिए तत्पर रहे?

पत्नी जौब कर रही है तो घर की कुछ जिम्मेदारी आप भी उठाइए. शाम को पत्नी के कामों में हाथ बंटाइए ताकि उस का काम थोड़ा जल्दी खत्म हो जाए और आप दोनों को बिस्तर पर थोड़ा समय मिल सके.

शादी के बाद काम और जिम्मेदारियां निभाते और बच्चों के होने के बाद पतिपत्नी रोमांटिक बातें करने में संकोच करने लगते हैं. रोमांस को जगाए रखने का एकमात्र तरीका यही है कि आप भले सैक्स न करें, मगर रोमांटिक बातें करना न छोड़ें. आप औफिस से अपनी पत्नी को कोई नौटी सा जोक भेज सकते हैं या कभी कोई स्पैशल लांजरी, नाइटी गिफ्ट कर सकते हैं. इस से आप दोनों इमोशनल रूप से कनैक्ट रहेंगे, भले ही आप के बीच सैक्स कम हो.

पत्नी में जोश और उत्तेजना जगाए रखने के लिए आप को बीचबीच में कुछ न कुछ रोमांचक करते रहना चाहिए. बच्चों को कुछ घंटों के लिए दादादादी या नानानानी या किसी अन्य जिम्मेदार सदस्य के पास छोड़ कर पास के किसी होटल में जा सकते हैं. जहां आप साथ में नहा सकते हैं, सैक्स कर सकते हैं. ऐसे छोटेछोटे मोमैंट रिश्ते मजबूत बनाते हैं.

आप को यह बात समझनी होगी कि सैक्स का मतलब सिर्फ इंटरकोर्स नहीं है, बल्कि संतुष्टि व आनंद के लिए आप दूसरे तरीके भी अपना सकते हैं. अगर आप को सैक्स करने का समय नहीं मिल रहा है तो जब भी मौका मिले, पत्नी को हग कर लें. थोड़ा समय हो तो ओरल सैक्स करें. हाथों व उंगलियों के इस्तेमाल से एकदूसरे को संतुष्ट कर लें. कुछ भी कीजिए, मगर सैक्स करना मत छोड़िए क्योंकि सैक्स पतिपत्नी के रिश्ते का इंपौर्टेंट पार्ट है.

-कंचन ●

आप भी अपनी समस्या भेजें

पता : कंचन, सरिता

ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

समस्या हमें एसएमएस या व्हाट्सऐप के जरिए मैसेज/औडियो भी कर सकते हैं.

08527666772

चंचल छाया
PRODUCTION
TICKET

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम
★★½ मध्यम ★★ साधारण ★½ औसत

मैडम चीफ मिनिस्टर ★★

एक दलित नेता की कहानी

यह फिल्म उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के शीर्ष पर पहुंचने पर है. मायावती पहले बहुजन समाज पार्टी की प्रैसिडैंट बनीं. फिर 1995, 1997, 2002-03 और 2007-12 तक उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रहीं. फिल्म में मायावती का सियासी संघर्ष और उत्थान दिखाया गया है. वहीं, फिल्म में उन के नारों से ले कर जन्मदिन पर सजने तक की घटनाएं प्रमुखता से दिखाई गई हैं.

निर्देशक सुभाष कपूर, जो पेशे से पत्रकार रहे हैं और 'फंस गया रे ओबामा', 'जौली एलएलबी' और 'जौली एलएलबी-2' जैसी फिल्में बना चुके हैं, ने मायावती के कार्यकाल में उन के खिलाफ उठे कुछ मुद्दों, जैसे मायावती का लखनऊ के पार्कों में हाथियों के स्टैच्यू लगवाना और उन पर बेतहाशा पैसा खर्च करना, को नहीं दिखाया है. जिन लोगों को राजनीतिक ड्रामे अच्छे लगते हैं उन्हें यह फिल्म अच्छी लग सकती है. फिल्म को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया है. निर्देशक एक दलित नेत्री की व्यक्तिगत जीवन की विषमताओं व ऐश्वर्य को दिखा पाने में कामयाब रहा है.

यह दुर्भाग्य अभी भी बना हुआ है कि 21वीं सदी का हिंदी सिनेमाजगत जाति से जुड़े सवालों को उठाना एक जोखिम के रूप में लेता है और उस से बचने की कोशिश करता है. वह सच को दिखाने के बजाय परंपरा और फैंटेसी को ज्यादा तरजीह देता है. कुछ फिल्में जो जाति के विषयों को छूती भी हैं वे अधकचरी सी महसूस होती हैं. जिस का बड़ा उदाहरण 'मैडम चीफ मिनिस्टर' के रूप में सामने आया है. सवाल हिंदी सिनेमा के कर्ताधर्ता से पूछा जाना चाहिए कि हिंदी समाज में

जब राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर पिछले दशकों से लगातार उथलपुथल चलती रही है, तो वे दलितों के हक के सवालों से क्यों मुंह चुराते रहे? क्या बौलीवुड के सारे विषय बाजार के साथ उस के रिश्ते से तय होते रहेंगे?

नब्बे के दशक में हिंदी साहित्य में दलितविमर्श मुख्य रूप से उभरा. इन्हीं वर्षों में हिंदी क्षेत्र में भी दलितोंपिछड़ों का आंदोलन देखने को मिला. पर हिंदी फिल्मों में दलितों के संघर्ष और उन के हक के सवाल हाशिए पर ही रहे. हम देखते हैं कि 'बैंडिट क्वीन', 'आरक्षण', 'मसान', 'आर्टिकल 15' जैसी सफल फिल्मों में दलित किरदार तो हैं, पर वे हिंदी सिनेमा में नया विमर्श खड़ा करने में असफल रहे हैं. और इसी कड़ी में 'मैडम चीफ मिनिस्टर' भी खड़ी दिखाई देती है. यह भी शुद्ध रूप से नया विमर्श पैदा ही नहीं कर पाती.

'मैडम चीफ मिनिस्टर' फिल्म के खिलाफ उठे बेबुनियाद विवाद पचते नहीं हैं. फिल्म का पोस्टर आने के बाद सब से पहला विवाद जो आलोचकों द्वारा उठाया गया वह ऋचा चढ्ढा के हाथ में झाड़ू थामे फोटो को ले कर था. आलोचकों का सवाल था कि क्या आज भी दलित मुद्दे पर बनाई फिल्मों में दलित छवि को झाड़ू के साथ दिखाना ठीक है? इन सवालों का जवाब शहरों के सीवरों में उतरते दलित तबके को देख कर समझा जा सकता है जिस के बारे में बात करना तक हम पसंद नहीं करते. सैप्टिक टैंक में मरते उन लोगों से समझा जा सकता है जिन्हें इंसान मानने तक से इनकार कर दिया जाता है.

साल 2014 में आई मराठी फिल्म 'कोर्ट' इस का सटीक उदाहरण है जिस ने सिनेमा के माध्यम से एक अच्छा दलितविमर्श खड़ा किया था. जिस ने आधुनिक व सभ्य शहरों में सीवर में उतरते, सैप्टिक टैंक के भीतर मीथेन व अन्य जहरीली गैसों से जान गंवाते उस हिस्से के बिंदु को छुआ. लेकिन देखा जाए तो फिल्म 'मैडम चीफ मिनिस्टर' घटनाओं का जिक्र तो करती व दिखाती है लेकिन किसी प्रकार का विमर्श खड़ा करने में बुरी तरह असफल है. हां, इस की तारीफ उस दमदार महिला दलित पात्र के लिए की जा सकती है जो

बेधड़क है, मजबूत है व सचेत है. लेकिन इसे एक बड़े विमर्श के लिए देखना दूर की बात है.

कहानी उत्तर प्रदेश के 1982 के दौर की है जब किसी दलित दूल्हे को घोड़ी पर बैठ कर बरात निकालने पर ठाकुर नाराज हो जाते थे और दूल्हे की जम कर पिटाई की जाती थी. इस फिल्म की शुरुआत भी ऐसी ही एक घटना से होती है. दलित द्वारा बरात निकालने पर ठाकुरों ने गोलीबारी की, तो दूल्हे का पिता रूपराम मारा गया. उसी वक्त रूपराम के घर में एक बेटी का जन्म होता है. बेटी की मां अपनी सास से मिन्नतें करती है कि वह बच्ची को पिछली 2 बेटियों की तरह न मारे.

फिल्म 'मैडम चीफ मिनिस्टर' के एक दृश्य में रिचा चड्ढा.

फिल्म के दूसरे सीन (2005) में जन्मी बच्ची तारा (रिचा चढ्ढा) अब बड़ी हो गई है. वह बेबाक, बिंदास निडर और पढ़ीलिखी है. वह एक ऊंची जाति के युवा नेता इंदु (अक्षय ओबेराय) से प्यार करती है, शादी के सपने देखती है. तभी उस की जिंदगी में एक तूफान आता है. जानामाना दलित नेता मास्टरजी (सौरभ शुक्ला) उसे राजनीतिक दल परिवर्तन पार्टी में शामिल करता है. उस के बाद तारा का एक आम लड़की से उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनने का सफर शुरू होता है. इस सफर में जातिवाद, विश्वासघात और षड्यंत्रों से भरा राजनीति का घिनौना चेहरा नजर आता है.

फिल्म की यह कहानी मध्यांतर से पहले दर्शकों को चौंकाती है. मध्यांतर के बाद फिल्म तारा की निजी जिंदगी पर केंद्रित हो जाती है. यह भाग काफी धीमा हो गया है. फिल्म का क्लाइमैक्स दमदार है. संवाद चुटीले हैं– 'यूपी में जो मैट्रो बनाता है वह हारता है, जो मंदिर बनाता है वह जीतता है', 'मैं कुंआरी हूं, तेज कटारी हूं लेकिन तुम्हारी हूं.'

फिल्म का निर्देशन अच्छा है. क्लाइमैक्स में अपने पति को व्हीलचेयर पर पेश कर तारा के किरदार को विक्टिम कार्ड खेलते दिखाया गया है. फिल्म का संगीत कमजोर है. रिचा चड्ढा का अभिनय दमदार है. फिल्म के शुरू में उस का बौयकट बालों वाला लुक कुछ परेशान सा करता है. मगर प्यार में अपरकास्ट से धोखाधड़ी और एक दलित लड़की का मुख्यमंत्री बनने का सफर लाजवाब है. सौरभ शुक्ला ने दर्शकों का दिल जीत लिया है. सिनेमेटोग्राफी अच्छी है.

फिल्म के रिलीज होते ही इस पर विवाद शुरू हो गया है. फिल्म में मायावती के किरदार तारा के हाथ में झाड़ू दिखाई गई है. इस से उन्हें अछूत दिखाने की कोशिश की गई है जबकि मायावती काफी पढ़ीलिखी थीं, विज्ञान की डिग्री लिए थीं. राजनीति में आने से पहले उन्होंने नौकरी भी की थी. ●

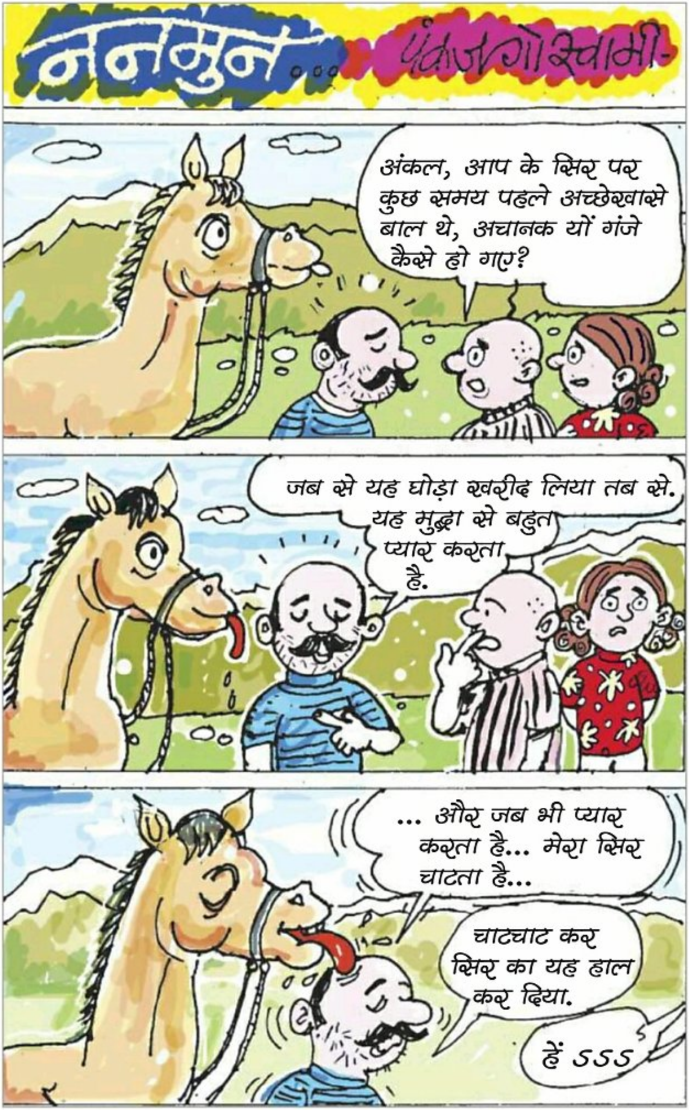
ननमुन...
पंकज गोस्वामी
अंकल, आप के सिर पर कुछ समय पहले अच्छेखासे बाल थे, अचानक यों गंजे कैसे हो गए?
जब से यह घोड़ा खरीद लिया तब से.
यह मुझ से बहुत प्यार करता है.
... और जब भी प्यार करता है... मेरा सिर चाटता है...
चाटचाट कर सिर का यह हाल कर दिया.
हें SSS

एक अंधे को बौक्सिंग सिखाने और उस पर फिल्म बनाने की चुनौती

अली : द ब्लाइंड बौक्सर

• शांतिस्वरूप त्रिपाठी

कोलकाता में जन्मे बिजौय बनर्जी 'अली : द ब्लाइंड बौक्सर' से काफी चर्चा में हैं. इस फिल्म ने कई अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड जीत लिए हैं. आखिर क्या खास है इस फिल्म में.

हर इंसान का जन्म समानरूप से होता है. इंसान के जन्म लेने के बाद समाज उस के साथ भेदभाव कर बांट देता है. इंसान को जाति, धर्म से ले कर उस के शारीरिक रंगरूप व शारीरिक बनावट के आधार पर बांटा जाता है. नेत्रहीन यानी कि आंखों की रोशनी खो चुके विकलांगों के साथ सर्वाधिक भेदभाव किया जाता है. नेत्रहीन को बौक्सर बनने की इजाजत नहीं है.

बौक्सिंग फैडरेशन नेत्रहीन/दृष्टिहीन विकलांग को भारत में बौक्सिंग की रिंग में उतरने की इजाजत नहीं देता जबकि युगांडा, इंग्लैंड जैसे देशों में दृष्टिहीन बौक्सर भी है, उन्हें इसे पेशे के रूप में खेलने की इजाजत नहीं है बस. सर्वाधिक

आश्चर्य की बात यह है कि पैरालिंपिक में व्हीलचेयर (जिन के पैर नहीं हैं अथवा जो अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकते) पर बैठे विकलांग को बौक्सिंग रिंग में उतर कर बौक्सिंग प्रतियोगिता का हिस्सा बनने का हक है, मगर दृष्टिहीन/अंधे इंसान को पैरालिंपिक भी बौक्सर बनने की इजाजत नहीं देता.

इसे नेत्रहीन विकलांगों के खिलाफ सामाजिक भेदभाव मानते हुए ही पुरस्कृत फिल्म सर्जक जोड़ी बिजौय बनर्जी और कौशिक मंडल ने एक घंटे की फिल्म 'अली : द ब्लाइंड बौक्सर' बनाई है, जोकि जन्म से ही नेत्रहीन/दृष्टिहीन बालक के बौक्सर बनने की दास्तान है.

यह फिल्म इस बात का भी सुबूत है कि एक नेत्रहीन विकलांग भी बौक्सर बन सकता है और वह बौक्सिंग रिंग के अंदर आंखों से देख सकने वाले किसी भी बौक्सर के साथ प्रतियोगिता कर सकता है. यानी बिजौय बनर्जी और कौशिक मंडल एक ज्वलंत मुद्दे पर मकसदपूर्ण फिल्म ले कर आए हैं, जिसे कई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में पुरस्कृत किया जा चुका है.

जब बिजौय से पूछा गया कि उन्हें यह फिल्म बनाने का खयाल कैसे आया तो वे कहते हैं, "हम लोगों ने 2015 में बांग्ला भाषा में एक 20 मिनट की लघु फिल्म 'उपहार' बनाई थी. फिल्म 'उपहार' को मिली सफलता व शोहरत ने हमें कुछ नया करने के लिए प्रेरित किया. तब हम ने सोचना शुरू किया कि किस विषय को उठाया जाए. हम ने महसूस किया कि हमारे यहां सामाजिक भेदभाव काफी हैं. यह बात मुझे व कौशिक को काफी कष्ट देती है. मेरा मानना है कि हम सभी समान स्तर पर ही पैदा होते हैं, उस के बाद समाज हम पर लेबल लगाता है. समाज हमें चमड़ी के रंग, शारीरिक बनावट आदि के आधार पर बांटता है और यह तय करता है कि कौन हमारे समकक्ष है, कौन हम से ऊंचा है और कौन हम से नीचा है. ये बातें हमें कष्ट देती हैं.

"इसी बीच हमें यह जान कर आश्चर्य हुआ कि दृष्टिहीन इंसान को समाज में 'बेचारा' की दृष्टि से देखा जाता है. इतना ही नहीं, खेल जगत में एक ऐसा क्षेत्र है जहां नेत्रहीनों को अछूत माना जाता है और यह खेल है बौक्सिंग. इस बात ने हमें आश्चर्यचकित करने के साथ बहुत तकलीफ पहुंचाई और सोचने पर भी मजबूर किया.

"बौक्सिंग फैडरेशन का नियम है कि दृष्टिहीन इंसान बौक्सिंग का हिस्सा नहीं बन सकते और इस नियम को बदला नहीं जा सकता. पैरालिंपिक में जूड़ो, कराटे जैसे शरीर को छूने वाले खेल दृष्टिहीनों के लिए हैं मगर बौक्सिंग नहीं है. अब आप खुद सोचिए कि एक इंसान व्हीलचेयर पर बैठा हुआ है, उस के पैर नहीं हैं, तब भी वह बौक्सिंग कर सकता है, मगर दृष्टिहीन इंसान बौक्सिंग नहीं कर सकता. मेरी रुचि बौक्सिंग में काफी रही है. दरअसल बौक्सिंग सिर्फ एक खेल नहीं हैं, यह तो बैक्सिंग रिंग में 3 मिनट तक 'मोमैंट औफ सरवाइवल' यानी कि खुद को जीवंत रखने का पल है.

"हम सिल्वेस्टर सैलान की 'रौकी' सहित कई फिल्में देख चुके हैं. बौक्सिंग के खेल में यह बात माने नहीं रखती कि आप को कितनी बड़ी चोट लगी है, बल्कि माने यह रखता है कि चोटिल होने के बावजूद आप कितनी जल्दी उठ खड़े होते हैं, कितनी जल्दी चोट से उबरते हैं. ऐसे में हमें लगा कि यदि समाज व खेलजगत में इतना भेदभाव है तो क्यों

हैं? क्या वास्तव में दृष्टिहीन का बौक्सर बनना मुमकिन नहीं है. तब हम ने इस पर शोध करना शुरू किया."

जब उन से पूछा गया कि उन्होंने अपने शोध में क्या पाया तो वे बताते हैं, "हम ने शोध में पाया कि भारत में एक भी दृष्टिहीन बौक्सर नहीं है. पूरे विश्व में 3-4 लोग हैं. मसलन, युगांडा, आस्ट्रेलिया व इंग्लैंड में हैं. ये वे लोग हैं जोकि वयस्क हैं और किसी दुर्घटना में अपनी आंखों की रोशनी खो बैठने के बाद अंधे हो गए. जब आप उम्र के किसी पड़ाव में आ कर दृष्टिहीन हो जाएं तो इस का मनोवैज्ञानिक असर होता है.

"ये लोग फ्रस्ट्रेशन में पंचिंग करने लगे. पंचिंग करतेकरते ये बौक्सर बन गए. अमेरिका के लास एंजेल्स में मिक्स मार्शल आर्ट का खेल होता है. थाईलैंड व यूके में एक दृष्टिहीन लड़का है और बौक्सिंग करता है. युगांडा के कंपाला शहर में बशीर रामनाथन लंबे समय से बौक्सिंग फैडरेशन से मांग कर रहे हैं कि उसे लाइसैंस दिया जाए, वह प्रोफैशनल बौक्सिंग करना चाहता है. पर बौक्सिंग फैडरेशन उसे लाइसैंस देने को तैयार नहीं है, जबकि उस ने बौक्सिंग सीखी हुई है.

"फैडरेशन का कहना है कि हम तुम्हें प्रोफैशनल बौक्सर से लड़ने के लिए अवसर देंगे मगर हम देख सकने वाले बौक्सर की आंख में पट्टी बांध देंगे. यह बात शबीर रामनाथन को मंजूर नहीं. वह कहता है, 'मुझे सामान्य बौक्सर संग ही बौक्सिंग प्रतियोगिता करनी है.' शबीर का मानना है कि दृष्टिहीन होते हुए भी उस ने अपने तरीके से देखना सीखा है. यदि आंखों की रोशनी वाले को उस की आंख पर पट्टी बांध कर रिंग में उतारोगे तो यह उस के साथ अन्याय होगा, मेरे कहने का अर्थ यह है कि हर दृष्टिहीन इंसान अपने तरीके से देखता है, पर हम उस की तारीफ नहीं कर पाते. हम ने जितने भी ऐसे उदाहरण देखे, वे सभी किसी न किसी दुर्घटना में अंधे हो चुके हैं, उस के बाद उन्होंने बौक्सिंग के बारे में सोचा.

"शोध करने के बाद हम ने ऐसे बालक के बारे में कहानी सोची जोकि जन्म से अंधा है और बौक्सर बनता है. एक बौक्सर की जरूरत के अनुसार उस के पंच में दम है, उस के अंदर जनून है, मगर आंख में रोशनी नहीं है. तो क्या वह बौक्सर के रूप में अपनी यात्रा को आगे बढ़ा सकता है? इस तरह की कहानी के माध्यम से हम स्वयं यह जानना व परखना चाहते थे कि एक दृष्टिहीन इंसान का बौक्सर बनना संभव है या नहीं."

फिल्म 'अली : द ब्लाइंड बौक्सर' की कहानी के बारे में बिजौय कहते हैं, "यह कहानी 16-17 वर्ष के जन्म से ही दृष्टिहीन बालक अली की है. उस के मातापिता मध्यवर्गीय हैं और उस की एक बहन है. वह स्कूल जाता है. एक सामान्य जिंदगी जी रहा है. उस के मम्मीपापा मानते हैं कि उन का बेटा दुनिया में किसी से कम नहीं है. उस के मातापिता के पास अकसर एनजीओ के लोग आ कर बड़ीबड़ी बातें कर के जा चुके हैं.

"एक दिन एक बौक्सिंग कोच की नजर अली पर पड़ती है और वह उसे बौक्सर बनाने का निर्णय लेता है. इस के लिए अली व उस के मातापिता भी तैयार हो जाते हैं. प्रशिक्षण हासिल करने के बाद अली बौक्सिंग रिंग में उतर कर आंखों से देख सकने वाले बौक्सिंग चैंम्पियन से प्रतियोगिता करता है और विजयी होता है. आखिरकार अली पूरे समाज के सामने

दिखाता है कि वह बौक्सिंग कर सकता है. वह एक बेहतरीन बौक्सर है."

कलाकारों के चयन पर बिजौय कहते हैं, "पटकथा लिखने के बाद हम ने सोचा कि यदि हम ने किसी आंखों की रोशनी वाले कलाकार को अली के किरदार में ले कर फिल्म बनाई तो हमारा जो मकसद है वह पूरा नहीं हो सकता. इसलिए हम ने अली के किरदार को निभाने के लिए 16-17 वर्ष के दृष्टिहीन बालक की तलाश शुरू की, क्योंकि हमारी फिल्म महज किसी किरदार को अंधा दिखाने के मकसद से नहीं बनी है, बल्कि हम एक दृष्टिहीन इंसान को दिखाना चाहते थे जोकि आम जिंदगी जी रहा है. दूसरी बात यह हमारी खुद की प्रयोगात्मक यात्रा इस बात को समझने के लिए थी कि आंखों की रोशनी न होने पर भी इंसान बौक्सर बन सकता है या नहीं? ऐसे में अली के किरदार के लिए किसी अंधे युवक को चुनना हमारे लिए काफी कठिन रहा. पर हम ने तलाश जारी रखी. काफी समय लगा.

बिजौय बनर्जी और कौशिक मंडल ने एक नेत्रहीन बालक को बौक्सिंग सिखा कर और फिल्म बना कर एक मिसाल कायम की है.

"हमें अली के किरदार के लिए शब्बीर शेख नामक बालक पुणे अंध विद्यालय में मिला, जो तब 10वीं कक्षा का छात्र था. अब तो वह 12वीं कक्षा में पहुंच गया है. उस की आंखों की रोशनी एक संक्रमण के चलते एक वर्ष की उम्र में ही चली गई थी. उस के पिता बीड़ के एक गांव में किसान हैं. उस का पिता तौसीफ भी अंधा है. यदि हमें शब्बीर शेख या उस के जैसा कोई लड़का नहीं मिलता तो हम यह फिल्म नहीं बनाते."

इस फिल्म के लिए तो शब्बीर को भी बौक्सिंग सीखनी पड़ी होगी, पूछने पर बिजौय कहते हैं, "अली के किरदार के लिए शब्बीर शेख का चयन करने के बाद अहम सवाल था कि क्या वह बौक्सिंग सीखना चाहेगा और सीख सकेगा? शब्बीर ने कहा कि वह सीखना चाहता है. तब हम ने उस के विद्यालय और उस के मातापिता से इस बात के लिए इजाजत ले कर उसे पूरे 4 माह तक ट्रेनिंग दिलाई. उस की ट्रेनिंग के दौरान बिना फिल्म की शूटिंग किए हम अपनी फिल्म को देख रहे थे."

फिल्म 'अली : द ब्लाइंड बौक्सर' कई फिल्म फैस्टिवल्स में दिखाई जा चुकी है, इसे ले कर बिजौय कहते हैं, "पिछले एक वर्ष से यह फिल्म कई फिल्म समारोहों में घूम रही है. भूटान के इंटरनैशनल फिल्म फैस्टिवल में विकलांगता सैक्शन की फिल्मों में सर्वश्रेष्ठ फिल्म घोषित की गई. भूटान इंटरनैशनल फिल्म फैस्टिवल में इसे सर्वश्रेष्ठ मोबाइल फिल्म का भी पुरस्कार दिया गया.

"कोलकाता इंटरनैशनल कल्ट फिल्म फैस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार भी मिला. शांति निकेतन के टैगोर इंटरनैशनल फिल्म महोत्सव में 'उत्कृष्ट उपलब्धि' पुरस्कार मिला. इस के अलावा कुछ अन्य अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों के लिए चयन हो चुका है." ●

वर्गीकृत विज्ञापन

बोर्ड परीक्षा वर्कशौप

परीक्षा 2021 WORKSHOP on How to Plan Study and ACHIEVE the BEST You Can! जानकारी : 8750280196.

जासूसी सेवा

शक, धोखा, तलाश, विवाह, तलाक चरित्र (कोर्ट सबूत) व्यापार, पीछा संबंधी जांच/तहकीकात (देश/विदेश) गुप्त कराएं Intelligence Detective Bureau #9810426431, 9810796560.

वैधानिक चेतावनी

पाठकों को आगाह किया जाता है कि वे इन विज्ञापनों पर कोई पहल करने से पहले तथ्यों का पता अवश्य लगा लें. यह पत्रिका विज्ञापनदाताओं द्वारा विज्ञापनों में दी गई वर और वधू की उम्र, आय और सामाजिक स्थिति के दावों की पुष्टि नहीं करती.

विज्ञापनदाताओं के लिए सूचना : सरिता में वैवाहिक विज्ञापनों एवं गोद विज्ञापनों की दर रु. 20 प्रति शब्द है. कम से कम 20 शब्द अवश्य होने चाहिए. अन्य व्यवसायी एवं व्यक्तिगत विज्ञापनों की दर सरिता में 15 रुपए प्रति शब्द है कम से कम 16 शब्द होने आवश्यक हैं. *आप अपना वैवाहिक विज्ञापन और शुल्क निम्न पते पर भेजें :* **दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 011-41398888, 41540004, फैक्स : 011-41540714.** ***अन्य कार्यालयों के पते व फोन नंबर सूची में पृष्ठ नं. 6 पर दिए गए हैं.***

DELHI PRESS MAGAZINES
सरस सलिल
जनजन की आवाज
पाक्षिक पत्रिका
राजनीति | समाज | अंधविश्वास | सैक्स | खेल | फिल्म
लेख, कहानियां व स्थायी स्तंभ
ग्राहक बनने के लिए http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

DELHI PRESS MAGAZINES
फार्म एन फूड
पाक्षिक पत्रिका
खबरें खेती से खाने की
हर कारोबार की
किसानों से जुड़ी हर हलचल की
सरकार के नियमों की
ग्राहक बनने के लिए http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN CHAMPAK सरिता गृहशोभा चंपक मुक्ता सरस सलिल फार्म फूड सत्यकथा मनोहर कहानियां

ગૃહશોભા ચંપક सरस सलिल

Highlights CHAMPS Highlights Genies MOTORING

(REGISTERED) RNI 625/57 DL(C)-14/1088/2021-23 WPP U(C)151/16/2021-23
P.O. SRT Nagar ND-55, Posting Dt. 17 to 23 Published on 05/02/2021. Pgs. 148

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

MYFAIR
Cream
MYFAIR
Cream

झुर्रियां
काले घेरे
छाईया

MYFAIR
रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- फेस वाश
- सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

Multivitamin, Multiminerals & Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for Strong Immunity

MultipreX™

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals
& Antioxidants

Advanced Formula For
Strong Immunity

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए